॥ ॐ ॥

॥ णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीता

श्रीमदुत्तराध्ययनसूत्रम्, श्रीदशवैकालिकसूत्रम, नदीसूत्रम्

सुखविपाकसूत्रम्, उववाइसूत्रम् (गाथा २२)

सूत्रकृताङ्गसूत्रे षष्ठाध्ययनम एकादशाध्ययनम् च ॥

अतर्मूलसूत्रैस्सयुक्ता

॥ सिद्धान्त–स्वाध्यायमाला ॥



—: प्रकाशक :—

जामनगर वास्तव्य पडित हीरालाल हसराज



—: मुद्रक :—

श्री जैनभास्करोदय मुद्रणालय–जामनगर

सने १९३८ मूल्य १–४–० सवत् १९९५

॥ स्वाध्यायमाला–विषयानुक्रम ॥



॥ णमोऽत्थु णं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

श्री जैन

॥ सिद्धान्त-स्वाध्यायमाला ॥

॥ सिरि-उत्तरज्झयण-सुत्तं ॥

विणयसुयं पढमं अज्झयणं

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो। विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥
आणानिद्देसकरे, गुरूणमुववायकारए। इंगियागारसंपन्ने, से विणीए त्ति वुच्चई ॥ २ ॥
आणाऽनिद्देसकरे, गुरूणमणुववायकारए। पडिणीए असंबुद्धे, अविणीए त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥
जहा सुणी पूइकण्णी, निक्कसिज्जई सव्वसो। एवं दुस्सीलपडिणीए, मुहरी निक्कसिज्जई ॥ ४ ॥
कणकुण्डगं चइत्ताणं, विट्ठं भुंजइ सूयरे। एवं सीलं चइत्ताणं, दुस्सीले रमई मिए ॥ ५ ॥
सुणिया भावं साणस्स, सूयरस्स नरस्स य। विणए ठवेज्ज अप्पाणमिच्छन्तो हियमप्पणो ॥ ६ ॥
तम्हा विणयमेसिज्जा, सीलं पडिलभेज्जए। बुद्धपुत्त नियागट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥ ७ ॥
निसन्ते सियाऽमुहरी, बुद्धाणं अन्तिए सया। अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए ॥ ८ ॥
अणुसासिओ न कुप्पिज्जा, खंतिं सेविज्ज पण्डिए। खुड्डेहिं सह संसग्गिं, हासं कीडं च वज्जए ॥ ९ ॥
मा य चण्डालियं कासी, बहुयं मा य आलवे। कालेण य अहिज्जित्ता, तओ झाइज्ज एगगो ॥ १० ॥
आहच्च चण्डालियं कट्टु, न निण्हविज्ज कयाइ वि। कडं कडे त्ति भासेज्जा, अकडं नो कडे त्ति य ॥ ११ ॥
मा गलियस्सेव कसं, वयणमिच्छे पुणो पुणो। कसं व दट्ठुमाइण्णे, पावगं परिवज्जए ॥ १२ ॥

अणासवा थूलवया कुसीला, मिउं पि चण्डं पकरिन्ति सीसा।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया, पसायए ते हु दुरासयं पि ॥ ॥ १३ ॥

नापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालियं वए। कोहं असच्चं कुव्वेज्जा, धारेज्जा पियमप्पियं ॥ १४ ॥
अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो। अप्पा दन्तो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य ॥ १५ ॥
वरं मे अप्पा दन्तो, संजमेण तवेण य। माहं परेहि दम्मन्तो, बन्धणेहि वहेहि य ॥ १६ ॥
पडिणीयं च बुद्धाणं, वाया अदुव कम्मुणा। आवी वा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा कयाइ वि ॥ १७ ॥
न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ। न जुंजे ऊरुणा ऊरुं, सयणे नो पडिस्सुणे ॥ १८ ॥
नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिण्डं च संजए। पाए पसारिए वावि, न चिट्ठे गुरुणन्तिए ॥ १९ ॥
आयरिएहिं वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइ वि। पसायपेही नियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरुं सया ॥ २० ॥

आलवन्ते लवन्ते वा, न निसीएज्ज कयाइ वि। चइऊणमासण धीरो, जओ जत्त पडिस्सुणे ॥ २१ ॥
आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ कया। आगम्मुक्कुडुओ सन्तो, पुच्छिज्जा पजलीउडो ॥ २२ ॥
एव विणयजुत्तस्स, सुत्त अत्थ च तदुभय। पुच्छमाणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहासुय ॥ २३ ॥
मुस परिहरे भिक्खू न य ओहारिणि वए। भासादोस परिहरे, माय च वज्जए सया ॥ २४ ॥
न लवेज्ज पुट्ठो सावज्ज, न निरट्ठ न मम्मय। अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्सन्तरेण वा ॥ २५ ॥
समरेसु अगारेसु सन्धीसु य महापहे। एगो एगत्थिए सद्धिं, नेव चिट्ठे न सलवे ॥ २६ ॥
ज मे बुद्धाऽणुसासन्ति, सीएण फरुसेण वा। मम लाहो त्ति पेहाए, पयओ त पडिस्सुणे ॥ २७ ॥
अणुसासणमोवाय, दुक्कडस्स य चोयण। हिय त मण्णई पण्णो, वेस होइ असाहुणो ॥ २८ ॥
हिय विगयभया बुद्धा, फरुसमपि अणुसासण। वेस त होइ मूढाण, खन्तिसोहिकर पय ॥ २९ ॥
आसणे उवचिट्ठेज्जा, अणुच्चे अकुए थिरे। अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई, निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥ ३० ॥
कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे। अकाल च विवज्जित्ता, काले काल समायरे ॥ ३१ ॥
परिवाडीए न चिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसण चरे। पडिरूवेण एसित्ता, मिय कालेण भक्खए ॥ ३२ ॥
नाइदूरमणासन्ने, नाऽन्नेसि चक्खुफासओ। एगो चिट्ठेज भत्तट्ठा, लघित्ता त नाऽइक्कमे ॥ ३३ ॥
नाइउच्चे न नीए वा, नासन्ने नाइदूरओ। फासुय परकड पिण्ड, पडिगाहेज्ज सजए ॥ ३४ ॥
अप्पपाणेऽप्पबीयम्मि, पडिच्छन्नम्मि सवुडे। समय सजए भुजे, जय अपरिसाडिय ॥ ३५ ॥
सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे। सुणिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्ज वज्जए मुणी ॥ ३६ ॥
रमए पण्डिए सास, हय भद्द व वाहए। बाल सम्मइ सासतो, गलियस्स व वाहए ॥ ३७ ॥
खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहा य मे। कल्लाणमणुसासन्तो, पावदिट्ठित्ति मन्नई ॥ ३८ ॥
पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाण मन्नई। पावदिट्ठि उ अप्पाण, सास दासु त्ति मन्नई ॥ ३९ ॥
न कोवए आयरिय, अप्पाणपि न कोवए। बुद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्तगवेसए ॥ ४० ॥
आयरिय कुविय नच्चा, पत्तिएण पसायए। विज्झवेज्ज पजलीउडो, वएज्ज न पुणोत्ति य ॥ ४१ ॥
धम्मज्जिय च ववहार, बुद्धेहायरिय सया। तमायरन्तो ववहार, गरह नाभिगच्छई ॥ ४२ ॥
मणोगय वक्कगय, जाणित्तायरियस्स उ। त परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ४३ ॥
वित्ते अचोइए निच्च, खिप्प हवइ सुचोइए। जहोवइट्ठ सुकय, किच्चाइ कुव्वई सया ॥ ४४ ॥
नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए। हवई किच्चाण सरण, भूयाण जगई जहा ॥ ४५ ॥
पुज्जा जस्स पसीयन्ति, सबुद्धा पुव्वसथुया। पसन्ना लाभइस्सति, विउल अट्ठिय सुय ॥ ४६ ॥

स पुज्जसत्थे सुविणीयससए, मणोरुई चिट्ठइ कम्मसपया।
तवोसमायारिसमाहिसवुडे, महज्जुई पच वयाइ पालिया ॥ ॥ ४७ ॥
स देवगन्धव्वमणुस्सपूइए, चइत्तु देह मलपकपुव्वय।
सिद्धे वा हवइ सासए देवे वा अप्परए महिड्ढीए ॥ ॥ ४८ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ विणयसुय नाम पढम अज्झयण समत्त ॥

॥ अह दुइअं परिसहज्झयणं ॥

सुयं मे आउसं-तेणं भगवया एवमक्खायं । इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया । जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो निहन्नेज्जा ॥ कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो निहन्नेज्जा ? ॥ इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो निहन्नेज्जा, तंजहा-दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३ उसिणपरीसहे ४ दंसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६ अरइपरीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे ९ निसीहियापरीसहे १० सेज्जापरीसहे ११ अक्कोसपरीसहे १२ वहपरीसहे १३ जायणापरीसहे १४ अलाभपरीसहे १५ रोगपरीसहे १६ तणफासपरीसहे १७ जल्लपरीसहे १८ सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९ पन्नापरीसहे २० अन्नाणपरीसहे २१ दंसणपरीसहे २२ ॥

परीसहाणं पविभत्ती, कासवेणं पवेइया । तं मे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥
दिगिंछापरिगए देहे, तवस्सी भिक्खु थामवं । न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए ॥ २ ॥
कालीपव्वंगसंकासे, किसे धमणिसंतए । मायन्ने असणपाणस्स, अदीणमणसो चरे ॥ ३ ॥
तओ पुट्ठो पिवासाए, दोगुञ्छी लज्जसंजए । सीओदगं न सेविज्जा, वियडस्सेसणं चरे ॥ ४ ॥
छिन्नावाएसु पंथेसु, आउरे सुपिवासिए । परिसुक्कमुहाऽदीणे, तं तितिक्खे परीसहं ॥ ५ ॥
चरंतं विरयं लूहं, सीयं फुसइ एगया । नाइवेलं मुणी गच्छे, सोच्चाणं जिणसासणं ॥ ६ ॥
न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विज्जई । अहं तु अग्गिं सेवामि, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ ७ ॥
उसिणं परियावेणं, परिदाहेण तज्जिए । घिंसु वा परियावेणं, सायं नो परिदेवए ॥ ८ ॥
उण्हाहितत्ते मेहावी, सिणाणं नो वि पत्थए । गायं नो परिसिंचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पयं ॥ ९ ॥
पुट्ठो य दंसमसएहिं, समरे व महामुणी । नागो संगामसीसे वा, सूरो अभिहणे परं ॥ १० ॥
न संतसे न वारेज्जा, मणं पि न पओसए । उवेहे न हणे पाणे, भुंजते मंससोणियं ॥ ११ ॥
परिजुण्णेहि वत्थेहिं, होक्खामि त्ति अचेलए । अदुवा सचेले होक्खामि इइ भिक्खू न चिंतए ॥ १२ ॥
एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया । एयं धम्मं हियं नच्चा, नाणी नो परिदेवए ॥ १३ ॥
गामाणुगामं रीयंतं, अणगारं अकिंचणं । अरई अणुप्पवेसेज्जा, तं तितिक्खे परीसहं ॥ १४ ॥
अरइं पिट्ठओ किच्चा, विरए आयरक्खिए । धम्मारामे निरारम्भे, उवसन्ते मुणी चरे ॥ १५ ॥
संगो एस मणूसाणं, जाओ लोगम्मि इत्थिओ । जस्स एया परिन्नाया, सुकडं तस्स सामण्णं ॥ १६ ॥
एयमादाय मेहावी, पङ्कभूया उ इत्थिओ । नो ताहिं विणिहम्मेज्जा, चरेज्जत्तगवेसए ॥ १७ ॥
एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे । गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥ १८ ॥
असमाणो चरे भिक्खू, नेव कुज्जा परिग्गहं । असंसत्ते गिहत्थेहिं, अणिएओ परिव्वए ॥ १९ ॥
सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ । अकुक्कुओ निसीएज्जा, न य वित्तासए परं ॥ २० ॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गाभिधारए । सकाभीओ न गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अन्नमासणं ॥ २१ ॥
उच्चावयाहिं सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थामवं । नाइवेलं विहम्मेज्जा, पावदिट्ठी विहम्मई ॥ २२ ॥
पइरिक्कुवस्सयं लध्धुं, कल्लाणमदुवा पावयं । किमेगराइं करिस्सइ, एवं तत्थऽहियासए ॥ २३ ॥
अक्कोसेज्जा परे भिक्खुं, न तेसिं पडिसंजले । सरिसो होइ बालाणं, तम्हा भिक्खू न संजले ॥ २४ ॥
सोच्चाणं फरुसा भासा, दारुणा गामकण्टगा । तुसिणीओ उवेहेज्जा, न ताओ मणसीकरे ॥ २५ ॥
हओ न संजले भिक्खू, मणं पि न पओसए । तितिक्खं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं समायरे ॥ २६ ॥
समणं संजयं दंतं, हणिज्जा कोइ कत्थई । नत्थि जीवस्स नासुत्ति, एवं पेहेज्ज संजए ॥ २७ ॥
दुक्करं खलु भो निच्चं, अणगारस्स भिक्खुणो । सव्वं से जाइयं होइ, नत्थि किंचि अजाइयं ॥ २८ ॥
गोयरग्गपविट्ठस्स, पाणी नो सुप्पसारए । सेओ अगारवासुत्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ २९ ॥
परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिणिट्ठिए । लद्धे पिण्डे अलद्धे वा, नाणुतप्पेज्ज पंडिए ॥ ३० ॥
अज्जेवाहं न लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया । जो एवं पडिसंचिक्खे, अलाभो तं न तज्जए ॥ ३१ ॥
नच्चा उप्पइयं दुक्खं, वेयणाए दुहट्टिए । अदीणो थावए पन्नं, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥ ३२ ॥
तेगिच्छं नाभिनंदेज्जा संचिक्खत्तगवेसए । एवं खु तस्स सामण्णं, जं न कुज्जा न कारवे ॥ ३३ ॥
अचेलगस्स लूहस्स, संजयस्स तवस्सिणो । तणेसु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ॥ ३४ ॥
आयवस्स निवाएणं, अउला हवइ वेयणा । एवं नच्चा न सेवंति, तंतुजं तणतज्जिया ॥ ३५ ॥
किलिन्नगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा । घिंसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥ ३६ ॥
वेएज्ज निज्जरापेही, आरियं धम्मणुत्तरं । जाव सरीरभेउत्ति, जल्लं काएण धारए ॥ ३७ ॥
अभिवायणमब्भुट्ठाणं, सामी कुज्जा निमंतणं । जे ताइं पडिसेवन्ति, न तेसिं पीहए मुणी ॥ ३८ ॥
अणुक्कसाई अप्पिच्छे, अनाएसी अलोलुए । रसेसु नाणुगिज्झेज्जा, नाणुतप्पेज्ज पन्नवं ॥ ३९ ॥
से नूणं मए पुव्वं, कम्माऽणाणफला कडा । जेणाहं नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥ ४० ॥
अह पच्छा उइज्जन्ति, कम्माऽणाणफला कडा । एवमस्सासि अप्पाणं, नच्चा कम्मविवागयं ॥ ४१ ॥
निरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो । जो सक्खं नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाणपावगं ॥ ४२ ॥
तवोवहाणमादाय, पडिमं पडिवज्जओ । एवं पि विहरओ मे, छउमं न नियट्टई ॥ ४३ ॥
नत्थि नूणं परे लोए, इड्ढी वावि तवस्सिणो । अदुवा वंचिओमित्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ ४४ ॥
अभू जिणा अत्थि जिणा, अदुवावि भविस्सई । मुसं ते एवमाहंसु, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ ४५ ॥
एए परीसहा सव्वे, कासवेण पवेइया । जे भिक्खू न विहम्मेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥ ४६ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ दुइअं परिसहज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

॥ अह तइअ चाउरंगिज्ज अज्झयणं ॥

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जंतुणो । माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमम्मि य वीरियं ॥ १ ॥
समावन्नाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु । कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढो विस्संभिया पया ॥ २ ॥
एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया । एगया आसुरं कायं, अहाकम्मेहिं गच्छई ॥ ३ ॥
एगया खत्तिओ होइ, तओ चण्डालवोक्कसो । तओ कीडपयंगो य, तओ कुन्थुपिवीलिया ॥ ४ ॥
एवमावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्मकिब्बिसा । न निविज्जन्ति संसारे, सव्वट्ठेसु व खत्तिया ॥ ५ ॥
कम्मसंगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया बहुवेयणा । अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥ ६ ॥
कम्माणं तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ । जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आययंति मणुस्सयं ॥ ७ ॥
माणुस्सं विग्गहं लद्धुं, सुई धम्मस्स दुल्लहा । जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंतिमहिंसयं ॥ ८ ॥
आहच्च सवणं लद्धुं, सद्धा परमदुल्लहा । सोच्चा नेआउयं मग्गं, बहवे परिभस्सई ॥ ९ ॥
सुइं च लद्धुं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं । बहवे रोयमाणावि, नो य णं पडिवज्जए ॥ १० ॥
माणुसत्तंमि आयाओ, जो धम्मं सुच्च सद्दहे । तवस्सी वीरियं लद्धुं, संवुडे निद्धुणे रयं ॥ ११ ॥
सोही उज्जूय भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई । निव्वाणं परमं जाइ, घयसित्तिव्व पावए ॥ १२ ॥
विगिंच कम्मुणो हेउं, जसं संचिणु खंतिए । सरीरं पाढवं हिच्चा, उड्ढं पक्कमए दिसं ॥ १३ ॥
विसालसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा । महासुक्का व दिप्पंता, मन्नंता अपुणच्चयं ॥ १४ ॥
अप्पिया देवकामाणं, कामरूवविउव्विणो । उड्ढं कप्पेसु चिट्ठंति, पुव्वावाससया बहू ॥ १५ ॥
तत्थ ठिच्चा जहाठाणं, जक्खा आउक्खए चुया । उवेंति माणुसं जोणिं, से दसंगेभिजायए ॥ १६ ॥
खित्तं वत्थु हिरण्णं च, पसवो दासपोरुसं । चत्तारि कामखंधाणि । तत्थ से उववज्जइ ॥ १७ ॥
मित्तवं नाइवं होइ, उच्चागोए य वण्णवं । अप्पायंके महापन्ने, अभिजाए जसो बले ॥ १८ ॥
भुच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरूवे अहाउयं । पुव्वं विसुद्धसद्धम्मे, केवलं बोहिबुज्झिया ॥ १९ ॥
चउरंगं दुल्लहं नच्चा, संजमं पडिवज्जिया । तवसा धुयकम्मंसे सिद्धे हवइ सासए ॥ २० ॥

त्ति बेमि ॥ इअ तृतीयं परिज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह चतुर्थं असंखयं अज्झयणं ॥

असंखयं जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते कं नु विहिंसा अजया गिहिंति ॥ १ ॥
जे पावकम्मेहिं धणं मणूसा, समाययंती अमइं गहाय ।
पहाय ते पासपयट्टिए नरे, वेराणुबद्धा नरयं उवेंति ॥ २ ॥
तेणे जहा संधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एवं पया पेच्च इहं च लोए, कडाण कम्माण न मुक्खु अत्थि ॥ ३ ॥

ससारमावन्न परस्स अट्ठा, साहारण ज च करेइ कम्म ।
कम्मस्स ते तस्स उवेयकाले, न बधवा बधवय उविंति ॥ ४ ॥
वित्तेण ताण न लभे पमत्ते, इममि लोए अदुवा परत्थ ।
दीवप्पणट्ठेव अणतमोहे, नेयाउय दट्ठुमदट्ठुमेव ॥ ५ ॥
सुत्तेसुआवी पडिबुद्धजीवी, न वीससे पडिय आसुपण्णे ।
घोरा मुहुत्ता अबल सरीर, भारडपक्खीव चरऽप्पमत्तो ॥ ६ ॥
चरे पयाइ परिसकमाणो, ज किंचि पास इह मन्नमाणो ।
लाभतरे जीवियवूहइत्ता, पच्छा परिन्नाय मलावधसी ॥ ७ ॥
छदनिरोहेण उवेइ मोक्ख, आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
पुव्वाइ वासाइ चरऽप्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मुक्ख ॥ ८ ॥
स पुव्वमेव न लभेज्ज पच्छा, एसोवमा सासयवाइयाण ।
विसीयइ सिढिले आउयम्मि, कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥ ९ ॥
खिप्प न सक्केइ विवेगमेउ, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोय समया महेसी, आयाणुरक्खी चरमप्पमत्ते ॥ १० ॥
मुहु मुहु मोहगुणे जयन्त, अणेगरूवा समण चरन्तं ।
फासा फुसन्ती असमजस च, न तेसि भिक्खू मणसा पउस्से ॥ ११ ॥
मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा, तहप्पगारेसु मण न कुज्जा ।
रक्खिज्ज कोह विणएज्ज माण, माय न सेवेज्ज पयहेज्ज लोह ॥ १२ ॥
जेऽसखया तुच्छपरप्पवाई, ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
एए अहम्मे त्ति दुगुछमाणो, कखे गुणे जाव सरीरभेउ ॥ १३ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ असखय चउत्थ अज्झयण समत्त ॥

॥ अह अकाममरणिज्ज पञ्चम अज्झयण ॥

अण्णवसि महोहसि, एगे तिण्णे दुरुत्तर । तत्थ एगे महापन्ने, इम पण्हमुदाहरे ॥ १ ॥
सन्तिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणन्तिया । अकाममरण चेव, सकाममरण तहा ॥ २ ॥
बालाण तु अकाम तु, मरण असइ भवे । पण्डियाण सकाम तु, उक्कोसेण सइ भवे ॥ ३ ॥
तत्थिम पढम ठाण, महावीरेण देसिय । कामगिद्धे जहा बाले, भिस कूराइ कुव्वई ॥ ४ ॥
जे गिद्धे कामभोगेसु, एगे कूडाय गच्छई । न मे दिट्ठे परे लोए, चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥ ५ ॥
हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया । को जाणइ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥ ६ ॥
जणेण सद्धिं होक्खामि इइ बाले पगब्भई । कामभोगाणुराएण, केस सपडिवज्जई ॥ ७ ॥
तओ से दण्ड समारभई, तसेसु थावरेसु य । अट्ठाए य अणट्ठाए, भूयगाम विहिंसई ॥ ८ ॥
हिंसे बाले मुसावाई, माइल्ले पिसुणे सढे । भुजमाणे सुर मस, सेयमेय ति मन्नई ॥ ९ ॥

कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु। दुहओ मलं संचिणइ, सिसुणागु व्व मट्टियं ॥ १० ॥
तओ पुट्ठो आयंकेण, गिलाणो परितप्पई। पभीओ परलोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥ ११ ॥
सुया मे नरए ठाणा, असीलाणं च जा गई। बालाणं कूरकम्माणं, पगाढा जत्थ वेयणा ॥ १२
तत्थोववाइयं ठाणं, जहा मेयमणुस्सुयं। आहाकम्मेहिं गच्छन्तो, सो पच्छा परितप्पई ॥ १३ ॥
जहा सागडिओ जाणं, समं हिच्चा महापहं। विसमं मग्गमोइण्णो अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥ १४ ॥
एवं धम्मं विउक्कम्म, अहम्मं पडिवज्जिया। बाले मच्चुमुहं पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयई ॥ १५ ॥
तओ से मरणन्तम्मि, बाले संतसई भया। अकाममरणं मरई, धुत्ते व कलिणा जिए ॥ १६ ॥
एयं अकाममरणं, बालाणं तु पवेइयं। एत्तो सकाममरणं, पण्डियाणं सुणेह मे ॥ १७ ॥
मरणं पि सपुण्णाणं, जहा मेयमणुस्सुयं। विप्पसण्णमणाघायं, संजयाण वुसीमओ ॥ १८ ॥
न इमं सव्वेसु भिक्खूसु, न इमं सव्वेसु गारिसु। नाणासीला अगारत्था, विसमसीला य भिक्खुणो॥ १९ ॥
सन्ति एगेहिं भिक्खूहिं, गारत्था संजमुत्तरा। गारत्थेहि य सव्वेहिं, साहवो संजमुत्तरा ॥ २० ॥
चीराजिणं नगिणिणं, जडी संघाडिमुण्डिणं। एयाणि वि न तायन्ति, दुस्सीलं परियागयं ॥ २१ ॥
पिण्डोलए व्व दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चई। भिक्खाए वा गिहत्थे वा, सुव्वए कम्मई दिवं ॥ २२ ॥
अगारिसामाइयंगाणि, सड्ढी काएण फासए। पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए ॥ २३ ॥
एवं सिक्खासमावन्ने, गिहिवासे वि सुव्वए। मुच्चई छविपव्वाओ, गच्छे जक्खसलोगयं ॥ २४ ॥
अह जे संवुडे भिक्खू, दोण्हं अन्नयरे सिया। सव्वदुक्खप्पहीणे वा, देवे वावि महिड्ढीए ॥ २५ ॥
उत्तराइं विमोहाइं, जुईमन्ताणुपुव्वसो। समाइण्णाइं जक्खेहिं, आवासाइं जसंसिणो ॥ २६ ॥
दीहाउया इड्ढीमन्ता, समिद्धा कामरूविणो। अहुणोववन्नसंकासा, भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥ २७ ॥

ताणि ठाणाणि गच्छन्ति, सिक्खित्ता संजमं तवं।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा, जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥ ॥ २८ ॥

तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं, संजयाण वुसीमओ। न संतसन्ति मरणन्ते, सीलवन्ता बहुस्सुया ॥ २९ ॥
तुलिया विसेसमादाय, दयाधम्मस्स खन्तिए। विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा ॥ ३० ॥
तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिसमन्तिए। विणएज्ज लोमहरिसं, भेयं देहस्स कंखए ॥ ३१ ॥
अह कालम्मि संपत्ते, आघायाय समुस्सयं। सकाममरणं मरई, तिण्हमन्नयरं मुणी ॥ ३२ ॥

त्ति बेमि॥ इअ अकाममरणिज्जं पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥ ५ ॥

॥ अह खुड्डागनियण्ठिज्जं छट्ठं अज्झयणं ॥

जावन्तविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा। लुप्पन्ति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणन्तए ॥ १ ॥
समिक्ख पण्डिए तम्हा, पासजाईपहे बहू। अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मेत्तिं भूएसु कप्पए ॥ २ ॥
माया पिया ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा। नालं ते मम ताणाए, लुप्पन्तस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥
एयमट्ठं सपेहाए, पासे समियदंसणे। छिन्द गेद्धिं सिणेहं च, न कंखे पुव्वसंथुयं ॥ ४ ॥
गवासं मणिकुण्डलं, पसवो दासपोरुसं। सव्वमेयं चइत्ताणं कामरूवी भविस्ससि ॥ ५ ॥

अज्झत्थ सव्वओ सव्व, दिस्स पाणे पियायए। न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ॥ ६ ॥
आदाण नरय दिस्स, नायएज्ज तणामवि। दोगुन्छी अप्पणो पाए, दिन्न भुजेज्ज भोयण ॥ ७ ॥
इहमेगे उ मन्नन्ति, अपच्चक्खाय पावग। आयरिय विदित्ताण, सव्वदुक्खाण मुच्चए ॥ ८ ॥
भणता अकरन्ता य, बन्धमोक्खपइण्णिणो। वायाविरियमेत्तेण, समासासेन्ति अप्पय ॥ ९ ॥
न चित्तातायए भासा, कुओ विज्जाणुसासण। विसन्ना पावकम्मेहिं, बाला पडियमाणिणो ॥ १० ॥
जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रुवे य सव्वसो। मणसा कायवक्केण, सव्वे ते दुक्खसम्भवा ॥ ११ ॥
आवन्ना दीहमद्धाण, ससारम्मि अणन्तए। तम्हा सव्वदिस पस्स, अप्पमत्तो परिव्वए ॥ १२ ॥
बहिया उड्ढमादाय, नावकखे कयाइ वि। पुव्वकम्मक्खयट्ठाए, इम देह समुद्धरे ॥ १३ ॥
विविच्च कम्मुणो हेउ, कालकखी परिव्वए। माय पिंडस्स पाणस्स, कड लद्धूण भक्खए ॥ १४ ॥
सन्निहि च न कुव्वेज्जा, लेवमायाए सजए। पक्खीपत्त समादाय, निरवेक्खो परिव्वए ॥ १५ ॥
एसणासमिओ लज्जू, गामे अनियओ चरे। अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिण्डवाय गवेसए ॥ १६ ॥
एव से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदसी अणुत्तरनाणदसणधरे अरहा नायपुत्ते भगव वेसालिए वियालिए

इअ खुड्डागनियठिज्ज छट्ठ अज्झयण समत्त ॥ ६ ॥

॥ अह एलय सत्तम अज्झयण ॥

जहाएस समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलय। ओयण जवस देज्जा, पोसेज्जावि सयङ्गणे ॥ १ ॥
तओ से पुट्ठे परिवूढे, जायमेए महोदरे। पीणिए विउले देहे, आएस परिकखए ॥ २ ॥
जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से दुही। अह पत्तम्मि आएसे, सीस छेत्तूण भुज्जई ॥ ३ ॥
जहा से खलु उरब्भे, आएसाए समीहिए। एव बाले अहम्मिट्ठे, ईहई नरयाउय ॥ ४ ॥
हिंसे बाले मुसावाई, अद्धाणसि विलोवए। अन्नदत्तहरे तेणे, माई क नु हरे सढे ॥ ५ ॥
इत्थीविसयगिद्धे य, महारभपरिग्गहे। भुजमाणे सुर मस, परिवूढे परदमे ॥ ६ ॥
अयकक्करभोई य, तुन्दिल्ले चियलोहिए। आउय नरए कखे, जहाएस व एलए ॥ ७ ॥
आसण सयण जाण, वित्त कामे य भुञ्जिया। दुस्साहड धण हिच्चा, बहु सचिणिया रय ॥ ८ ॥
तओ कम्मगुरू जतू, पच्चुप्पन्नपरायणे। अए व्व आगयाएसे, मरणतम्मि सोयई ॥ ९ ॥
तओ आउपरिक्खीणे, चुया देहा विहिंसगा। आसुरीय दिस बाला, गच्छन्ति अवसा तम ॥ १० ॥
जहा कागिणिए हेउ, सहस्स हारए नरो। अपत्थ अम्बग भोच्चा, राया रज्ज तु हारए ॥ ११ ॥
एव माणुस्सगा कामा, देवकामाण अन्तिए। सहस्सगुणिया भुज्जो, आउ कामा य दिव्विया ॥ १२ ॥
अणेगवासानउया, जा सा पन्नवओ ठिई। जाणि जीयन्ति दुम्मेहा, ऊणवाससयाउए ॥ १३ ॥
जहा य तिन्नि वाणिया, मूल घेत्तूण निग्गया। एगोऽत्थ लहई लाभ एगो मूलेण आगओ ॥ १४ ॥
एगो मूल पि हारित्ता, आगओ तत्थ वाणिओ। ववहारे उवमा एसा, एव धम्मे वियाणह ॥ १५ ॥
माणुसत्त भवे मूल, लाभो देवगई भवे। मूलच्छेएण जीवाण नरगतिरिक्खत्तण धुव ॥ १६ ॥
दुहओ गई बालस्स, आवई वहमूलिया। देवत्त माणुसत्त च, ज जिए लोलयासढे ॥ १७ ॥

तओ निए सइ होइ, दुविह दोग्गइ गए । दुल्लहा तस्स उम्मग्गा, अद्धाए सुइरादवि ॥ १८ ॥
एव जियं सपेहाए, तुलिया बाल च पण्डिय। मूलिय ते पवेसन्ति, माणुसिं जोणिमेन्ति जे ॥ १९ ॥
वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिहिसुव्वया। उवेन्ति माणुस जोणिं, कम्मसचा हु पाणिणो ॥ २० ॥
जेसिं तु विउला सिक्खा, मूलिय ते अइच्छिया। सीलवन्ता सवीसेसा, अदीणा जन्ति देवय ॥ २१ ॥
एवमदीणव भिक्खु, आगारिं च वियाणिया। कहण्णु जिचमेलिक्खं, जिचमाणे न सविदे ॥ २२ ॥
जहा कुसग्गे उदग, समुद्देण सम मिणे । एव माणुस्सगा कामा, देवकामाण अतिए ॥ २३ ॥
कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धम्मि आउए। कस्स हेउ पुराकाउ, जोगक्खेम न सविदे ॥ २४ ॥
इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्झई । सोच्चा नेयाउय मग्ग, ज भुज्जो परिभस्सई ॥ २५ ॥
इह कामणियट्टस्स, अत्तट्ठे नावरज्झई । पूइदेहनिरोहेण, भवे देवि त्ति मे सुय ॥ २६ ॥
इड्ढी जुई जसो वण्णो, आउ सुहमणुत्तर । भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जई ॥ २७ ॥
बालस्स पस्स बालत्त, अहम्म पडिवज्जिया । चिच्चा धम्म अहम्मिट्ठे, नरए उववज्जई ॥ २८ ॥
धीरस्स पस्स धीरत्त सव्वधम्माणुवत्तिणो । चिच्चा अधम्म धम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जई ॥ २९ ॥
तुलियाण बालभाव, अबाल चेव पडिए । चइऊण बालभाव, अबाल सेवई मुणि ॥ ३० ॥

त्ति बेमि ॥ इअ एलय-ज्झयण समत्त ॥ ७ ॥

॥ अह काविलिय अट्ठम अज्झयण ॥

अधुवे असासयम्मि, ससारम्मि दुक्खपउराए ।
किं नाम होज्ज त कम्मय, जेणाहं दोग्गइ न गच्छेज्जा ॥ १ ॥
विजहित्तु पुव्वसजोय, न सिणेह कहिंचि कुव्वेज्जा ।
असिणेहसिणेहकरेहिं, दोसपओसेहि मुच्चए भिक्खू ॥ २ ॥
तो नाणदसणसमग्गो, हियनिस्सेसाय सव्वजीवाण ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥ ३ ॥
सव्व गथ कलह च, विप्पजहे तहाविह भिक्खू ।
सव्वेसु कामजाएसु, पासमाणो न लिप्पई ताई ॥ ४ ॥
भोगामिसदोसविसण्णे, हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे ।
बाले य मन्दिए मूढे, बज्झई मच्छिया व खेलम्मि ॥ ५ ॥
दुप्परिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं ।
अह सन्ति सुव्वया साहू, जे तरन्ति अतर वणिया वा ॥ ६ ॥
समणामु एगे वयमाणा, पाणवह मिया अयाणन्ता ।
मन्दा निरय गच्छन्ति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥ ७ ॥
न हु पाणवह अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाण ।
एवारिएहिं अक्खाय, जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥ ८ ॥

पाणे य नाइवाएज्जा, से समीइ त्ति वुच्चई ताई ।
तओ से पावय कम्म, निज्जाइ उदग व थलाओ ॥ ९ ॥
जगनिस्सिएहिं भूएहिं, तसनामेहिं थावरेहिं च ।
नो तेसिमारभे दड, मणसा वायसा कायसा चेव ॥ १० ॥
सुद्धेसणाओ नच्चाण, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाण ।
जायाए घासमेसेज्जा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥ ११ ॥
पन्ताणि चेव सेवेज्जा, सीयपिंड पुराणकुम्मास ।
अदु वक्कस पुलाग वा, जवणट्ठाए निसेवए मधु ॥ १२ ॥
जे लक्खण च सुविण, अङ्गविज्ज च जे पउञ्जन्ति ।
न हु ते समणा वुच्चन्ति, एव आयरिएहिं अक्खाय ॥ १३ ॥
इहजीविय अणियमेत्ता, पब्भट्ठा समाहिजोएहिं ।
ते कामभोगरसगिद्धा, उववज्जन्ति आसुरे काए ॥ १४ ॥
तत्तो वि य उव्वट्टित्ता, ससार बहु अणुपरियडन्ति ।
बहुकम्मलेवलित्ताण, बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ॥ १५ ॥
कसिणपि जो इम लोय, पडिपुण्ण दलेज्ज इक्कस्स ।
तेणावि से न सतुस्से, इइ दुप्पूरए इमे आया ॥ १६ ॥
जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढई ।
दोमासकय कज्ज, कोडीए वि न निट्ठिय ॥ १७ ॥
नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा, गडवच्छासु ऽणेगचित्तासु ।
जाओ पुरिस पलोभित्ता, खेलन्ति जहा व दासेहिं ॥ १८ ॥
नारीसु नोवगिज्झेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणागारे ।
धम्म च पेसल नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाण ॥ १९ ॥
इअ एस धम्मे अक्खाए कविलेण च विसुद्धपन्नेण ।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति, तेहिं आराहिया दुवे लोग ॥ २० ॥
त्ति बेमि ॥ इअ काविलीय अट्ठम अज्झयण समत्त ॥ ८ ॥

॥ अह नवम नमिपव्वज्जा अज्झयण ॥

चइऊण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि । उवसन्तमोहणिज्जो, सरई पोराणिय जाइ ॥ १ ॥
जाइ सरित्तु भयव, सहसबुद्धो अणुत्तरे धम्मे । पुत्त ठवेत्तु रज्जे, अभिणिक्खमई नमी राया ॥ २ ॥
से देवलोगसरिसे, अन्तेउरवरगओ वरे भोए । भुजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥ ३ ॥
मिहिल सपुरजणवय, बलमारोह च परियण सव्व । चिच्चा अभिनिक्खन्तो, एगन्तमहिट्ठिओ भयव ॥ ४ ॥
कोलाहलगभूय, आसी मिहिलाए पव्वयन्तम्मि । तइया रायरिसिम्मि, नमिम्मि अभिणिक्खमतम्मि ॥५॥

अब्भुट्ठिय रायरिसिं, पव्वज्जाठाणमुत्तम । सक्को माहणरूवेण, इम वयणमब्बवी ॥ ६ ॥
किण्णु भो अज्ज मिहिला, कोलाहलगसकुला । सुव्वन्ति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ८ ॥
मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे । पत्तपुप्फफलोवेए, बहूण बहुगुणे सया ॥ ९ ॥
वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे । दुहिया असरणा अत्ता, एए कन्दन्ति भो खगा ॥ १० ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमि रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ११ ॥
एस अग्गी य वाऊ य, एय डज्झइ मन्दिर । भयव अन्तेउर तेण, कीस ण नावपेक्खह ॥ १२ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ १३ ॥
सुह वसामो जीवामो, जेसि मो नत्थि किंचण । मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचण ॥ १४ ॥
चत्तपुत्तकलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो । पिय न विज्जई किंचि, अप्पियं पि न विज्जई ॥ १५ ॥
बहु खु मुणिणो भद्द, अणगारस्स भिक्खुणो । सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगन्तमणुपस्सओ ॥ १६ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ १७ ॥
पागार कारइत्ताण, गोपुरट्टालगाणि च । उस्सूलगसयग्घीओ तओ गच्छसि खत्तिया ॥ १८ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ १९ ॥
सद्ध नगर किच्चा, तवसवरमग्गल । खन्ति निउणपागार, तिगुत्त दुप्पधसय ॥ २० ॥
धणु परक्कम किच्चा, जीव च इरिय सया । धिइ च केयण किच्चा, सच्चेण पलिमन्थए ॥ २१ ॥
तवनारायजुत्तेण, भित्तूण कम्मकंचुय । मुणी विगयसगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥ २२ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमि रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २३ ॥
पासाए कारइत्ताण, वद्धमाणगिहाणि य । वालग्गपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २४ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २५ ॥
ससय खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घर । जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासय ॥ २६ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमि रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २७ ॥
आमोसे लोमहारे य, गठिभेए य तक्करे । नगरस्स खेम काऊण, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २८ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २९ ॥
असइ तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दण्डो पजुञ्जई । अकारिणोऽत्थ बज्झन्ति, मुच्चई कारओ जणो ॥ ३० ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमि रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३१ ॥
जे केइ पत्थिवा तुज्झ, नानमन्ति नराहिवा । वसे ते ठावइत्ताण, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ३२ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३३ ॥
जो सहस्स सहस्साण, सगामे दुज्जए जिणे । एग जिणेज्ज अप्पाण, एस से परमो जओ ॥ ३४ ॥
अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ । अप्पाणमेवमप्पाण, जइत्ता सुहमेहए ॥ ३५ ॥
पचिन्दियाणि कोह, माण माय तहेव लोह च । दुज्जय चेव अप्पाण, सव्व अप्पे जिए जिय ॥ ३६ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमि रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥
जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समणमाहणे । दत्ता भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ३८ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३९ ॥
जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए। तस्स वि संजमो सेओ, अदिन्तस्स वि किंचण ॥ ४० ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४१ ॥
घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं। इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ॥ ४२ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ४३ ॥
मासे मासे तु जो बालो, कुसग्गेण तु भुंजए। न सो सुयक्खायधम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ॥ ४४ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ, तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४५ ॥
हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं। कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ४६ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ४७ ॥
सुवण्णरूपस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि, इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया ॥ ॥ ४८ ॥
पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह। पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥ ४९ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ५० ॥
अच्छेरयमब्भुए, भोए चयसि पत्थिवा। असन्ते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि ॥ ५१ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ५२ ॥
सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा। कामे पत्थेमाणा, अकामा जन्ति दोग्गइं ॥ ५३ ॥
अहे वयन्ति कोहेणं, माणेणं अहमा गई। माया गई पडिग्घाओ, लोभाओ दुहओ भयं ॥ ५४ ॥
अवउज्झिऊण माहणरूवं, विउव्विऊण इन्दत्तं। वन्दइ अभित्थुणन्तो, इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ॥ ५५ ॥
अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ। अहो निरक्किया माया, अहो लोभो वसीकओ ॥ ५६ ॥
अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं। अहो ते उत्तमा खन्ती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥ ५७ ॥
इह सि उत्तमो भन्ते, पच्छा होहिसि उत्तमो। लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥ ५८ ॥
एवं अभित्थुणन्तो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए। पयाहिणं करेन्तो, पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥ ५९ ॥
तो वन्दिऊण पाए, चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स। आगासेणुप्पइओ, ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥ ६० ॥
नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ। चइऊण गेहं च वेदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ६१ ॥
एवं करेन्ति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा। विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ॥ ६२ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ नमिपव्वज्जा समत्ता ॥

॥ अह दुमपत्तय दसम अज्झयण ॥

दुमपत्तए पड्डयए जहा, निवडइ राइगणाण अच्चए।
एव मणुयाण जीविय, समय गोयम मा पमायए ॥ १ ॥
कुसग्गे जह ओसबिन्दुए, थोव चिट्ठइ लम्बमाणए।
एव मणुयाण जीविय, समय गोयम मा पमायए ॥ २ ॥
इइ इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बहुपच्चवायए।
विहुणाहि रय पुरे कड, समय गोयम मा पमायए ॥ ३ ॥
दुलहे खलु माणुसे भवे, चिरकाले वि सव्वपाणिण।
गाढा य विवाग कम्मुणो, समय गोयम मा पमायए ॥ ४ ॥
पुढविक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ ससवे।
काल सखाईय, समय गोयम मा पमायए ॥ ५ ॥
आउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ ससवे।
काल सखाईय, समय गोयम मा पमायए ॥ ६ ॥
तेउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो य ससवे।
काल सखाईय समय गोयम मा पमायए ॥ ७ ॥
वाउक्काइयमइगओ, उक्कोस जीवो य ससवे।
काल सखाईय, समय गोयम मा पमायए ॥ ८ ॥
वणस्सइकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ ससवे।
कालमणन्तदुरन्तय समय गोयम मा पमायए ॥ ९ ॥
बइन्दियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ ससवे।
काल सखिज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायए ॥ १० ॥
तेइन्दिकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ ससवे।
काल सखिज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायए ॥ ११ ॥
चउरिन्दियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ ससवे।
काल सखिज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायए ॥ १२ ॥
पंचिन्दियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ ससवे।
सत्तट्ठभवगहणे, समय गोयम मा पमायए ॥ १३ ॥
देवे नेरइए यमइगओ उक्कोस जीवो उ ससवे।
इक्केक्कभवगहणे समय गोयम मा पमायए ॥ १४ ॥
एव भवससारे, संसरइ सुहासुहेहि कम्मेहिं।
जीवो पमायबहुलो, समय गोयम मा पमायए ॥ १५ ॥

लद्धूण वि माणुसत्तणं, आरिअत्त पुणरावि दुल्लहं ।
विगलिन्दियया हु दीसई, समयं गोयम मा पमायए ॥ १६ ॥
लद्धूण वि आयरित्तणं, अहीणपंचेन्दियया हु दुल्लहा ।
विगलिन्दियया हु दीसई, समयं गोयम मा पमायए ॥ १७ ॥
अहीणपंचेन्दियत्तं पि से लहे, उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।
कुतित्थिनिसेवए जणे, समयं गोयम मा पमायए ॥ १८ ॥
लद्धूण वि उत्तमं सुइं, सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा ।
मिच्छत्तनिसेवए जणे, समयं गोयम मा पमायए ॥ १९ ॥
धम्मं पि हु सद्दहन्तया, दुल्लहया काएण फासया ।
इह कामगुणेहि मुच्छिया, समयं गोयम मा पमायए ॥ २० ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सोयबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २१ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से चक्खुबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २२ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से घाणबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २३ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से जिब्भबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २४ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से फासबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २५ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सव्वबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २६ ॥
अरई गण्ड विसूइया, आयंका विविहा फुसन्ति ते ।
विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं, समयं गोयम मा पमायए ॥ २७ ॥
वोच्छिन्द सिणेहमप्पणो, कुमुयं सारइयं व पाणियं ।
से सव्वसिणेहवज्जिए, समयं गोयम मा पमायए ॥ २८ ॥
चिच्चाण धणं च भारियं, पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
मा वन्तं पुणो वि आइए, समयं गोयम मा पमायए ॥ २९ ॥
अवउज्झिय मित्तबन्धवं, विउलं चेव धणोहसंचयं ।
मा तं बिइयं गवेसए, समयं गोयम मा पमायए ॥ ३० ॥
न हु जिणे अज्ज दिस्सई, बहुमए दिस्सइ मग्गदेसिए ।
संपइ नेयाउए पहे, समयं गोयम मा पमायए ॥ ३१ ॥
अवसोहिय कण्टगापहं, ओइण्णो सि पहं महालयं ।

गच्छसि मग्ग विसोहिया, समय गोयम मा पमायए ॥ ३२ ॥
अबले जह भारवाहए, मा मग्गे विसमे वगाहिया ।
पच्छा पच्छाणुतावए, समय गोयम मा पमायए ॥ ३३ ॥
तिण्णो हु सि अण्णव मह, किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
अभितुर पार गमित्तए, समय गोयम मा पमायए ॥ ३४ ॥
अकलेवरसेणिं उस्सिया, सिद्धिं गोयम लोय गच्छसि ।
खेम च सिव अणुत्तर, समयं गोयम मा पमायए ॥ ३५ ॥
बुद्धे परिनिव्वुडे चरे, गामगए नगरे व सजए ।
सन्तीमग्ग च वूहए, समय गोयम मा पमायए ॥ ३६ ॥
बुद्धस्स निसम्म भासिय, सुकहियमट्ठपओवसोहिय ।
राग दोस च छिन्दिया, सिद्धिगइ गए गोयमे ॥ ३७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ दुमपत्तय समत्त ॥ १० ॥

॥ अह बहुस्सुयपुज्ज एगारस अज्झयण ॥

सजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो । आयार पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥
जे यावि होइ निव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे अभिक्खण उल्लवई, अविणीए अबहुस्सुए ॥ २ ॥
अह पचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भई । थम्भा कोहा पमाएण, रोगेणालस्सएण य ॥ ३ ॥
अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलि त्ति वुच्चई । अहस्सिरे सया दन्ते, न य मम्ममुदाहरे ॥ ४ ॥
नासीले न विसीले, न सिया अइलोलुए । अकोहणे सच्चरए, सिक्खासीलि त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥
अह चोद्दसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ सजए । अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वाण च न गच्छइ ॥ ६ ॥
अभिक्खण कोही हवइ, पबन्ध च पकुव्वई । मेत्तिज्जमाणो वमइ, सुयं लद्धूणमज्जई ॥ ७ ॥
अवि पावपरिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पई । सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावय ॥ ८ ॥
पइण्णवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे । असविभागी अवियत्ते, अविणीए त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥
अह पन्नरसहिं ठाणेहिं, सुविणीए त्ति वुच्चइ । नीयावत्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ॥ १० ॥
अप्प च अहिक्खिवई, पबन्ध च न कुव्वई । मेत्तिज्जमाणो भयई, सुयं लद्धु न मज्जई ॥ ११ ॥
न य पावपरिक्खेवी, न य मित्तेसु कुप्पई । अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासई ॥ १२ ॥
कलहडमरवज्जिए बुद्धे अभिजाइए । हिरिम पडिसलीणे, सुविणीए त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥
वसे गुरुकुले निच्च, जोगव उवहाणव । पियकरे पियवाई, से सिक्ख लद्धुमरिहई ॥ १४ ॥
जहा सखम्मि पय, निहिय दुहओ वि विरायइ । एव बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुय ॥ १५ ॥
जहा से कम्बोयाण, आइण्णे कन्थए सिया । आसे जवेण पवरे, एव हवइ बहुस्सुए ॥ १६ ॥
जहाइण्णसमारूढे, सूरे दढपरक्कमे । उभओ नन्दिघोसेण, एव हवइ बहुस्सुए ॥ १७ ॥
जहा करेणुपरिकिण्णे, कुजरे सट्ठिहायणे । बलवन्ते अप्पडिहए, एव हवइ बहुस्सुए ॥ १८ ॥

जहा से तिक्खसिंगे, जायखन्धे विरायई। वसहे जूहाहिवई, एव हवइ बहुस्सुए ॥ १९ ॥
जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहसए। सीहे मियाण पवरे, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २० ॥
जहा से वासुदेवे, सङ्खचक्कगयाधरे। अप्पडिहयबले जोहे, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २१ ॥
जहा से चाउरन्ते, चक्कवट्टीमहिड्ढिए। चोद्दसरयणाहिवई, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २२ ॥
जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरन्दरे। सक्के देवाहिवई, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २३ ॥
जहा से तिमिरविद्धंसे, उत्तिट्ठन्ते दिवायरे। जलन्ते इव तेएण, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २४ ॥
जहा से उडुवई चन्दे, नक्खत्तपरिवारिए। पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २५ ॥
जहा से समाइयाण, कोट्ठागारे सुरक्खिए। नाणाधन्नपडिपुण्णे एव हवइ बहुस्सुए ॥ २६ ॥
जहा सा दुमाण पवरा, जम्बू नाम सुदसणा। अणाढियस्स देवस्स, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २७ ॥
जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरगमा। सीया नीलवन्तपवहा, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २८ ॥
जहा से नगाण पवरे, सुमहं मन्दरे गिरी। नाणोसहिपज्जलिए, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २९ ॥
जहा से सयम्भुरमणे, उदही अक्खओदए। नाणारयणपडिपुण्णे, एव हवइ बहुस्सुए ॥ ३० ॥

समुद्दगम्भीरसमा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहसया।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो, खवित्तु कम्म गइमुत्तम गया ॥ ३१ ॥

तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए। जेणप्पाण पर चेव, सिद्धि सपाउणेज्जासि ॥ ३२ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ बहुस्सुयपुज्ज समत्त ॥ ११ ॥

॥ अह हरिएसिज्ज बारह अज्झयण ॥

सोवागकुलसभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी, हरिएसबलो नाम, आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥ १ ॥
इरिएसणभासाए, उच्चारसमिईसु य। जओ आयाणनिक्खेवे, सजओ सुसमाहिओ ॥ २ ॥
मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्दिओ। भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि, जन्नवाडे उवट्ठिओ ॥ ३ ॥
त पासिऊण एज्जन्त, तवेण परिसोसियं। पन्तोवहिउवगरण, उवहसन्ति अणारिया ॥ ४ ॥
जाईमयपडिथद्धा, हिंसगा अजिइन्दिया। अबम्भचारिणो बाला, इम वयणमब्बवी ॥ ५ ॥

कयरे आगच्छइ दित्तरूवे, काले विगराले फोक्कनासे।
ओमचेलए पसुपिसायभूए, सकरदूस परिहरिय कण्ठे ॥ ६ ॥
को रे तुम इय अदसणिज्जे, काए व आसाइहमागओसि।
ओमचेलया पसुपिसायभूया, गच्छक्खलाहि किमिहं ठिओ सि ॥ ७ ॥
जक्खे तहिं तिन्दुयरुक्खवासी, अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स।
पच्छायइत्ता नियग सरीर, इमाइ वयणाइमुदाहरित्था ॥ ८ ॥
समणो अह सजओ, बम्भयारी, विरओ धणपयणपरिग्गहाओ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले, अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि ॥ ९ ॥
वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई, अन्न पभूय भवयाणमेय।

जाणेइ मे जायणजीविणु त्ति, सेसावसेसं लभऊ तवस्सी ॥ १० ॥
उवक्खडं भोयण माहणाणं, अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं, दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ॥ ११ ॥
थलेसु बीयाइ ववंति कासगा, तहेव निन्नेसु य आससाए ।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झं, आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं ॥ १२ ॥
खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए, जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।
जे माहणा जाइविज्जोववेया, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥ १३ ॥
कोहो य माणो य वहो य जेसिं, मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ।
ते माहणा जाइविज्जाविहूणा, ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥ १४ ॥
तुब्भेत्थ भो भारधरा गिराणं, अट्ठं न जाणेह अहिज्ज वेए ।
उच्चावयाइं मुणिणो चरन्ति, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥ १५ ॥
अज्झावयाणं पडिकूलभासी, पभाससे किं तु सगासि अम्हं ।
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं, न य णं दाहामु तुमं नियण्ठा ॥ १६ ॥
समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स, गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं, किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ॥ १७ ॥
के एत्थ खत्ता उवजोइया वा, अज्झावया वा सह खण्डिएहिं ।
एयं दण्डेण फलएण हन्ता, कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ॥ १८ ॥
अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता, उद्धाइया तत्थ बहूकुमारा ।
दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव, समागया तं इसि तालयन्ति ॥ १९ ॥
रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया, भद्द त्ति नामेण अणिन्दियङ्गी ।
तं पासिया संजय हम्ममाणं, कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥ २० ॥
देवाभिओगेण निओइएणं, दिन्ना मु रन्ना मणसा न झाया ।
नरिन्ददेविन्दऽभिवन्दिएणं, जेणम्हि वन्ता इसिणा स एसो ॥ २१ ॥
एसो हु सो उग्गतवो महप्पा, जितिन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं, पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥ २२ ॥
महाजसो एस महाणुभागो, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं, मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥ २३ ॥
एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा, पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए, जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति ॥ २४ ॥
ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खेऽसुरा तहिं तं जण तालयन्ति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते, पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥ २५ ॥
गिरिं नहेहिं खणह, अयं दन्तेहिं खायह ।
जायतेयं पाएहि हणह, जे भिक्खु अवमन्नह ॥ २६ ॥

आसीविसो उग्गतवो महेसी, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
अगणिं व पक्खन्द पयंगसेणा, जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥ २७ ॥
सीसेण एयं सरणं उवेह, समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा, लोगंपि एसो कुविओ डहेज्जा ॥ २८ ॥
अवहेडिय पिट्ठिसउत्तमंगे, पसारिया बाहु अकम्मचेट्ठे ।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते, उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥ २९ ॥
ते पासिया खण्डियकट्ठभूए, विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसिं पसाएइ सभारियाओ, हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते ॥ ३० ॥
बालेहि मूढेहि अयाणएहिं, जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते ।
महप्पसाया इसिणो हवन्ति, न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥ ३१ ॥
पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च, मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।
जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति, तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥ ३२ ॥
अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा, तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना ।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो, समागया सव्वजणेण अम्हे ॥ ३३ ॥
अच्चेमु ते महाभाग, न ते किंचि न अच्चिमो ।
भुंजाहि सालिमं कूरं, नाणावंजणसंजुयं ॥ ३४ ॥
इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं, तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
बाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं, मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥ ३५ ॥
तहियं गन्धोदयपुप्फवासं, दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।
पहयाओ दुन्दुहीओ सुरेहिं, आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥ ३६ ॥
सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो न दीसइ जाइविसेस कोई ।
सोवागपुत्तं, हरिएससाहुं, जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥ ३७ ॥
किं माहणा जोइसमारभन्ता, उदएण सोहिं बहिया विमग्गह ।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥ ३८ ॥
कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं, सायं च पायं उदगं फुसन्ता ।
पाणाइ भूयाइ विहेडयन्ता, भुज्जो वि मन्दा पगरेह पावं ॥ ३९ ॥
कहं च रे भिक्खु वयं जयामो, पावाइ कम्माइ पुणोल्लयामो ।
अक्खाहि णे संजय जक्खपूइया, कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ॥ ४० ॥
छज्जीवकाए असमारभन्ता, मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिओ माणमायं, एयं परिन्नाय चरन्ति दन्ता ॥ ४१ ॥
सुसंवुडा पंचहिं संवरेहिं, इह जीवियं अणवकंखमाणा ।
वोसट्ठकाए सुइचत्तदेहा, महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं ॥ ४२ ॥
के ते जोई के व ते जोइठाणे, का ते सुया किं व ते कारिसंग । —

एहा य ते कयरा सन्ति भिक्खू, कयरेण होमेण हुणासि जोइं ॥ ४३ ॥
तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंग ।
कम्मेहा संजमजोगसन्ती होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ॥ ४४ ॥
के ते हरए के य ते सन्तितित्थे, कहिं सिणाओ व रयं जहासि ।
आइक्ख णे संजय जक्खपूइया, इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥ ४५ ॥
धम्मे हरए बम्भे सन्तितित्थे, अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥ ४६ ॥
एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं, महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
जहिं सिणाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाणं पत्त ॥ ४७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ हरिएसिज्जं समत्तं ॥ १२ ॥

॥ अह चित्तसम्भूइज्जं तेरहमं अज्झयणं ॥

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि। चुलणीए बम्भदत्तो, उववन्नो पउमगुम्माओ ॥ १ ॥
कम्पिल्ले सम्भूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि। सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥ २ ॥
कम्पिल्लम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसम्भूया। सुहदुक्खफलविवागं, कहेन्ति ते एक्कमेक्कस्स ॥ ३ ॥
चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बम्भदत्तो महायसो । भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमब्बवी ॥ ४ ॥
आसीमु भायरा दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा । अन्नमन्नमणूरत्ता, अन्नमन्नहिएसिणो ॥ ५ ॥
दासा दसण्णे आसीमु, मिया कालिंजरे नगे । हंसा मयंगतीरे, सोवागा कासिभूमिए ॥ ६ ॥
देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढीया। इमा नो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७ ॥
कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय विचिन्तिया । तेसिं फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ॥ ८ ॥
सच्चसोयप्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा । ते अज्ज परिभुंजामो, किं नु चित्तेवि से तहा ॥ ९ ॥

सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं, आया ममं पुण्णफलोववेए ॥ १० ॥
जाणाहि संभूय महाणुभागं, महिड्ढीयं पुण्णफलोववेयं ।
चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं, इड्ढी जुई तस्स वि यप्पभूया ॥ ११ ॥
महत्थरूवा वयणप्पभूया, गाहाणुगीया नरसंघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया, इह जयन्ते समणो मि जाओ ॥ १२ ॥
उच्चोयए महु कक्के य बम्भे, पवेइया आवसहा य रम्मा ।
इमं गिहं चित्त धणप्पभूयं, पसाहि पञ्चालगुणोववेयं ॥ १३ ॥
नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं, नारीजणाइं परिवारयन्तो ।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू, मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥ १४ ॥

त पुव्वनेहेण कयाणुराग, नराहिव कामगुणेसु गिद्ध ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही, चित्तो इम वयणमुदाहरित्या ॥ १५ ॥
सव्व विलविय गीय, सव्व नट्ट विडम्बिय ।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥ १६ ॥
बालाभिरामेसु दुहावहेसु, न त सुह कामगुणेसु राय ।
विरत्तकामाण तवोहणाण, ज भिक्खुण सीलगुणे रयाण ॥ १७ ॥
नरिंद जाई अहमा नराण, सोवागजाइ दुहओ गयाण ।
जहिं वय सव्वजणस्स, वेस्सा, वसी य सोवागनिवेसणेसु ॥ १८ ॥
तीसे य जाईइ उ पावियाए, वुच्छाम्रु सोवागनिवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगछणिज्जा, इह तु कम्माइ पुरे कडाइ ॥ १९ ॥
सो दाणि सिं राय महाणुभागो, महिड्ढी पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइ असासयाइ, आदाणहेउ अभिणिक्खमाहि ॥ २० ॥
इह जीविए राय असासयम्मि, धणिय तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो ।
से सोयइ मच्चुमुहोवणीए, धम्म अकाऊण परसि लोए ॥ २१ ॥
जहेह सीहो व मिय गहाय, मच्चू नर नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया व पिया व भाया, कालम्मि तम्मसहरा भवन्ति ॥ २२ ॥
न तस्स दुक्ख विभयन्ति, नाइओ, न मित्तवग्गा न सुया न बधवा ।
एक्को सय पच्चणुहोइ दुक्ख, कत्तारमेव अणुजाइ कम्म ॥ २३ ॥
चेच्चा दुपय च चउप्पय च, खेत्त गिह धणधन्न च सव्व ।
सकम्मबीओ अवसो पयाइ, पर भव सुदर पावग वा ॥ २४ ॥
त एक्क तुच्छसरीरग से, चिईगय दहिय उ पावगेण ।
भज्जा य पुत्तावि य नायओ य, दायरमन्न अणुसकमन्ति ॥ २५ ॥
उवणिज्जई जीवियमप्पमाय, वण्ण जरा हरइ नरस्स राय ।
पंचालराया वयण सुणाहि, मा कासि कम्माइ महालयाइ ॥ २६ ॥
अह पि जाणामि जहेह साहू, ज मे तुम साहसि वक्कमेय ।
भोगा इमे सगकरा हवन्ति, जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥ २७ ॥
हत्थिणपुरम्मि चित्ता, दट्ठूण नरवइ महिड्ढीय ।
कामभोगेसु गिद्धेण, नियाणमसुह कड ॥ २८ ॥
तस्स मे अपडिकन्तस्स, इमं एयारिस फल ।
जाणमाणो वि ज धम्म, कामभोगेसु मुच्छिओ ॥ २९ ॥
नागो जहा पकजलावसन्नो, दट्ठु थल नाभिसमेइ तीर ।
एव वय कामगुणेसु गिद्धा, न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥ ३० ॥
अच्चेइ कालो तरन्ति राइओ, न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।

उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति, दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥ ३१ ॥
जइ तं सि भोगे चइउं असत्तो, अज्जाइं कम्माइं करेहि राय ।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी, तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥ ३२ ॥
न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी, गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो, गच्छामि रायं आमन्तिओ सि ॥ ३३ ॥
पञ्चालराया वि य बम्भदत्तो, साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुञ्जिय कामभोगे, अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥ ३४ ॥
चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो, उदग्गचारित्ततवो महेसी ।
अणुत्तरं संजमं पालइत्ता, अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥ ३५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ चित्तसंभूइज्जं समत्तं ॥

॥ अह उसुयारिज्जं चोद्दहमं अज्झयणं ॥

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी, केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे, खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥ १ ॥
सकम्मसेसेण पुराकएणं, कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया ।
निव्विण्णसंसारभया जहाय, जिणिंदमग्गं सरणं पवन्ना ॥ २ ॥
पुमत्तमागम्म कुमार दो वी, पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो, रायत्थ देवी कमलावई य ॥ ३ ॥
जाईजरामच्चुभयाभिभूया, बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा, दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥ ४ ॥
पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स, सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं, तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥ ५ ॥
ते कामभोगेसु असज्जमाणा, माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकङ्खी अभिजायसड्ढा, तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥
असासयं दट्ठु इमं विहारं, बहुअन्तरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं लहामो, आमन्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥ ७ ॥
अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं, तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयन्ति, जहा न होई असुयाण लोगो ॥ ८ ॥
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे, पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं, आरण्णगा होह मुणी पसत्था ॥ ९ ॥
सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं, मोहाणिला पज्जलणाहिएणं ।
संतत्तभावं परितप्पमाणं, लोलुप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥ १० ॥

पुरोहियं तं कमसोऽणुणिन्तं, निमंतयन्तं च सुए धणेणं ।
जहक्कमं कामगुणेहिं चेव, कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥ ११ ॥
वेया अहीया न भवन्ति ताणं, भुत्ता दिया निन्ति तमं तमेणं ।
जाया य पुत्ता न हवन्ति ताणं, को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥ १२ ॥
खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा, पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥ १३ ॥
परिव्वयन्ते अणियत्तकामे, अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥ १४ ॥
इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि, इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
तं एवमेवं लालप्पमाणं, हरा हरंति त्ति कहं पमाए ॥ १५ ॥
धणं पभूयं सह इत्थियाहिं, सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो, तं सव्व साहीणमिहेव तुब्भं ॥ १६ ॥
धणेण किं धम्मधुराहिगारे, सयणेण वा कामगुणेहिं चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी, बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥ १७ ॥
जहा य अग्गी अरणी असन्तो, खीरे घयं तेल्लमहा तिलेसु ।
एमेव जाया सरीरंसि सत्ता, संमुच्छई नासइ नावचिट्ठे ॥ १८ ॥
नो इन्दियग्गेज्झ अमुत्तभावा, अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
अज्झत्थहेउं नियअस्स बन्धो, संसारहेउं च वयन्ति बन्धं ॥ १९ ॥
जहा वयं धम्म अजाणमाणा, पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
ओरुब्भमाणा परिरक्खयन्ता, तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥ २० ॥
अब्भाहयम्मि लोगम्मि, सव्वओ परिवारिए ।
अमोहाहिं पडन्तीहिं, गिहंसि न रइं लभे ॥ २१ ॥
केण अब्भाहओ लोगो, केण वा परिवारिओ ।
का वा अमोहा वुत्ता, जाया चिन्तावरो हुमे ॥ २२ ॥
मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ ।
अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय वियाणह ॥ २३ ॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जन्ति राइओ ॥ २४ ॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जन्ति राइओ ॥ २५ ॥
एगओ संवसित्ताणं, दुहओ सम्मत्तसंजुया ।
पच्छा जाया गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ॥ २६ ॥
जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स वत्थि पलायणं ।

णो जाणे न मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया ॥ २७ ॥
अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो, जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो ।
अणागयं नेव य अत्थि किंची, सद्धाखमं णे विणइत्तु राग ॥ २८ ॥
पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो, वासिट्ठि भिक्खायरियाइ कालो ।
साहाहि रुक्खो लहई समाहिं, छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं ॥ २९ ॥
पंखाविहूणो व्व जहेव पक्खी, भिच्चविहूणो व्व रणे नरिन्दो ।
विवन्नसारो वणिओ व्व पोए, पहीणपुत्तो मि तहीं अहंपि ॥ ३० ॥
सुसंभिया कामगुणे इमे ते, संपिण्डिया अग्गरसप्पभूया ।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं, पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ॥ ३१ ॥
भुत्ता रसा भोइ जहाइ णे वओ न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं, संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥ ३२ ॥
मा हू तुमं सोयरियाण सम्भरे, जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी ।
भुंजाहि भोगाइ मए समाणं, दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥ ३३ ॥
जहा य भोई तणुयं भुयंगो, निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।
एमेए जाया पयहन्ति भोए, ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को ॥ ३४ ॥
छिन्दित्तु जालं अबलं व रोहिया, मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
धोरेयसीला तवसा उदारा, धीरा हु भिक्खायरियं चरन्ति ॥ ३५ ॥
नहेव कुंचा समइक्कमन्ता, तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
पलेन्ति पुत्ता य पई य मज्झं, ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ॥ ३६ ॥
पुरोहियं तं ससुयं सदारं, सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुम्बसारं विउलुत्तमं च, रायं, अभिक्खं समुवाय देवी ॥ ३७ ॥
वन्तासी पुरिसो राय, न सो होइ पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं, धणं आदाउमिच्छसि ॥ ३८ ॥
सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तव ॥ ३९ ॥
मरिहिसि राय जया तया वा, मणोरमे कामगुणे विहाय ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ताणं, न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥ ४० ॥
नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा, संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा, परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥ ४१ ॥
दवग्गिणा जहा रण्णे, डज्झमाणेसु जन्तुसु । अन्ने सत्ता पमोयन्ति, रागद्दोसवसं गया ॥ ४२ ॥
एवमेव वयं मूढा, कामभोगेसु मुच्छिया । डज्झमाणं न बुज्झामो, रागद्दोसग्गिणा जगं ॥ ४३ ॥
भोगे भोच्चा वमित्ता य, लहुभूयविहारिणो । आमोयमाणा गच्छन्ति, दिया कामकमा इव ॥ ४४ ॥
इमे य बद्धा फन्दन्ति, मम हत्थज्जमागया । सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ॥ ४५ ॥

सामिस कुलल दिस्स, वज्झमाण निरामिस । आमिस सव्वमुज्झित्ता, विहरिस्सामि निरामिसा ॥ ४६ ॥
गिद्धोवमा उ नच्चाण, कामे ससारवड्ढणे । उरगो सुवण्णपासे व्व, सकमाणो तणु चर ॥ ४७ ॥
नागो व्व बन्धण छित्ता, अप्पणो वसहिं वए । एय पत्थ महारायं, उसुयारि त्ति मे सुय ॥ ४८ ॥
चइत्ता विउल रज्ज, कामभोगे य दुच्चए । निव्विसय निरामिसा, निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥ ४९ ॥
धम्मं धम्म वियाणित्ता, चेच्चा कामगुणे वरे । तव पगिज्झहक्खाय, घोर घोरपरक्कमा ॥ ५० ॥
एव त कमसो बुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा । जम्ममच्चुभउव्विग्गा, दुक्खस्सन्तगवेसिणो ॥ ५१ ॥
सासणे विगयमोहाण, पुव्वि भावणभाविया । अचिरेणेव कालेण, दुक्खस्सन्तमुवागया ॥ ५२ ॥
राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिओ । माहणी दारगा चेव, सव्वे ते परिनिव्वुड ॥ ५३ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ उसुयारिज्ज समत्त ॥ १४ ॥

॥ अह सभिक्खू पचदह अज्झयण ॥

मोण चरिस्सामि समिच धम्म, सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
सथव जहिज्ज अकामकामे, अन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू ॥ १ ॥
राओवरय चरेज्ज लाढे, विरए वेयवियायरक्खिए ।
पन्ने अभिभूय सव्वदसी जे, कम्हिंचि न मुच्छिए स भिक्खू ॥ २ ॥
अक्कोसवह विइत्तु धीरे, मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वग्गमणे असपहिट्ठे, जे कसिण अहियासए स भिक्खू ॥ ३ ॥
पन्त सयणासण भइत्ता, सीउण्ह विविह च दसमसग ।
अव्वग्गमणे असपहिट्ठे, जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥ ४ ॥
नो सक्कइमिच्छई न पूय, नो वि य वन्दणग कुओ पसस ।
से सजए सुव्वए तवस्सी, सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥ ५ ॥
जेण पुण जहाइ जीविय, मोह वा कसिण नियच्छई ।
नरनारि पजहे सया तवस्सी, न य कोउहल उवेइ स भिक्खू ॥ ६ ॥
छिन्न सर भोमन्तलिक्ख, सुमिण लक्खणदण्डवत्थुविज्ज ।
अगवियार सरस्स विजय, जे विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥ ७ ॥
मन्त मूल विविह वेज्जचिन्त, वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाण ।
आउरे सरण तिगिच्छिय च, त परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ८ ॥
खत्तियगणउग्गरायपुत्ता, माहणभोइय विविहा य सिप्पिणो ।
नो तेसिं वयइ सिलोगपूय, त परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ९ ॥
गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा, अप्पव्वइएण व सथुया हविज्जा ।
तेसिं इहलोइयफलट्ठा, जो सथव न करेइ स भिक्खू ॥ १० ॥
सयणासणपाणभोयण, विविह खाइमसाइम परेसिं ।

अदए पडिसेहिए नियण्ठे, जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥ ११ ॥
जं किं चि आहारपाणजायं, विविहं खाइमसाइमं परेसिं लधुं ।
जो तं तिविहेण नाणुकम्पे, मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू ॥ १२ ॥
आयामगं चेव जवोदणं च, सीयं सोवीरजवोदगं च ।
न हीलए पिण्डं नीरसं तु, पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥ १३ ॥
सद्दा विविहा भवन्ति लोए, दिव्वा माणुस्सगा तिरिच्छा ।
भीमा भयभेरवा उराला, सोच्चा न विहिज्जई स भिक्खू ॥ १४ ॥
वादं विविहं समिच्च लोए, सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी, उवसन्ते अविहेडए स भिक्खू ॥ १५ ॥
असिप्पजीवी अगिहे अमित्ते, जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी, चेच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥ १६ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ सभिक्खुयं समत्तं ॥ १५ ॥

॥ अह बम्भचेरसमाहिठाणाणाम सोलसमं अज्झयणं ॥

सुयं मे आउसं-तेणं भगवया एवमक्खायं । इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा । कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ॥ इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा तंजहा विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे । नो इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु इत्थिपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्ज । तम्हा नो इत्थिपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे ॥ १ ॥ नो इत्थिणं कहं कहित्ता हवइ से निग्गन्थे । तं कहमिति चे आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥ २ ॥ नो इत्थीणं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निग्गन्थे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु

नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा ॥ ३ ॥ नो इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोएमाणस्स निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीणं इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोएज्ज निज्झाएज्जा ॥ ४ ॥ नो इत्थीण कुड्डन्तरसि वा दूसन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा कूइयसद्द वा रुइयसद्द वा गीयसद्द वा हसियसद्द वा थणियसद्द वा कन्दियसद्द वा विलवियसद्द वा सुणेत्ता हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु इत्थीण कुड्डन्तरसि व दूसन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा कूइयसद्द वा रुइयसद्द वा गीयसद्द वा हसियसद्द वा थणियसद्द वा कन्दियसद्द वा विलवियसद्द वा सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीण कुड्डन्तरसि वा दूसन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा कूइयसद्द वा रुइयसद्द वा गीयसद्द वा हसियसद्द वा थणियसद्द वा कन्दियसद्द वा विलवियसद्द वा सुणेमाणे विहरेज्जा ॥ ५ ॥ नो निग्गन्थे पुव्वरय पुव्वकीलिय अणुसरित्ता हवइ से निग्गन्थे त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु पुव्वरय पुव्वकीलिय अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पुव्वरय पुव्वकीलिय अणुसरेज्जा ॥ ६ ॥ नो पणीय आहार आहारित्ता हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु पणीय आहार आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीय आहार आहारेज्जा ॥ ७ ॥ नो अइमायाए पाणभोयणं आहारत्ता हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाण भोयण आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयण आहारेज्जा ॥ ८ ॥ नो विभूसाणुवादी हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे आयरियाह । विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ तओ ण इत्थिजणेण अभिलसिज्जमाणस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवादी हविज्जा ॥ ९ ॥ नो सद्दरूवरसगन्धफासाणुवादी हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु सद्दरूवगन्धफासाणुवादिस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केव

लिपत्तताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो सद्दरूवरसगन्धफासाणुवादी भवेज्जा से निग्गन्थे।
दसमे बम्भचेरसमाहिठाणे हवइ ॥ १० ॥ भवन्ति इत्थ सिलोगा तंजहा—

जं विवित्तमणाइण्णं, रहियं इत्थि जणेण य बम्भचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निसेवए ॥ १ ॥
मणपल्हायजणणी, कामरागविवड्ढणी। बम्भचेररओ भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए ॥ २ ॥
समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं। बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ३ ॥
अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लवियपेहियं। बम्भचेररओ थीणं, चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥ ४ ॥
कूइयं रुइयं गीयं, हसियं थणियकन्दियं। बम्भचेररओ थीणं, सोयगेज्झं विवज्जए ॥ ५ ॥
हासं किड्डं रइं दप्पं, सहसावित्तासियाणि य। बम्भचेररओ थीणं, नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥ ६ ॥
पणीयं भत्तपाणं तु, खिप्पं मयविवड्ढणं। बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ७ ॥
धम्मलद्धं मियं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं। नाइमत्तं तु भुंजेज्जा, बम्भचेररओ सया ॥ ८ ॥
विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीरपरिमण्डणं। बम्भचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥
सद्दे रूवे य गन्धे य, रसे फासे तहेव य। पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥ १० ॥
आलओ थीजणाइण्णो, थीकहा य मणोरमा। संथवो चेव नारीणं, तासिं इन्दियदरिसणं ॥ ११ ॥
कूइयं रुइयं गीयं, हासभुत्तासियाणि य। पणीयं भत्तपाणं च, अइमायं पाणभोयणं ॥ १२ ॥
गत्तभूसणमिट्ठं च, कामभोगा य दुज्जया। नरस्सत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥ १३ ॥
दुज्जए कामभोगे य, निच्चसो परिवज्जए। संकाठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥ १४ ॥
धम्मारामरते चरे भिक्खू, धिइमं धम्मसारही। धम्मारामरते दन्ते, बम्भचेरसमाहिए ॥ १५ ॥
देवदाणवगन्धव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा। बम्भयारिं नमंसन्ति, दुक्करं जे करन्ति तं ॥ १६ ॥
एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए। सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण, सिज्झिस्सन्ति तहावरे ॥ १७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ बम्भचेरसमाहिठाणा समत्ता ॥ १६ ॥

॥ अह पावसमणिज्जं सत्तदहं अज्झयणं ॥

जे केइ उ पव्वइए नियण्ठे, धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं, विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥
सेज्जा दढा पाउरणम्मि अत्थि, उप्पज्जई भोत्तु तहेव पाउं।
जाणामि जं वट्टई आउसु त्ति, किं नाम काहामि सुएण भन्ते ॥ २ ॥

जे केई पव्वइए, निद्दासीले पगामसो। भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥
आयरियउवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए। ते चेव खिंसई बाले, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ४ ॥
आयरियउवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पइ। अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥
सम्मद्दमाणो पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य। असंजए संजयमन्नमाणो, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ६ ॥
संथारं फलगं पीढं, निसेज्जं पायकम्बलं। अप्पमज्जियमारुहइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ७ ॥
दवदवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं। उल्लंघणे य चण्डे य, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ८ ॥

पडिलेहइ पमत्ते, पउज्झइ पायकम्बलं। पडिलेहा अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥
पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया। गुरुपरिभावए निच्चं, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १० ॥
बहुमाई पमुहरे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे। असंविभागी अचियत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ११ ॥
विवादं च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा। वुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १२ ॥
अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयई। आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥
ससरक्खपाए सुवई, सेज्जं न पडिलेहइ। संथारए अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १४ ॥
दुद्धदहीविगईओ, आहारेइ अभिक्खणं। अरए य तवोकम्मे, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १५ ॥
अत्यन्तम्मि य सूरम्मि आहारेइ अभिक्खणं। चोइओ पडिचोएइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १६ ॥
आयरियपरिच्चाई, परपासण्डसेवए। गाणंगणिए दुब्भूए, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १७ ॥
सयं गेहं परिचज्ज, परगेहंसि वावरे। निमित्तेण य ववहरइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १८ ॥
सन्नाइपिण्डं जेमेइ, नेच्छई सामुदाणियं। गिहिनिसेज्जं च वाहेइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १९ ॥

एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे, रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए, न से इहं नेव परत्थ लोए ॥ २० ॥
जे वज्जए एए सया उ दोसे, से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे।
अयंसि लोए अमयं व पूइए, आराहए लोगमिणं तहा परं ॥ २१ ॥
॥ त्ति बेमि ॥ इअ पावसमणिज्जं समत्तं ॥ १७ ॥

॥ अह संजइज्जं अट्ठारहमं अज्झयणं ॥

कम्पिल्ले नयरे राया, उदिण्णबलवाहणे। नामेण संजए नाम, मिगव्वं उवणिग्गए ॥ १ ॥
हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य। पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥
मिए छुहित्ता हयगओ, कम्पिल्लुज्जाण केसरे। भीए सन्ते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥ ३ ॥
अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे। सज्झायज्झाणसंजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ॥ ४ ॥
अप्फोवमण्डवम्मि, झायइ क्खवियासवे। तस्सागए मिगे पासं, वहेइ से नराहिवे ॥ ५ ॥
अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं। हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासई ॥ ६ ॥
अह राया तत्थ संभन्तो, अणगारो मणाहओ। मए उ मन्दपुण्णेणं, रसगिद्धेण घन्तुणा ॥ ७ ॥
आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो निवो। विणएण वन्दए पाए भगवं एत्थ मे खमे ॥ ८ ॥
अह मोणेण सो भगवं, अणगारे झाणमस्सिए। रायाणं न पडिमन्तेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥ ९ ॥
संजओ अहमम्मीति, भगवं वाहराहि मे। कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥ १० ॥
अभओ पत्थिवा तुब्भं, अभयदाया भवाहि य। अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसी ॥ ११ ॥
जया सव्वं परिच्चज्ज, गन्तव्वमवसस्स ते। अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसी ॥ १२ ॥
जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसंपायचंचलं। जत्थ तं मुज्झसी राय पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥ १३ ॥
दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बन्धवा। जीवन्तमणुजीवन्ति, मयं नाणुव्वयन्ति य ॥ १४ ॥

नीहरन्ति मय पुत्ता, पितर परमदुक्खिया । पितरो वि तहा पुत्ते, बन्धू रायं तव चरे ॥ १५ ॥
तओ तेणज्जिए दव्वे, दारे य परिरक्खिए । कीलन्तिऽन्ने नरा राय, हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥ १६ ॥
तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं । कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ॥ १७ ॥
सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अन्तिए । महया संवेगनिव्वेदं, समावन्नो नराहिवो ॥ १८ ॥
संजओ चइउं रज्जं, निक्खन्तो जिणसासणे । गद्दभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अन्तिए ॥ १९ ॥
चिच्चा रट्ठं पव्वइए, खत्तिए परिभासइ । जहा ते दीसई रूवं, पसन्नं ते तहा मणो ॥ २० ॥
किं नामे किं गोत्ते, कस्सट्ठाए व माहणे । कहं पडियरसी बुद्धे, कहं विणीए त्ति बुच्चसी ॥ २१ ॥
संजओ नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोयमो । गद्दभाली ममायरिया, विज्जाचरणपारगा ॥ २२ ॥
किरियं अकिरियं विणयं, अन्नाणं च महामुणी । एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेयन्ने किं पभासई ॥ २३ ॥
इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिव्वुए । विज्जाचरणसंपन्ने, सच्चे सच्चपरक्कमे ॥ २४ ॥
पडन्ति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो । दिव्वं च गइं गच्छन्ति, चरित्ता धम्ममारियं ॥ २५ ॥
मायावुइयमेयं तु, मुसाभासा निरत्थिया । संजममाणो वि अहं, वसामि इरियामि य ॥ २६ ॥
सव्वे ए विइया मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिया । विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पगं ॥ २७ ॥
अहमासि महापाणे, जुइमं वरिससओवमे । जा सा पालिमहापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥ २८ ॥
से चुए बम्भलोगाओ, माणुस्सं भवमागए । अप्पणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ॥ २९ ॥
नाणारुइं च छन्दं च, परिवज्जेज्ज संजए । अणट्ठा जे य सव्वत्था, इय विज्जामणुसंचरे ॥ ३० ॥
पडिक्कमामि पसिणाणं, परमन्तेहिं वा पुणो । अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥ ३१ ॥
जं च मे पुच्छसी काले, सम्मं सुद्धेण चेयसा । ताइं पाउकरे बुद्धे तं नाणं जिणसासणे ॥ ३२ ॥
किरियं च रोयई धीरे, अकिरियं परिवज्जए । दिट्ठीए दिट्ठीसम्पन्ने, धम्मं चरसु दुच्चरं ॥ ३३ ॥
एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थधम्मोवसोहियं । भरहो वि भारहं वासं, चेच्चा कामाइ पव्वए ॥ ३४ ॥
सगरो वि सागरन्तं, भरहवासं नराहिवो । इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाइ परिनिव्वुडे ॥ ३५ ॥
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पव्वज्जमब्भुवगओ, मघवं नाम महाजसो ॥ ३६ ॥
सणंकुमारो मणुस्सिन्दो, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पुत्तं रज्जे ठवेऊण, सो वि राया तवं चरे ॥ ३७ ॥
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । सन्ती सन्तिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३८ ॥
इक्खागरायवसभो, कुन्थू नाम नरीसरो । विक्खायकित्ती भगवं पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३९ ॥
सागरन्तं चइत्ताणं, भरहं नरवरीसरो । अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४० ॥
चइत्ता भारहं वासं, चइत्ता बलवाहणं । चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तवं चरे ॥ ४१ ॥
एगच्छत्तं पसाहित्ता, महिं माणनिसूरणो । हरिसेणो मणुस्सिन्दो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४२ ॥
अन्निओ रायसहस्सेहिं सुपरिच्चाई दमं चरे । जयनामो जिणक्खायं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४३ ॥
दसण्णरज्जं मुदियं, चइत्ताण मुणी चरे । दसण्णभद्दो निक्खन्तो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥ ४४ ॥
नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ । चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ४५ ॥
करकण्डू कलिंगेसु, पंचालेसु य दुम्मुहो । नमी राया विदेहेसु, गन्धारेसु य नग्गई ॥ ४६ ॥
एए नरिन्दवसभा, निक्खन्ता जिणसासणे । पुत्ते रज्जे ठवेऊण, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥ ४७ ॥

सोवीररायवसभो, चइत्ताण मुणी चरे। उदायणो पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४८ ॥
तहेव कासीराया, सेओसच्चपरक्कमे। कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ॥ ४९ ॥
तहेव विजओ राया, अणट्ठाकित्ति पव्वए। रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ॥ ५० ॥
तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा। महब्बलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥ ५१ ॥
कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे। एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥ ५२ ॥
अच्चन्तनियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई। अतरिंसु तरन्तेगे, तरिस्सन्ति अणागया ॥ ५३ ॥
कहिं धीरे अहेऊहिं अत्ताणं परियावसे। सव्वसंगविनिम्मुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ॥ ५४ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ सजइज्जं समत्तं ॥ १८ ॥

॥ मियापुत्तीय एगूणवीसइमं अज्झयणं ॥

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाणसोहिए। राया बलभद्दि त्ति, मिया तस्सग्गमाहिसी ॥ १ ॥
तेसिं पुत्ते बलसिरी, मियापुत्ते त्ति विस्सुए। अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥
नन्दणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं। देवोदोगुन्दगे चेव, निच्चं मुइयमाणसो ॥ ३ ॥
मणिरयणकोट्टिमतले, पासायालोयणट्ठिओ। आलोएइ नगरस्स, चउक्क तियचच्चरे ॥ ४ ॥
अह तत्थ अइच्छन्तं, पासई समणसंजयं। तवनियमसंजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ॥ ५ ॥
तं देहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ। कहिं मन्ने रिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥ ६ ॥
साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे। मोहं गयस्स सन्तस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ ७ ॥
जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए। सरई पोराणियं जाई, सामण्णं च पुरा कयं ॥ ८ ॥
विसएहि अरज्जन्तो, रज्जन्तो संजमम्मि य। अम्मापियरमुवागम्म, इमं वयणमब्बवी ॥ ९ ॥
सुयाणि मे पञ्च महव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु।
निव्विण्णकामो मि महण्णवाउ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ॥ १० ॥
अम्म ताय मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा। पच्छा कडुयविवागा, अणुबन्धदुहावहा ॥ ११ ॥
इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं। असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥ १२ ॥
असासए सरीरम्मि, रइं नोवलभामहं। पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणबुब्बुयसन्निभे ॥ १३ ॥
माणुसत्ते असारम्मि, वाहीरोगाण आलए। जरामरणघत्थम्मि, खणंपि न रमामहं ॥ १४ ॥
जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य। अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसन्ति जन्तवो ॥ १५ ॥
खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बन्धवा। चइत्ताण इमं देहं, गन्तव्वमवसस्स मे ॥ १६ ॥
जह किम्पागफलाणं, परिणामो न सुन्दरो। एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुन्दरो ॥ १७ ॥
अद्धाणं जो महन्तं तु, अप्पाहेओ पवज्जई। गच्छन्तो सो दुही होइ, छुहातण्हाए पीडिओ ॥ १८ ॥
एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं। गच्छन्तो सो दुही होइ, वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥ १९ ॥
अद्धाणं जो महन्तं तु, सपाहेओ पवज्जई। गच्छन्तो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवज्जिओ ॥ २० ॥

एव धम्म पि काऊण, जो गच्छइ पर भव। गच्छन्तो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे ॥ २१ ॥
जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू। सारभण्डाणि नीणेइ, असार अवउज्झइ ॥ २२ ॥
एव लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य। अप्पाण तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥ २३ ॥
त बिन्तम्मापियरो, सामण्ण पुत्त दुच्चर। गुणाण तु सहस्साइ, धारेयव्वाइ भिक्खुणा ॥ २४ ॥
समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे। पाणाइवायविरई, जावज्जीवाए दुक्कर ॥ २५ ॥
निच्चकालप्पमत्तेण, मुसावायविवज्जण। भासियव्व हिय सच्च, निच्चाउत्तेण दुक्कर ॥ २६ ॥
दन्तसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जण। अणवज्जेसणिज्जस्स, गिण्हणा अवि दुक्कर ॥ २७ ॥
विरई अबम्भचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा। उग्ग महव्वय बम्भ, धारेयव्व सुदुक्कर ॥ २८ ॥
धणधन्नपेसवग्गेसु परिग्गहविवज्जण। सव्वारम्भपरिच्चाओ, निम्ममत्त सुदुक्कर ॥ २९ ॥
चउव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा। सन्निहीसचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्कर ॥ ३० ॥
छुहा तण्हा य सीउण्ह दसमसगवेयणा। अक्कोसा दुक्खसेज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥ ३१ ॥
तालणा तज्जणा चेव, वहबन्धपरीसहा। दुक्ख भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥ ३२ ॥
कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो। दुक्ख बम्भवय घोर, धारेउ य महप्पणो ॥ ३३ ॥
सुहोइओ तुम पुत्ता, सुकुमालो सुमज्जिओ। न हु सी पभू तुम पुत्ता, सामण्णमणुपालिया ॥ ३४ ॥
जावज्जीवमविस्सामो गुणाण तु महब्भरो। गुरुओ लोहभारुव्व, जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥ ३५ ॥
आगासे गङ्गसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो। बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ॥ ३६ ॥
वालुयाकवले चेव, निरस्साए उ सजमे। असिधारागमण चेव, दुक्कर चरिउ तवो ॥ ३७ ॥
अही वेगन्तदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त दुक्कर। जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्कर ॥ ३८ ॥
जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउ होइ सुदुक्करा। तहा दुक्कर करेउ जे, तारुण्णे समणत्तण ॥ ३९ ॥
जहा दुक्ख भरेउ जे, होइ वायस्स कोत्थलो। तहा दुक्ख करेउ जे, कीवेण समणत्तण ॥ ४० ॥
जहा तुलाए तोलेउ, दुक्करो मन्दरो गिरी। तहा निहुयनीसक, दुक्कर समणत्तण ॥ ४१ ॥
जहा भुयाहिं तरिउ, दुक्कर रयणायरो। तहा अणुवसन्तेण, दुक्कर दमसागरो ॥ ४२ ॥
भुज माणुस्सए भोगे, पचलक्खणए तुम। भुत्तभोगी तओ जाया, पच्छा धम्म चरिस्ससि ॥ ४३ ॥
सो ब्बि अम्मापियरो, एवमेय जहा फुड। इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचिवि दुक्कर ॥ ४४ ॥
सारीरमाणसा चेव, वेयणाओ अणन्तसो। मए सोढाओ भीमाओ, असइ दुक्खभयाणि य ॥ ४५ ॥
जरामरणकन्तारे, चाउरन्ते भयागरे। मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥ ४६ ॥
जहा इह अगणी उण्हो, एत्तोऽणन्तगुणो तहिं। नरएसु वेयणा उण्हा, अस्साया वेइया मए ॥ ४७ ॥
जहा इह इम सीय, एत्तोऽणन्तगुणो तहिं। नरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए ॥ ४८ ॥
कन्दन्तो कन्दुकुम्भीसु, उड्ढपाओ अहोसिरे। हुयासणे जलन्तम्मि, पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥ ४९ ॥
महादवग्गिसकासे, मरुम्मि वइरवालुए। कलम्बवालुयाए य, दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥ ५० ॥
रसन्तो कन्दुकुम्भीसु, उड्ढ बद्धो अबन्धवो। करवत्तकरकयाईहिं छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥ ५१ ॥
अइतिक्खकण्टगाइण्णे, तुङ्गे सिम्बलिपायवे। खेवियं पासबद्धेण, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्कर ॥ ५२ ॥
महाजन्तेसु उच्छू वा, आरसन्तो सुभेरव। पीडिओ मि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणन्तसो ॥ ५३ ॥

कूवन्तो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य। फाडिओ फालिओ छिन्नो, विफुरन्तो अणेगसो ॥ ५४ ॥
असीहि अयसिवण्णाहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य। छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, ओइण्णो पावकम्मुणा ॥ ५५ ॥
अवसे लोहरहे जुत्तो, जलन्ते समिलाजुए। चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ॥ ५६ ॥
हुयासणे जलन्तम्मि, चियासु महिसो विव। दड्ढो पक्को य अवसो, पावकम्मेहि पाविओ ॥ ५७ ॥
बला संडासतुण्डेहिं, लोहतुण्डेहिं पक्खिहिं। विलुत्तो विलवन्तो हं, ढंकगिद्धेहिऽणन्तसो ॥ ५८ ॥
तण्हाकिलन्तो धावन्तो, पत्तो वेयरणिं नदिं। जलं पाहिं ति चिन्तन्तो, खुरधाराहिं विवाइओ ॥ ५९ ॥
उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं। असिपत्तेहिं पडन्तेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥ ६० ॥
मुग्गरेहिं मुसंढीहिं, सूलेहिं मुसलेहिं य। गया संभग्गगत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥ ६१ ॥
खुरेहिं तिक्खधाराहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य। कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो ॥ ६२ ॥
पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अहं। वाहिओ बद्धरुद्धो वा, बहू चेव विवाइओ ॥ ६३ ॥
गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं। उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणन्तसो ॥ ६४ ॥
वीदंसएहि जालेहिं लेप्पाहिं सउणो विव। गहिओ लग्गो बद्धो य, मारिओ य अणन्तसो ॥ ६५ ॥
कुहाडफरसुमाईहिं, वड्ढईहिं दुमो विव। कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणन्तसो ॥ ६६ ॥
चवेडमुट्ठिमाईहिं, कुमारेहिं अयं पिव। ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ य अणन्तसो ॥ ६७ ॥
तत्ताइं तम्बलोहाइं, तउयाइं सीसयाणि य। पाइओ कलकलन्ताइं, आरसन्तो सुभेरवं ॥ ६८ ॥
तुहं पियाइं मंसाइं, खण्डाइं सोल्लगाणि य। खाविओ मि समंसाइं, अग्गिवण्णाइंऽणेगसो ॥ ६९ ॥
तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य। पाइओ मि जलन्तीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥ ७० ॥
निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य। परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेदिता मए ॥ ७१ ॥
तिव्वचण्डप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा। महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेदिता मए ॥ ७२ ॥
जारिसा माणुसे लोए, ताया दीसन्ति वेयणा। एत्तो अणन्तगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥ ७३ ॥
सव्वभवेसु अस्साया, वेयणा वेदिता मए। निमेसन्तरमित्तं पि, जं साता नत्थि वेयणा ॥ ७४ ॥
तं बिन्तम्मापियरो, छन्देणं पुत्त पव्वया। नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥ ७५ ॥
सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं। पडिकम्मं को कुणई, अरण्णे मियपक्खिणं ॥ ७६ ॥
एगब्भूए अरण्णे व, जहा उ चरई मिगे। एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥ ७७ ॥
जया मिगस्स आयंको, महारण्णम्मि जायई। अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि, को णं ताहे तिगिच्छई ॥ ७८ ॥
को वा से ओसहं देइ, को वा से पुच्छई सुहं। को से भत्तं च पाणं वा, आहरित्तु पणामए ॥ ७९ ॥
जया से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं। भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य ॥ ८० ॥
खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य। मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं ॥ ८१ ॥
एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए। मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमई दिसं ॥ ८२ ॥

जहा मिगे एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोयरे य।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे, नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ॥ ॥ ८३ ॥

मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता जहासुहं। अम्मापिईहिऽणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तहा ॥ ८४ ॥
मियचारियं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं। तुब्भेहिं अब्भणुन्नाओ, गच्छ पुत्त जहासुहं ॥ ८५ ॥

एव सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविह। ममत्त छिन्दई ताहे, महानागो व्व कचुय ॥ ८६ ॥
इड्ढी वित्त च मित्ते य, पुत्तदार च नायओ। रेणुय व पडे लग्ग, निधुणित्ताण निग्गओ ॥ ८७ ॥
पचमहव्वयजुत्तो, पचहि समिओ तिगुत्तिगुत्तो य। सब्भिन्तरबाहिरओ, तवोकम्ममि उज्जुओ ॥ ८८ ॥
निम्ममो निरहकारो, निस्सगो चत्तगारवो। समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥ ८९ ॥
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा। समो निन्दापससासु, तहा माणावमाणओ ॥ ९० ॥
गारवेसु कसाएसु, दण्डसल्लभएसु य। नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अबन्धणो ॥ ९१ ॥
अणिस्सिओ इह लोए, परलोए अणिस्सिओ। वासीचन्दणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥ ९२ ॥
अप्पसत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवे। अज्झप्पज्झाणजोगेहिं, पसत्थदमसासणे ॥ ९३ ॥
एव नाणेण चरणेण, दसणेण तवेण य। भावणाहि य सुद्धाहिं, सम्म भावेत्तु अप्पय ॥ ९४ ॥
बहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया। मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तर ॥ ९५ ॥
एवं करन्ति सबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा। विणिअट्टन्ति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिसी ॥ ९६ ॥

महापभावस्स महाजसस्स, मियापुत्तस्स निसम्म भासिय।
तवप्पहाण चरिय च उत्तम, गइप्पहाण च तिलोगविस्सुत ॥ ॥ ९७ ॥
वियाणिया दुक्खविवद्धण धण, ममत्तबन्ध च महाभयावह।
सुहावह धम्मधुर अणुत्तर, धारेज्ज निव्वाणगुणावह मह ॥ ॥ ९८ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ मियापुत्तीय समत्त ॥ १९ ॥

॥ अह महानियण्ठिज्जं वीसइमं अज्झयणं ॥

सिद्धाण नमो किच्चा, सजयाण च भावओ। अत्थधम्मगइ तच्च अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥
पभूयरयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो। विहारजत्त निज्जाओ, मण्डिकुच्छिंसि चेइए ॥ २ ॥
नाणादुमलयाइण्ण, नाणापक्खिनिसेविय। नाणाकुसुमसछन्न, उज्जाण नन्दणोवम ॥ ३ ॥
तत्थ सो पासई साहु, सजय सुसमाहिय। निसन्न रुक्खमूलम्मि, सुकुमाल सुहोइय ॥ ४ ॥
तस्स रूव तु पासित्ता, राइणो तम्मि सजए। अच्चन्तपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ ॥ ५ ॥
अहो वण्णो अहो रूव, अहो अज्जस्स सोमया। अहो खन्ती अहो मुत्ती, अहो भोगे असगया ॥ ६ ॥
तस्स पाए उ वन्दित्ता, काऊण य पयाहिण। नाइदूरमणासन्ने, पजली पडिपुच्छई ॥ ७ ॥
तरुणो सि अज्जो पव्वइओ, भोगकालम्मि सजया। उवट्ठिओ सि सामण्णे, एयमट्ठ सुणेमि ता ॥ ८ ॥
अणाहोमि महाराय, नाहो मज्झ न विज्जई। अणुकम्पग सुहिं वावि, कचि नाभिसमेमह ॥ ९ ॥
तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो। एव ते इड्ढिमन्तस्स, कह नाहो न विज्जई ॥ १० ॥
होमि नाहो भयन्ताण, भोगे भुजाहि सजया। मित्तनाईपरिवुडो माणुस्स खु सुदुल्लह ॥ ११ ॥
अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया मगहाहिवा। अप्पणा अणाहो सन्तो, कस्स नाहो भविस्ससि ॥ १२ ॥
एव वुत्तो नरिन्दो सो, सुसभन्तो सुविम्हिओ। वयण अस्सुयपुव्व, साहुणा विम्हयन्निओ ॥ १३ ॥
अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुर [illegible] माणुसे भोगे, आणा इस्सरिय च मे [illegible]

एरिसे सम्पयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए। कह अणाहो भवइ, मा हु भन्ते मुसं वए ॥ १५ ॥
न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा। जहा अणाहो भवई, सणाहो वा नराहिवा ॥ १६ ॥
सुणेह मे महाराय, अव्वक्खित्तेण चेयसा। जहा अणाहो भवई, जहा मेयं पवत्तियं ॥ १७ ॥
कोसम्बी नाम नयरी, पुराण पुरभेयणी। तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूयधणसंचओ ॥ १८ ॥
पढमे वए महाराय, अउला मे अच्छिवेयणा। अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा ॥ १९ ॥
सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविवरन्तरे। आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेयणा ॥ २० ॥
तियं मे अन्तरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडइ। इन्दासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥ २१ ॥
उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जामन्ततिगिच्छया। अबीया सत्थकुसला, मन्तमूलविसारया ॥ २२ ॥
ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति, चाउप्पायं जहाहियं। न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥ २३ ॥
पिया मे सव्वसारंपि, दिज्जाहि मम कारणा। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ २४ ॥
माया य मे महाराय, पुत्तसोगदुहट्टिया। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ २५ ॥
भायरो मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा। न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥ २६ ॥
भइणीओ मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा। न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया। २७ ॥
भारिया मे महाराय, अणुरत्ता अणुव्वया। अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचई ॥ २८ ॥
अन्नं च पाणं ण्हाणं च, गन्धमल्लविलेवणं। मए नायमणायं वा, सा बाला नेव भुंजई ॥ २९ ॥
खणं पि मे महाराय, पासाओ मे न फिट्टई। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ ३० ॥
तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो। वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणन्तए ॥ ३१ ॥
सइं च जइ मुच्चेज्जा, वेयणा विउला इओ। खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वए अणगारियं ॥ ३२ ॥
एवं च चिन्तइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा। परियत्तन्तीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥ ३३ ॥
तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ताण बन्धवे। खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वइओऽणगारियं ॥ ३४ ॥
तो हं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य। सव्वेसिं चेव भूयाणं, तसाण थावराण य ॥ ३५ ॥
अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली। अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नन्दणं वणं ॥ ३६ ॥
अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुक्खाण य सुहाण य। अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥ ३७ ॥

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा, तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि।
नियण्ठधम्मं लहीयाण वी जहा, सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा ॥ ३८ ॥
जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं, सम्मं च नो फासयई पमाया।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिन्दइ बन्धणं से ॥ ३९ ॥
आउत्तया जस्स न अत्थि काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए।
आयाणनिक्खेवदुगुंछणाए, न वीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥ ४० ॥
चिरं पि से मुण्डरुई भवित्ता, अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु संपराए ॥ ४१ ॥
पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे, अयन्तिए कूडकहावणे वा।
राढामणी वेरुलियप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु ॥ ४२ ॥

कुसीललिंगं इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय वूहइत्ता ।
असंजए संजयलप्पमाणे, विणिग्घायमागच्छइ से चिरंपि ॥ ४३ ॥
विसं तु पीयं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
एमो वि धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ॥ ४४ ॥
जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे, निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
कुहेडविज्जासवदारजीवी, न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥ ४५ ॥
तम तमेणेव उ से असीले, सया दुही विप्परियासुवेइ ।
संधावई नरगतिरिक्खजोणिं, मोणं विराहेत्तु असाहुरूवे ॥ ४६ ॥
उद्देसियं कीयगडं नियागं, न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता, इत्तो चुए गच्छइ कट्टु पावं ॥ ४७ ॥
न तं अरी कंठछेत्ता करेइ, जं से करे अप्पणिया दुरप्पया ।
से नाहई मच्चुमुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥ ४८ ॥
निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स, जे उत्तमट्ठं विवज्जासमेइ ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए, दुहओ वि से झिज्झइ तत्थ लोए ॥ ४९ ॥
एमेव हा छन्दकुसीलरूवे, मग्गं विराहेत्तु जिणुत्तमाणं ।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा, निरट्ठसोया परियावमेइ ॥ ५० ॥
सोच्चाण मेहावि सुभासियं इमं, अणुसासणं नाणगुणोववेयं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं, महानियण्ठाण वए पहेणं ॥ ५१ ॥
चरित्तमायारगुणन्निए तओ, अणुत्तरं संजम पालियाणं ।
निरासवे संखवियाण कम्मं, उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥ ५२ ॥
एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे, महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं, से काहए महया वित्थरेणं ॥ ५३ ॥
तुट्ठो य सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली ।
अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥ ५४ ॥
तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्स जम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ।
तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य, जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ॥ ५५ ॥
तं सि नाहो अणाहाणं, सव्वभूयाण संजया ।
खामेमि ते महाभाग, इच्छामि अणुसासिउं ॥ ५६ ॥
पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाणविग्घाओ जो कओ ।
निमन्तिया य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेहि मे ॥ ५७ ॥
एवं थुणित्ताण स रायसीहो, अणगारसीहं परमाइ भत्तीए ।
सओरोहो सपरियणो सबन्धवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥ ५८ ॥
ऊससियरोमकूवो, काऊण य पयाहिणं ।

अभिवन्दिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिवो ॥ ५९ ॥
इयरो वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
विहग इव विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥ ६० ॥

त्ति बेमि ॥ इअ महानियण्ठिज्जं समत्तं ॥

॥ अह समुद्दपालीयं एगवीसइमं अज्झयणं ॥

चम्पाए पालिए नाम, सावए आसि वाणिए। महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥ १ ॥
निग्गन्थे पावयणे, सावए से वि कोविए। पोएण ववहरन्ते, पिहुण्डं नगरमागए ॥ २ ॥
पिहुण्डे ववहरन्तस्स, वाणिओ देइ धूयरं। तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ॥ ३ ॥
अह पालियस्स घरिणी, समुद्दम्मि पसवई। अह बालए तहिं जाए, समुद्दपालि त्ति नामए ॥ ४ ॥
खेमेण आगए चम्पं, सावए वाणिए घरं। संवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥ ५ ॥
बावत्तरी कलाओ य, सिक्खई नीइकोविए। जोव्वणेण य संपन्ने, सुरूवे पियदंसणे ॥ ६ ॥
तस्स रुववइं भज्जं, पिया आणेइ रूविणिं। पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुन्दओ जहा ॥ ७ ॥
अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ। वज्झमण्डणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥ ८ ॥
तं पासिऊण संवेगं, समुद्दपालो इणमब्बवी। अहोऽसुभाण कम्माणं, निज्जाणं पावगं इमं ॥ ९ ॥
संबुद्धो सो तहिं भगवं, परमसंवेगमागओ। आपुच्छऽम्मापियरो, पव्वए अणगारियं ॥ १० ॥

जहित्तु सग्गन्थमहाकिलेसं, महन्तमोहं कसिणं भयावहं।
परियायधम्मं चभिरोयएज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥ ११ ॥
अहिंससच्चं च अतेणगं च, तत्तो य बम्भं अपरिग्गहं च।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि, चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विदू ॥ १२ ॥
सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी, खन्तिक्खमे संजयबम्भयारी।
सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो, चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥ १३ ॥
कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे, बलाबलं जाणिय अप्पणो य।
सीहो व सद्देण न सन्तसेज्जा, वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥ १४ ॥
उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा, पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा, न यावि पूयं गरहं च संजए ॥ १५ ॥
अणेगछन्दामिह माणवेहिं, जे भावओ संपगरेइ भिक्खू।
भयभेरवा तत्थ उइन्ति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥
परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू, संगामसीसे इव नागराया ॥ १७ ॥
सीओसिणा दंसमसा य फासा, आयंका विविहा फुसन्ति देहं।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा, रयाइं खेवेज्ज पुरे कयाइं ॥ १८ ॥

पहाय रागं च तहेव दोसं, मोहं च भिक्खू सततं वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥ १९ ॥
अणुन्नए नावणए महेसी, न यावि पूयं गरहं च संजए ।
स उज्जभावं पडिवज्ज, संजए, निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥ २० ॥
अरइरइसहे पहीणसंथवे, विरए आयहिए पहाणवं ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई, छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥ २१ ॥
विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई, निरोवलेवाइ असंथडाइं ।
इसीहिं चिण्णाइ महायसेहिं, काएण फासेज्ज परीसहाइं ॥ २२ ॥
सन्नाणनाणोवगए महेसी, अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं ।
अणुत्तरे नाणधरे जससी, ओभासई सूरिए वन्तलिक्खे ॥ २३ ॥
दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं, निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्दं व महाभवोघं, समुद्दपाले अपुणागमं गए ॥ २४ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ समुद्दपालीयं समत्तं ॥

॥ अह रहनेमिज्जं बावीसइमं अज्झयणं ॥

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्डिए । वसुदेवु त्ति नामेण, रायलक्खणसंजुए ॥ १ ॥
तस्स भज्जा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा । तासिं दोण्हं दुवे पुत्ता, इट्ठा रामकेसवा ॥ २ ॥
सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्डिए । समुद्दविजए नामं, रायलक्खणसंजुए ॥ ३ ॥
तस्स भज्जा सिवा नाम, तीसे पुत्तो महायसो । भगवं अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥
सो ऽरिट्ठनेमिनामो उ, लक्खणस्सरसंजुओ । अट्ठसहस्सलक्खणधरो, गोयमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥
वज्जरिसहसंघयणो, समचउरंसो झसोयरो । तस्स राइमईकन्नं, भज्जं जायइ केसवो ॥ ६ ॥
अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहणी । सव्वलक्खणसंपन्ना, विज्जुसोयामणिप्पभा ॥ ७ ॥
अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्डियं । इहागच्छउ कुमारो, जा से कन्नं ददामि हं ॥ ८ ॥
सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कयकोउयमंगलो । दिव्वजुयलपरिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥ ९ ॥
मत्तं च गंधहत्थिं, वासुदेवस्स जेट्ठगं । आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणि जहा ॥ १० ॥
अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिए । दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥ ११ ॥
चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कमं । तुरियाण संनिनाएण, दिव्वेण गगणं फुसे ॥ १२ ॥
एयारिसाए इड्ढीए, जुत्तीए उत्तमाइ य । नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥ १३ ॥
अह सो तत्थ निज्जन्तो, दिस्स पाणे भयद्दुए । वाडेहिं पंजरेहिं च, संनिरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥
जीवियन्तं तु संपत्ते, मंसट्ठा भक्खियव्वए । पासेत्ता से महापन्ने, सारहिं इणमब्बवी ॥ १५ ॥
कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो । वाडेहिं पंजरेहिं च, संनिरुद्धा य अच्छहिं ॥ १६ ॥
अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ [illegible] तुज्झ विवाहकज्जम्मि, भोयावेउं [illegible] ॥

सोऊण तस्स वयण, बहुपाणिविणासण । चिन्तेइ से महापन्नो, साणुक्कोसे जिए हिऊ ॥ १८ ॥
जइ मज्झ कारणा एए, हम्मन्ति सुबहू जिया । न मे एय तु निस्सेस, परलोगे भविस्सई ॥ १९ ॥
सो कुण्डलाण जुयल, सुत्तग च महायसो । आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ॥ २० ॥
मणपरिणामे य कए, देवा य जहोइय समोइण्णा । सव्वड्ढीइ सपरिसा, निक्खमण तस्स काउ जे ॥ २१ ॥
देवमणुस्सपरिवुडो सीयारयण तओ समारूढो, निक्खिमय वारगाओ, रेवयम्मि ट्ठिओ भगव ॥ २२ ॥
उज्जाण सपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ । साहस्सीइ परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥ २३ ॥
अह से सुगन्धगन्धीए, तुरिय मउकुचिए । सयमेव लुचई केसे, पचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥ २४ ॥
वासुदेवो य ण भणइ लुत्तकेस जिइन्दिय । इच्छियमणोरह तुरिय, पावसू त दमीसरा ॥ २५ ॥
नाणेण दसणेण च, चरित्तेण तहेव य । खन्तीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ॥ २६ ॥
एव ते रामकेसवा, दसारा य बहू जणा । अरिट्ठणेमिं वन्दित्ता, अभिगया बारगापुरिं ॥ २७ ॥
सोऊण रायकन्ना, पव्वज्ज सा जिणस्स उ । नीहासा य निराणन्दा, सोगेण उ समुत्थिया ॥ २८ ॥
राईमई विचिन्तेइ, धिरत्थु मम जीविय । जा ह तेण परिचत्ता, सेय पव्वइउ मम ॥ २९ ॥
अह सा भमरसन्निभे, कुच्चफणगसाहिए । सयमेव लुचई केसे, धिइमन्ता ववस्सिया ॥ ३० ॥
वासुदेवो य ण भणइ, लुत्तकेस जिइन्दिय । ससारसागर घोर, तर कन्ने लहु लहु ॥ ३१ ॥
सा पव्वइया सन्ती, पव्वावेसी तहिं बहु सयण परियण चेव, सीलवन्ता बहुस्सुया ॥ ३२ ॥
गिरिं रेवतय जन्ती, वासेणुल्ला उ अन्तरा । वासन्ते अन्धयारम्मि, अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥ ३३ ॥
चीवराइ विसारन्ती, जहा जाय त्ति पासिया । रहनेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥ ३४ ॥
भीया य सा तहिं दट्ठु, एगन्ते सजय तय । बाहाहिं काउ सगोप्फ, वेवमाणी निसीयई ॥ ३५ ॥
अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयगओ । भीय पवेविय दट्ठु, इम वक्क उदाहरे ॥ ३६ ॥
रहनेमी अह भद्दे, सुरूवे चारुभासिणी । मम भयाहि सुयणु, न ते पीला भविस्सई ॥ ३७ ॥
एहि ता भुजिमो भोए, माणुस्स खु सुदुल्लह । भुत्तभोगी पुणो पच्छा, जिणमग्ग चरिस्समो ॥ ३८ ॥
दट्ठुण रहनेमिं त, भग्गुज्जोयपराजिय । राईमई असम्भन्ता, अप्पाण सवरे तहिं ॥ ३९ ॥
अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिया नियमव्वए । जाई कुल च सील च, रक्खमाणी तय वए ॥ ४० ॥
जइ सि रूवेण वेसमणो, ललिएण नलकुव्वरो । तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्ख पुरदरो ॥ ४१ ॥
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो त जीवियकारणा । वन्त इच्छसि आवाउ, सेय ते मरण भवे ॥ ४२ ॥
अह च भोगरायस्स, त च सि अन्धगवण्हिणो । मा कुले गन्धणा होमो, सजम निहुओ चर ॥ ४३ ॥
जइ त काहिसि भाव, जा जा दच्छसि नारिओ । वायाविद्धो व्व हढो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ४४ ॥
गोवालो भण्डवालो वा, जहा तद्दव्वणिस्सरो । एव अणिस्सरो त पि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥ ४५ ॥
तीसे सो वयण सोच्चा, सजयाए सुभासिय । अकुसेण जहा नागो, धम्मे सपडिवाइओ ॥ ४६ ॥
मणगुत्तो वायगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्दिए । सामण्ण निच्चल फासे, जावज्जीव दढव्वओ ॥ ४७ ॥
उग्ग तव चरित्ताण, जाया दोण्णि वि केवली । सव्व कम्म खवित्ताण, सिद्धिं पत्ता अणुत्तर ॥ ४८ ॥
एव करन्ति सबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा । विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो ॥ ४९ ॥

त्ति बेमि ॥ रहनेमिज्ज समत्त ॥

॥ अह केसिगोयमिज्ज तेवीसइम अज्झयण ॥

जिणे पासि त्ति नामेण, अरहा लोगपूइओ । संबुद्धप्पा य सव्वन्नू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥ १ ॥
तस्स लोगपदीवस्स, आसि सीसे महायसे । केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारगे ॥ २ ॥
ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघसमाउले । गामाणुगामं रीयन्ते, सावत्थिं पुरमागए ॥ ३ ॥
तिंदुयं नाम उज्जाणं, तम्मि नगरमण्डले । फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ४ ॥
अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे । भगवं वद्धमाणि त्ति, सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥ ५ ॥
तस्स लोगपदीवस्स आसि सीसे महायसे । भगवं गोयमे नाम, विज्जाचरणपारए ॥ ६ ॥
बारसंगविऊ बुद्धे, सीससंघसमाउले । गामाणुगामं रीयन्ते, से वि सावत्थिमागए ॥ ७ ॥
कोट्ठगं नाम उज्जाणं, तम्मी नगरमण्डले । फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ८ ॥
केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे । उभओ वि तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिया ॥ ९ ॥
उभओ सीससंघाणं, संजयाणं तवस्सिणं । तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना, गुणवन्ताण ताइणं ॥ १० ॥
केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो । आयारधम्मपणिही, इमा वा सा व केरिसी ॥ ११ ॥
चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥ १२ ॥
अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो सन्तरुत्तरो । एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ॥ १३ ॥
अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पवितक्कियं । समागमे कयमई, उभओ केसिगोयमा ॥ १४ ॥
गोयमे पडिरूवन्नू, सीससंघसमाउले । जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो, तिन्दुयं वणमागओ ॥ १५ ॥
केसी कुमारसमणे, गोयमं दिस्समागयं । पडिरूवं पडिवत्तिं सम्मं संपडिवज्जई ॥ १६ ॥
पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि य । गोयमस्स निसेज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥ १७ ॥
केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे । उभओ निसण्णा सोहन्ति, चन्दसूरसमप्पभा ॥ १८ ॥
समागया बहू तत्थ, पासण्डा कोउगा मिया । गिहत्थाण अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥ १९ ॥
देवदाणवगन्धव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा । अदिस्साण च भूयाण, आसी तत्थ समागमो ॥ २० ॥
पुच्छामि ते महाभाग, केसी गोयममब्बवी । तओ केसिं बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ २१ ॥
पुच्छ भन्ते जहिच्छं ते, केसिं गोयममब्बवी । तओ केसी अणुन्नाए, गोयमं इणमब्बवी ॥ २२ ॥
चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥ २३ ॥
एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं । धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ॥ २४ ॥
तओ केसिं बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी । पन्ना समिक्खए धम्मतत्तं तत्तविणिच्छियं ॥ २५ ॥
पुरिमा उज्जुजडा उ, वक्कजडा य पच्छिमा । मज्झिमा उज्जुपन्ना उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥ २६ ॥
पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ, चरिमाणं दुरणुपालओ । कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसोज्झो सुपालओ ॥ २७ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ २८ ॥
अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो सन्तरुत्तरो । देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महाजसा ॥ २९ ॥
एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं । लिंगे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ॥ ३० ॥

केसिमेवं बुवाणं तु, गोयमो इणमब्बवी। विन्नाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छियं ॥ ३१ ॥
पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पणं। जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंगपओयणं ॥ ३२ ॥
अह भवे पइन्ना उ, मोक्खसब्भूयसाहणा। नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं चेव निच्छए ॥ ३३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ३४ ॥
अणेगाण सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोयमा। ते य ते अहिगच्छन्ति, कहं ते निज्जिया तुमे ॥ ३५ ॥
एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस। दसहा उ जिणित्ताणं, सव्वसत्तू जिणामहं ॥ ३६ ॥
सत्तू य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥
एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इन्दियाणि य। ते जिणित्तु जहानायं, विहरामि अहं मुणी ॥ ३८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो, अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ३९ ॥
दीसन्ति बहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो। मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं विहरसी मुणी ॥ ४० ॥
ते पासे सव्वसो छित्ता, निहन्तूण उवायओ। मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं विहरामि अहं मुणी ॥ ४१ ॥
पासा य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्बवी। केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ४२ ॥
रागद्दोसादओ तिव्वा, नेहपासा भयंकरा। ते छिन्दित्ता जहानायं, विहरामि जहक्कमं ॥ ४३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ४४ ॥
अन्तोहियसंभूया, लया चिट्ठइ गोयमा। फलेइ विसभक्खीणि, सा उ उद्धरिया कहं ॥ ४५ ॥
तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं। विहरामि जहानायं, मुक्को मि विसभक्खणं ॥ ४६ ॥
लया य इइ का वुत्ता, केसी गोयममब्बवी। केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ४७ ॥
भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया। तमुद्धित्ता जहानायं, विहरामि जहासुहं ॥ ४८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो, मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ४९ ॥
संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा। जे डहन्ति सरीरत्थे, कहं विज्झाविया तुमे ॥ ५० ॥
महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं। सिंचामि सययं देहं सित्ता नो व डहन्ति मे ॥ ५१ ॥
अग्गी य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्बवी। केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥
कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुयसीलतवो जलं। सुयधाराभिहया सन्ता, भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥ ५३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ५४ ॥
अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई। जंसि गोयममारूढो, कहं तेण न हीरसि ॥ ५५ ॥
पधावन्तं निगिण्हामि सुयरस्सीसमाहियं। न मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवज्जई ॥ ५६ ॥
आसे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ५७ ॥
मणो साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई। तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कन्थगं ॥ ५८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ५९ ॥
कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासन्ति जन्तुणो। अद्धाणे कहं वट्टन्ते, तं न नाससि गोयमा ॥ ६० ॥
जे य मग्गेण गच्छन्ति, जे य उम्मग्गपट्ठिया। ते सव्वे वेइया मज्झं, तो न नस्सामहं मुणी ॥ ६१ ॥
मग्गे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ६२ ॥
कुप्पवयणपासण्डी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिया। सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥ ६३ ॥

साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ६४ ॥
महाउदगवेगेण, वुज्झमाणाण पाणिण। सरण गई पइट्ठा य, दीव क मन्नसी मुणी ॥ ६५ ॥
अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ। महाउदगवेगस्स, गई तत्थ न विज्जई ॥ ६६ ॥
दीव य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव बुवंत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ६७ ॥
जरामरणवेगेण, वुज्झमाणाण पाणिण। धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तम ॥ ६८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ६९ ॥
अण्णवसि महोहसि, नावा विपरिधावई। जसि गोयममारूढो, कह पार गमिस्ससि ॥ ७० ॥
जा उ सस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी। जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥
नावा य इइ का वुत्ता, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ७२ ॥
सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ। ससारो अण्णवो वुत्तो, ज तरति महेसिणो ॥ ७३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ७४ ॥
अन्धयारे तमे घोरे, चिट्ठन्ति पाणिणो बहू। को करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥ ७५ ॥
उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोयपभकरो। सो करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥ ७६ ॥
भाणू य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ७७ ॥
उग्गओ खीणससारो, सव्वन्नू जिणभक्खरो। सो करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥ ७८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ७९ ॥
सारीरमाणसे दुक्खे, बज्झमाणाण पाणिण। खेम सिवमणाबाह, ठाण किं मन्नसी मुणी ॥ ८० ॥
अत्थि एग धुव ठाण, लोगग्गम्मि दुरारुह। जत्थ नत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥ ८१ ॥
ठाणे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ८२ ॥
निव्वाण ति अबाह ति, सिद्धी लोगग्गमेव य। खेम सिव अणाबाह, ज चरति महेसिणो ॥ ८३ ॥
त ठाण सासय वास, लोयग्गम्मि दुरारुह। ज सपत्ता न सोयन्ति, भवोहन्तकरा मुणी ॥ ८४ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। नमो ते ससयातीत, सव्वसुत्तमहोयही ॥ ८५ ॥
एव तु ससए छिन्ने, केसी घोरपरक्कमे। अभिवन्दित्ता सिरसा, गोयम तु महायस ॥ ८६ ॥
पचमहव्वयधम्म, पडिवज्जइ भावओ। पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥ ८७ ॥
केसीगोयमओ निच्च, तम्मि आसि समागमे। सुयसीलसमुक्करिसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥ ८८ ॥
तोसिया परिसा सव्वा, सम्मग्ग समुवट्ठिया। सथुया ते पसीयन्तु भयव केसिगोयमे ॥ ८९ ॥

त्ति बेमि ॥ केसिगोयमिज्ज समत्त ॥ २३ ॥

॥ अह समिईओ चउवीसइम अज्झयण ॥

अट्ठ पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य । पचेव य समिइओ, तओ गुत्तीउ आहीया ॥ १ ॥
इरियाभासेसणादाणे, उच्चारे समिई इय । मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ती य अट्ठमा ॥ २ ॥
एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया । दुवालसग जिणक्खाय, माय जत्थ उ पवयण ॥ ३ ॥
आलम्बणेण कालेण, मग्गेण जयणाय य । चउकारणपरिसुद्ध, सजए इरिय रिए ॥ ४ ॥
तत्थ आलम्बण नाण दसण चरण तहा । काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥ ५ ॥
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा । जयणा चउव्विहा वुत्ता, त मे कित्तयओ सुण ॥ ६ ॥
दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्त च खेत्तओ । कालओ जाव रीइज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥ ७ ॥
इन्दियत्थे विवज्जित्ता, सज्झाय चेव पचहा । तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रिय रिए ॥ ८ ॥
कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्तया । हासे भए मोहरिए, विकहासु तहेव य ॥ ९ ॥
एयाइ अट्ठ ठाणाइ, परिवज्जित्तु सजए । असावज्ज मिय काले, भास भासिज्ज पन्नव ॥ १० ॥
गवेसणाए गहणे य, परिभोगेसणाय य । आहारोवहिसेज्जाए, एए तिन्नि विसोहए ॥ ११ ॥
उग्गमुप्पायण पढमे, बीए सोहेज्ज एसण । परिभोयम्मि चउक्क, विसोहेज्ज जय जई ॥ १२ ॥
ओहोवहोवग्गहिय, भण्डग दुविह मुणी । गिण्हन्तो निक्खिवन्तो वा, पउजेज्ज इम विहिं ॥ १३ ॥
चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जेज्ज जय जई । आइए निक्खिवेज्जा वा, दुहओ वि समिए सया ॥ १४ ॥
उच्चार पासवण, खेल सिंघाणजल्लिय । आहार उवहिं देह, अन्न वावि तहाविह ॥ १५ ॥
अणावायमसलोए, अणावाए चेव होइ सलोए । आवायमसलोए, आवाए चेव सलोए ॥ १६ ॥
अणावायमसलोए, परस्सणुवघाइए । समे अज्झुसिरे यावि, अचिरकालकयम्मि य ॥ १७ ॥
वित्थिण्णे दूरमोगाढे, नासन्ने बिलवज्जिए । तसपाणबीयरहिए, उच्चाराईणि वोसिरे ॥ १८ ॥
एयाओ पच समिईओ, समासेण वियाहिया । एत्तो य तओ गुत्तीओ, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥ १९ ॥
सच्चा तहेव मोसा य, सच्चमोसा तहेव य । चउत्थी असच्चमोसा य, मणगुत्तीओ चउव्विहा ॥ २० ॥
सरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तहेव य । मण पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जय जई ॥ २१ ॥
सच्चा तहेव मोसा य, सच्चमोसा तहेव य । चउत्थी असच्चमोसा य, वइगुत्ती चउव्विहा ॥ २२ ॥
सरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तहेव य । वय पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जय जई ॥ २३ ॥
ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे । उल्लघणपल्लघणे, इन्दियाण य जुजणे ॥ २४ ॥
सरम्भसमारम्भे, आरम्भम्मि तहेव य । काय पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जय जई ॥ २५ ॥
एयाओ पच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे । गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ॥ २६ ॥
एया पवयणमाया, जे सम्म आयरे मुणी । खिप्प सव्वससारा, विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥ २७

त्ति बेमि ॥ इअ समिईओ समत्ताओ

॥ अह जन्नइज्ज पञ्चवीसइम अज्झयण ॥

माहणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो । जायाई जमजन्नम्मि, जयघोसि त्ति नामओ ॥ १ ॥
इन्दियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी । गामाणुग्गाम रीयते, पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥ २ ॥
वाणारसीए बहिया, उज्जाणम्मि मणोरमे । फासुए सेज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ३ ॥
अह तेणेव कालेण, पुरीए तत्थ माहणे । विजयघोसि त्ति नामेण, जन्न जयइ वेयवी ॥ ४ ॥
अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे । विजयघोसस्स जन्नम्मि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥ ५ ॥
समुवट्ठियं तहिं सन्तं, जायगो पडिसेहिए । न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥ ६ ॥
जे य वेयविऊ विप्पा, जन्नट्ठा य जे दिया । जोइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥ ७ ॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य । तेसिं अन्नमिणं देयं, भो भिक्खू सव्वकामियं ॥ ८ ॥
सो तत्थ एव पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी । न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो, उत्तमट्ठगवेसओ ॥ ९ ॥
नन्नट्ठं पाणहेउं वा, नवि निव्वाहणाय वा । तेसिं विमोक्खणट्ठाए, इणं वयणमब्बवी ॥ १० ॥
नवि जाणसि वेयमुहं, नवि जन्नाण जं मुहं । नक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं ॥ ११ ॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य । न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥ १२ ॥
तस्सक्खेवपमोक्खं तु, अचयन्तो तहिं दिओ । सपरिसो पजली होउ, पुच्छई तं महामुणिं ॥ १३ ॥
वेयाण च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं । नक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण वा मुहं ॥ १४ ॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य । एयं मे संसयं सव्वं, साहू कहसु पुच्छिओ ॥ १५ ॥
अग्गिहुत्तमुहा वेया, जन्नट्ठी वेयसा मुहं । नक्खत्ताण मुहं चन्दो, धम्माण कासवो मुहं ॥ १६ ॥
जहा चन्दं गहाईया, चिट्ठन्ती पजलीउडा । वन्दमाणा नमसन्ता, उत्तमं मणहारिणो ॥ १७ ॥
अजाणगा जन्नवाई, विज्जामाहणसंपया । गूढा सज्झायतवसा, भासच्छन्ना इवग्गिणो ॥ १८ ॥
जो लोए बम्भणो वुत्तो, अग्गीव महिओ जहा । सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ॥ १९ ॥
जो न सज्जइ आगन्तुं, पव्वयन्तो न सोयइ । रमइ अज्जवयणम्मि, तं वयं बूम माहणं ॥ २० ॥
जायरूवं जहामट्ठं, निद्धन्तमलपावगं । रागदोसभयाईयं, तं वयं बूम माहणं ॥ २१ ॥
तवस्सियं किसं दन्तं, अवचियमंससोणियं । सुव्वयं पत्तनिव्वाणं, तं वयं बूम माहणं ॥ २२ ॥
तसपाणे वियाणेत्ता, संगहेण य थावरे । जो न हिंसइ तिविहेण, तं वयं बूम माहणं ॥ २३ ॥
कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया । मुसं न वयई जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥ २४ ॥
चित्तमन्तमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं । न गिण्हाइ अदत्तं जे, तं वयं बूम माहणं ॥ २५ ॥
दिव्वमाणुसतेरिच्छं, जो न सेवइ मेहुणं । मणसा कायवक्केणं, तं वयं बूम माहणं ॥ २६ ॥
जहा पोमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा । एवं अलित्तं कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥ २७ ॥
अलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिंचणं । असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं ॥ २८ ॥
जहित्ता पुव्वसंजोगं, नाइसंगे य बन्धवे । जो न सज्जइ भोगेसु, तं वयं बूम माहणं ॥ २९ ॥
पसुबन्धा सव्ववेया य, जट्ठं च [illegible] । न तं तायन्ति दुस्सीलं, कम्माणि [illegible] ॥

न वि मुण्डिएण समणो, न ओंकारेण बम्भणो। न मुणी रण्णवासेण, कुसचीरेण तावसो ॥ ३१ ॥
समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो। नाणेण उ मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥ ३२ ॥
कम्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ। वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥ ३३ ॥
एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ। सव्वकम्मविणिम्मुक्कं, तं वयं बूम माहणं ॥ ३४ ॥
एवं गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा। ते समत्था उ उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ॥ ३५ ॥
एवं तु संसए छिन्ने, विजयघोसे य माहणे। समुदाय तयं तं तु, जयघोसं महामुणिं ॥ ३६ ॥
तुट्ठे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयंजली। माहणत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥ ३७ ॥
तुब्भे जइया जन्नाणं, तुब्भे वेयविऊ विऊ। जोइसंगविऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥ ३८ ॥
तुब्भे समत्था उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य। तमणुग्गहं करेहम्हं भिक्खेण भिक्खु उत्तमा ॥ ३९ ॥
न कज्जं मज्झ भिक्खेण, खिप्पं निक्खमसू दिया। मा भमिहिसि भयावट्टे घोरे संसारसागरे ॥ ४० ॥
उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई। भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥ ४१ ॥
उल्लो सुक्खो य दो छूढा, गोलया मट्टियामया। दो वि आवडिया कुड्डे, जो उल्लो सोऽत्थ लग्गई ॥ ४२ ॥
एवं लग्गन्ति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा। विरत्ता उ न लग्गन्ति, जहा से सुक्कगोलए ॥ ४३ ॥
एवं से विजयघोसे, जयघोसस्स अन्तिए। अणगारस्स निक्खन्तो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥ ४४ ॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य। जयघोसविजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥ ४५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ जन्नइज्जं समत्तं ॥ २५ ॥

॥ अह सामायारी छव्वीसइमं अज्झयणं ॥

सामायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं। जं चरित्ताण निग्गन्था, तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥
पढमा आवस्सिया नाम, बिइया य निसीहिया। आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥ २ ॥
पंचमी छन्दणा नाम, इच्छाकारो य छट्ठओ। सत्तमो मिच्छकारो य, तहक्कारो य अट्ठमो ॥ ३ ॥
अब्भुट्ठाणं च नवमं, दसमी उवसंपदा। एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेइया ॥ ४ ॥
गमणे आवस्सियं कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं। आपुच्छणा सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणा ॥ ५ ॥
छन्दणा दव्वजाएणं, इच्छाकारो य सारणे। मिच्छाकारो य निन्दाए, तहक्कारो पडिस्सुए ॥ ६ ॥
अब्भुट्ठाणं गुरूपूया, अच्छणे उवसंपदा। एवं दुपंचसंजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥ ७ ॥
पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, आइच्चम्मि समुट्ठिए। भण्डयं पडिलेहित्ता, वन्दित्ता य तओ गुरुं ॥ ८ ॥
पुच्छिज्ज पंजलीउडो, किं कायव्वं मए इह। इच्छं निओइउं भन्ते, वेयावच्चे व सज्झाए ॥ ९ ॥
वेयावच्चे निउत्तेणं, कायव्वं अगिलायओ। सज्झाए वा निउत्तेणं, सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥ १० ॥
दिवसस्स चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो। तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥ ११ ॥
पढमं पोरिसिं सज्झायं, बीयं झाणं झियायई। तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्झायं ॥ १२ ॥
आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया। चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥
अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेण च दुरंगुलं। वड्ढए हायए वावि, मासेणं चउरंगुलं ॥ १४ ॥

आसाढबहुलपक्खे, भद्दवए कत्तिए य पोसे य । फग्गुणवइसाहेसु य, बोद्धव्वा ओमरत्ताओ ॥ १५ ॥
जेट्ठामूले आसाढसावणे, छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा । अट्ठहिं बीयतम्मि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥ १६ ॥
रत्तिं पि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो । तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसु वि ॥ १७ ॥
पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई । तइयाए निद्दमोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥ १८ ॥
जं नेइ जया रत्तिं, नक्खत्तं तम्मि नहचउब्भाए । संपत्ते विरमेज्जा, सज्झायं पओसकालम्मि ॥ १९ ॥
तम्मेव य नक्खत्ते, गयणचउब्भागसावसेसम्मि । वेरत्तियं पि कालं, पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥ २० ॥
पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, पडिलेहित्ताण भण्डयं । गुरुं वन्दित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥ २१ ॥
पोरिसीए चउब्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरुं । अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ॥ २२ ॥
मुहपोत्तिं पडिलेहित्ता, पडिलेहेज्ज गोच्छगं । गोच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ॥ २३ ॥
उड्ढं थिरं अतुरियं, पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे । तो बिइयं पप्फोडे, तइयं च पुणो पमज्जिज्जा ॥ २४ ॥
अणच्चावियं अवलियं, अणाणुबन्धिममोसलिं चेव । छप्पुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिविसोहणं ॥ २५ ॥
आरभडा सम्मद्दा, वज्जेयव्वा य मोसली तइया । पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥ २६ ॥
पसिढिलपलम्बलोला, एगामोसा अणेगरूवधुणा । कुणइ पमाणिपमायं, संकियगणणोवगं कुज्जा ॥ २७ ॥
अणूणाइरित्तपडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य । पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि य अप्पसत्थाइं ॥ २८ ॥
पडिलेहणं कुणन्तो, मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा । देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥ २९ ॥
पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ वणस्सइ-तसाणं । पडिलेहणापमत्तो, छण्हं पि विराहओ होइ ॥ ३० ॥
पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ वणस्सइ तसाणं । पडिलेहणाआउत्तो, छण्हं संरक्खओ होइ ॥ ३१ ॥
तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए । छण्हं अन्नयराए, कारणम्मि समुट्ठिए ॥ ३२ ॥
वेयण वेयावच्चे, इरियट्ठाए य संजमट्ठाए । तह पाणवत्तियाए, छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥ ३३ ॥
निग्गन्थो धिइमन्तो, निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव । ठाणेहिं उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ ॥ ३४ ॥
आयंके उवसग्गे, तितिक्खया बम्भचेरगुत्तीसु । पाणिदया तवहेउं, सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥ ३५ ॥
अवसेसं भण्डगं गिज्झ, चक्खुसा पडिलेहए । परमद्धजोयणाओ, विहारं विहरए मुणी ॥ ३६ ॥
चउत्थीए पोरिसीए, निक्खिवित्ताण भायणं । सज्झायं तओ कुज्जा, सव्वभावविभावणं ॥ ३७ ॥
पोरिसीए चउब्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरुं । पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ॥ ३८ ॥
पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई । काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ३९ ॥
देवसियं च अईयारं, चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो । नाणे य दंसणे चेव, चरित्तम्मि तहेव य ॥ ४० ॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं । देसियं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥ ४१ ॥
पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वन्दित्ताण तओ गुरुं । काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४२ ॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं । थुइमंगलं च काऊण, कालं संपडिलेहए ॥ ४३ ॥
पढमं पोरिसि सज्झायं, बितियं झाणं झियायई । तइयाए निद्दमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थिए ॥ ४४ ॥
पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिया । सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहेन्तो असंजए ॥ ४५ ॥
पोरिसीए चउब्भाए, वन्दिऊण तओ गुरुं । पडिक्कमित्तु कालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥ ४६ ॥
आगए कायवोस्सग्गे, सव्वदुक्खविमोक्खणे । काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४७ ॥

राइय च अईयर, चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो। नाणंमि दंसणंमि य, चरित्तंमि तवंमि य ॥ ४८ ॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं। राइय तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥ ४९ ॥
पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वन्दित्ताण तओ गुरुं। काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ५० ॥
किं तवं पडिवज्जामि, एवं तत्थ विचिन्तए। काउस्सग्गं तु पारित्ता, वन्दई य तओ गुरुं ॥ ५१ ॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं। तवं तु पडिवज्जित्ता, कुज्जा सिद्धाण संथवं ॥ ५२ ॥
एसा सामायारी, समासेण वियाहिया। जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥ ५३ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ सामायारी समत्ता ॥ २६ ॥

॥ अह खलुंकिज्जं सत्तवीसइमं अज्झयणं ॥

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए। आइण्णे गणिभावम्मि, समाहिं पडिसंधए ॥ १ ॥
वहणे वहमाणस्स कन्तारं अइवत्तई। जोगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तई ॥ २ ॥
खलुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सई। असमाहिं च वेएइ, तोत्तओ से य भज्जई ॥ ३ ॥
एगं डसइ पुच्छम्मि, एगं विन्धइ ऽभिक्खणं। एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पहपट्ठिओ ॥ ४ ॥
एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निवज्जई। उक्कुद्दइ उप्फिडइ, सढे बालगवी वए ॥ ५ ॥
माई मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं। मयलक्खेण चिट्ठई, वेगेण य पहावई ॥ ६ ॥
छिन्नाले छिन्दई सेल्लिं, दुद्दन्तो भंजए जुगं। सेवि य सुस्सुयाइत्ता, उज्जहित्ता पलायए ॥ ७ ॥
खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा। जोइया धम्मजाणम्मि, भज्जन्ती धिइदुब्बला ॥ ८ ॥
इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे। सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥ ९ ॥
भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए। थद्धे एगे अणुसासम्मी, हेऊहिं कारणेहि य ॥ १० ॥
सो वि अन्तरभासिल्लो, दोसमेव पकुव्वई। आयरियाणं तु वयणं, पडिकूलेइऽभिक्खणं ॥ ११ ॥
न सा ममं वियाणाइ, न य सा मज्झ दाहिई। निग्गया होहिई मन्ने, साहू अन्नोत्थ वच्चउ ॥ १२ ॥
पेसिया पलिउंचन्ति, ते परियन्ति समन्तओ। रायवेट्ठिं च मन्नन्ता, करेन्ति भिउडिं मुहे ॥ १३ ॥
वाइया संगहिया चेव, भत्तपाणेण पोसिया। जायपक्खा जहा हंसा, पक्कमन्ति दिसो दिसिं ॥ १४ ॥
अह सारही विचिन्तेइ, खलुंकेहिं समागओ। किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं, अप्पा मे अवसीयई ॥ १५ ॥
जारिसा मम सीसाओ, तारिसा गलिगद्दहा। गलिगद्दहे जहित्ताणं, दढं पगिण्हई तवं ॥ १६ ॥
मिउमद्दवसंपन्नो, गम्भीरो सुसमाहिओ। विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा ॥ १७ ॥

त्ति बेमि ॥ खलुंकिज्जं समत्तं ॥ २७ ॥

॥ अह मोक्खमग्गगई अट्ठावीसइमं अज्झयण ॥

मोक्खमग्गगइ तच्च, सुणेह जिणभासिय । चउकारणसजुत्त, नाणदसणलक्खण ॥ १ ॥
नाण च दसण चेव, चरित्त च तवो तहा । एस मग्गु त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदसिहिं ॥ २ ॥
नाण च दसण चेव, चरित्त च तवो तहा । एयमग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोग्गइ ॥ ३ ॥
तत्थ पचविह नाण, सुय आभिनिबोहिय । ओहिनाण तु तइय, मणनाण च केवल ॥ ४ ॥
एय पचविह नाण, दव्वाण य गुणाण य । पज्जवाण य सव्वेसिं, नाण नाणीहि दसिय ॥ ५ ॥
गुणाणमासओ दव्व, एगदव्वस्सिया गुणा । लक्खण पज्जवाण तु उभओ अस्सिया भवे ॥ ६ ॥
धम्मो अहम्मो आगास, कालो पुग्गल जन्तवो । एस लोगो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदसिहिं ॥ ७ ॥
धम्मो अहम्मो आगास, दव्व इक्किक्कमाहिय । अणन्ताणि य दव्वाणि, कालो, पुग्गलजन्तवो ॥ ८ ॥
गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो । भायण सव्वदव्वाण, नह ओगाहलक्खण ॥ ९ ॥
वत्तणालक्खणो कालो, जीवो उवओगलक्खणो । नाणेण दसणेण च, सुहेण य दुहेण य ॥ १० ॥
नाण च दसण चेव, चरित्त च तवो तहा । वीरिय उवओगो य, एय जीवस्स लक्खण ॥ ११ ॥
सद्दन्धयार उज्जोओ, पहा छाया तवे इ वा । वण्णरसगन्धफासा, पुग्गलाण तु लक्खण ॥ १२ ॥
एगत्त च पुहत्त च, सखा सठाणमेव य । सजोगा य विभागा य, पज्जवाण तु लक्खण ॥ १३ ॥
जीवाजीवा य बन्धो य, पुण्ण पावासवा तहा । सवरो निज्जरा मोक्खो, सन्तेए तहिया नव ॥ १४ ॥
तहियाण तु भावाण, सब्भावे उवएसण । भावेण सद्दहन्तस्स, सम्मत्त त वियाहिय ॥ १५ ॥
निसग्गुवएसरुई, आणारुई सुत्त बीयरुइमेव । अभिगम वित्थाररुई, किरिया सखेव धम्मरुई ॥ १६ ॥
भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्णपाव च । सहसम्मुइयासवसवरो य रोएइ उ निस्सग्गो ॥ १७ ॥
जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव । एमेव नन्नह त्ति य, स निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥ १८ ॥
एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहई । छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥ १९ ॥
रागो दोसो मोहो, अन्नाण जस्स अवगय होइ । आणाए रोयन्तो, सो खलु आणारुई नाम ॥ २० ॥
जो सुत्तमहिज्जन्तो, सुएण ओगाहई उ सम्मत्त । अगेण बाहिरेण व, सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥ २१ ॥
एगेण अणेगाइ, पयाइ जो पसरई उ सम्मत्त । उदए व्व तेल्लबिन्दू, सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥ २२ ॥
सो होइ अभिगमरुई, सुयनाण जेण अत्थओ दिट्ठ । एक्कारस अगाइ, पइण्णग दिट्ठिवाओ य ॥ २३ ॥
दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा । सव्वाहि नयविहीहिं, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥ २४ ॥
दसणनाणचरित्ते, तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु । जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम ॥ २५ ॥
अणभिग्गहियकुदिट्ठी सखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो । अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥ २६ ॥
जो अत्थिकायधम्म, सुयधम्म खलु चरित्तधम्म च । सद्दहइ जिणाभिहिय, सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥ २७ ॥
परमत्थसथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवण वा वि । वावन्नकुदसणवज्जणा, य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २८ ॥
नत्थि चरित्त सम्मत्तविहूण, दसणे उ भइयव्व । सम्मत्तचरित्ताइ, जुगव पुव्व व सम्मत्त ॥ २९ ॥

नादसणिस्स नाण, नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निव्वाण ॥ ३० ॥

निस्संकिय निक्कंखिय निव्वितिच्छा अमूढदिट्ठी य । उववूह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अट्ठ ॥ ३१ ॥
सामाइत्थ पढमं, छेओवट्ठावण भवे बीयं । परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपराय च ॥ ३२ ॥
अकसायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा । एयं चयरित्तकरं, चारित्त होइ आहियं ॥ ३३ ॥
तवो य दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एमेवब्भन्तरो तवो ॥ ३४ ॥
नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दहे । चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झई ॥ ३५ ॥
खवेत्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य । सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥ ३६ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ मोक्खमग्गगई समत्ता ॥ २८ ॥

॥ अह सम्मत्तपरक्कम एगूणतीसइमं अज्झयणं ॥

सुयं मे आउसं-तेणं भगवया एवमक्खायं । इह खलु सम्मत्तपरक्कमे नाम अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए, जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति । तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ, तंजहा-संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निंदणया ६ गरिहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थवे ९ वन्दणे १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुईमंगले १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया १९ पडिपुच्छणया २० पडियट्टणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहायपच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सब्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवणया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपुण्णया ४४ वीयरागया ४५ खन्ती ४६ मुत्ती ४७ मद्दवे ४८ अज्जवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४ जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ॥ ७३ ॥

संवेगेणं भन्ते जीवे किं जणयइ? संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ अणन्ताणुबन्धिकोहमाणमायालोभे खवेइ । कम्मं न बन्धइ । तप्पच्चयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ । दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झई । सोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥ १ ॥ निव्वेदेणं

भन्ते जीवे किं जणयइ। निव्वेदेण दिव्वमाणुसतेरिच्छएसु कामभोगेसु निव्वेय हव्वमागच्छेइ सव्वविसएसु विरज्जइ। सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरम्भपरिच्चाय करेइ। आरम्भपरिच्चाय करेमाणे संसारमग्ग वोच्छिंदइ, सिद्धिमग्ग पडिवन्ने य भवइ।२॥ धम्मसद्धाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ। धम्मसद्धाए ण मायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ। आगारधम्म च ण चयइ। अणगारिए ण जीवे सारीरमाणसाण दुक्खाण छेयणभेयणसजोगाईण वोच्छेय करेइ अव्वाबाह च सुह निव्वत्तेइ ॥ ३ ॥ गुरुसाहम्मिय-सुस्सूसणाए ण विणयपडिवत्तिं जणयइ। विणयपडिवन्ने य ण जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरि-क्खजोणियमणुस्सदेवदुग्गईओ निरुम्भइ। वण्णसजलणभत्तिबहुमाणयाए मणुस्सदेवगईओ निबन्धइ, सिद्धिं सोगइ च विसोहेइ। पसत्थाइ च ण विणयमूलाइ सव्वकज्जाइ साहेइ अन्ने य बहवे जीवे विणिइत्ता भवइ ॥४॥ आलोयणाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ। आलोयणाए ण मायानियाणमिच्छा दसणसल्लाण मोक्खमग्गविग्घाण अणतससारवन्धणाण उद्धरण करेइ। उज्जुभाव च जणयइ। उज्जु भावपडिवन्ने य ण जीवे अमाई इत्थीवेयनपुसगवेय च न बन्धइ। पुव्वबद्ध च ण निज्जरेइ ॥ ५ ॥ निन्दणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ। निन्दणयाए ण पच्छाणुताव जणयइ। पच्छाणुतावेण विर ज्जमाणे करणगुणसेढिं पडिवज्जइ। करणगुणसेढीपडिवन्ने य ण अणगारे मोहणिज्ज कम्म उग्घाएइ॥६॥ गरहणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ। गरहणयाए अपुरेक्कार जणयइ। अपुरेक्कारगए ण जीवे अप्प-सत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ,पसत्थे य पडिवज्जइ। पसत्थजोगपडिवन्ने य ण अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ७॥सामाइएण भन्ते जीवे किं जणयइ। सामाइएण सावज्जजोगविरइ जणयइ॥८॥चउव्वीस-त्थएण भन्ते जीवे किं जणयइ। च० दसणविसोहिं जणयइ॥९॥ वन्दणएण भन्ते जीवे किं जणयइ। व० नीयागोय कम्म खवेइ। उच्चागोय कम्म निबन्धइ सोहग्ग च ण अपडिहिय आणाफल निव्वत्तेइ। दाहिणभाव च ण जणयइ ॥१०॥ पडिक्कमणेण भन्ते जीवे किं जणयइ। प० वयछिद्दाणि पिहेइ। पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणि-हिइदिए विहरइ ॥ ११ ॥ काउसग्गेण भन्ते जीवे किं जणयइ। का० तीयपडुप्पन्न पायच्छित्त विसोहेइ। विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरियभरु व्व भारवहे पसत्थज्झाणोवगए सुह सुहेण विहरइ ॥ १२ ॥ पच्चक्खाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ। प० आसवदाराइ निरुम्भइ। पच्च-क्खाणेण इच्छानिरोह जणयइ। इच्छानिरोह गए य ण जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए वि हरइ ॥ १३ ॥ थवथुइमगलेण भन्ते जीवे किं जणयइ। थ० नाणदसणचरित्तबोहिलाभ जणयइ। नाणदसणचरित्तबोहिलाभसपन्ने य ण जीवे अन्तकिरिय कप्पविमाणोववत्तिग आराहण आराहेइ ॥ १४ ॥ कालपडिलेहणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ। का० नाणावरणिज्ज कम्म खवेइ ॥ १५ ॥ पायच्छित्तकरणेण भन्ते जीवे किं जणयइ। पा० पावविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ। सम्म च ण पायच्छित्त पडिवज्जमाणे मग्ग च मग्गफल च विसोहेइ, आयार च आयारफल च आराहेइ ॥ १६ ॥ खमावणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ। ख० पल्हायणभाव जणयइ। पल्हायणभावमु-वगए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु-मेत्तीभावमुप्पाएइ। मेत्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ॥१७॥ सज्झाएण भन्ते जीवे किं जणयइ। स० नाणावरणिज्ज कम्म खवेइ ॥ १८ ॥ वायणाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ। वा० निज्जर जणयइ सुयस्स य अणासायणाए

वट्टए । सुयमअणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ । तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ १९ ॥ पडिपुच्छणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । प० सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ । कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ ॥२०॥ परियट्टणाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । प० वंजणाइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ॥२१॥ अणुप्पेहाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । अ० आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ घणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ । दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिईआओ पकरेइ । तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ । (बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ) आउयं च णं कम्मं सिया बन्धइ, सिया नो बन्धइ। असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ। अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ ॥२२॥ धम्मकहाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । ध० निज्जरं जणयइ । धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ । पवयणपभावेणं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबन्धइ । २३ ॥ सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । सु० अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ॥ २४ ॥ एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । ए० चित्तनिरोहं करेइ ॥ २५ ॥ संजमेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । सं० अणण्हयत्तं जणयइ ॥ २६ ॥ तवेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ तवेणं वोदाणं जणयइ ॥ २७ ॥ वोदाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । वो० अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ २८ ॥ सुहसाएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । सु० अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ २९ ॥ अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । अ० निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ॥ ३० ॥ विवित्तसयणासणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । वि० चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगंठिं निज्जरेइ ॥३१॥ विणियट्टणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । वि० पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ । पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ । तओ पच्छा चाउरन्तं संसारकन्तारं वीइवयइ ॥ ३२ ॥ संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । सं० आलम्बणाइं खवेइ । निरालम्बणस्स य आयट्ठिया योगा भवन्ति । सएणं लाभेणं संतुस्सइ, परलाभं नो आसादइ, परलाभं नो तक्केइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ । परलाभं अणस्सायमाणे अतक्केमाणे अपीहमाणे अपत्थमाणे अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥ ३३ ॥ उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । उ० अपलिमन्थं जणयइ । निरुवहिए णं जीवे निक्कंखी उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सइ ॥३४॥ आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । आ० जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दइ । जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न संकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥ कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । क० वीयरागभावं जणयइ । वीयरागभावपडिवन्ने वि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ ॥ ३६ ॥ जोगपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । जो० अजोगत्तं जणयइ अजोगे णं जीवे नवं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं निज्जरेइ ॥ ३७ ॥ सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । स० सिद्धाइसयगुणत्तणं निव्वत्तेइ सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ ॥ ३८ ॥

सहायपच्चक्खाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ। स० एगीभावं जणयइ। एगीभावभूए वि य णं जीवे एगत्तं भावेमाणे अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ ॥ ३९॥ भत्तपच्चक्खाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ। भ० अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ ॥४०॥ सब्भावपच्चक्खाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ स० अनियट्टिं जणयइ। अनियट्टिपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तंजहा-वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुचइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ ४१ ॥ पडिरूवयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। प० लाघवियं जणयइ। लहुभूए णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइन्दिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ ॥ ४२॥ वेयावच्चेण भन्ते जीवे किं जणयइ। वे० तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ ॥ ४३ ॥ सव्वगुणसंपन्नयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। स० अपुणरावत्तिं जणयइ। अपुणरावत्तिं पत्तए य णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ॥ ४४ ॥ वीयरागयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। वी० नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि य वोच्छिन्दइ, मणुन्नामणुन्नेसु सद्दफरिसरूवरसगन्धेसु चेव विरज्जइ ॥ ४५ ॥ खन्तीए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। ख० परीसहे जिणइ ॥ ४६ ॥ मुत्तीए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। मु० अकिंचणं जणयइ। अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं अपत्थणिज्जो भवइ ॥ ४७ ॥ अज्जवयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। अ० काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ। अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥ मद्दवयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। म० अणुस्सियत्तं जणयइ। अणुस्सियत्तेणं जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठावेइ ॥ ४९ ॥ भावसच्चेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। भा० भावविसोहिं जणयइ। भावविसोहिए वट्टमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ। अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोगधम्मस्स आराहए भवइ ॥ ५० ॥ करणसच्चेण भन्ते जीवे किं जणयइ। क० करणसत्तिं जणयइ। करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहा वाई तहा कारी यावि भवइ ॥ ५१ ॥ जोगसच्चेण भन्ते जीवे किं जणयइ। जो० जोगं विसोहेइ ॥ ५२ ॥ मणगुत्तयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ म० जीवे एगग्गं जणयइ। एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ॥ ५३ ॥ वयगुत्तयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। व० निव्वियारं जणयइ। निव्वियारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि विहरइ ॥ ५४ ॥ कायगुत्तयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। का० संवरं जणयइ। संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ॥ ५५ ॥ मणसमाहारणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। म० एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ। नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ ॥ ५६ ॥ वयसमाहारणयाए भन्ते जीवे किं जणयइ। व० वयसमाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ। वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहित्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ, दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ ॥ ५७॥ कायसमाहारणयाए णं भन्ते जीव किं जणयइ। का० चरित्तपज्जवे विसोहेइ। चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ। अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुचइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ ५८ ॥ नाणसंपन्नयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। ना० जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ। नाणसंपन्ने जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणस्सइ।

जहा सूई ससुत्ता न विणस्सइ तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ, नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ, ससमयपरसमयविसारए य असंघायणिज्जे भवइ ॥ ५९ ॥ दंसणसंपन्नयाए णं भंते जीवे किं जणयइ । दं० भवमिच्छत्तछेयणं करेइ न विज्झायइ । परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ॥ ६० ॥ चरित्तसंपन्नयाए णं भंते जीवे किं जणयइ । च० सेलेसीभावं जणयइ । सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥ ६१ ॥ सोइन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । सो० मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६२ ॥ चक्खिन्दियनिग्गहेणं भंते जीवे किं जणयइ । च० मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६३ ॥ घाणिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । घा० मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६४ ॥ जिब्भिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । जि० मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६५ ॥ फासिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । फा० मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६६ ॥ कोहविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । को० खन्तिं जणयइ कोहवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६७ ॥ माणविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । मा० मद्दवं जणयइ, माणवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६८ ॥ मायाविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । मा० अज्जवं जणयइ, मायावेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६९ ॥ लोभविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । लो० संतोसं जणयइ, लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ७० ॥ पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । पि० नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगण्ठिविमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ, पञ्चविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दंसणावरणिज्जं, पंचविहं अन्तराइयं, एए तिन्नि वि कम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा अणुत्तरं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावं केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ, ताव ईरियावहियं कम्मं निबन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं । तं पढमसमए बद्धं, बिइयसमए वेइयं, तइयसमए निज्जिण्णं, तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्मयावि भवइ ॥ ७१ ॥ अह आउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुम्भइ वयजोगं निरुम्भइ, कायजोगं निरुम्भइ, आणपाणुनिरोहं करेइ, ईसिं पंचरहस्सक्खरुच्चारणद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ॥ ७२ ॥ तओ ओरालियतेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ जाव अंतं करेइ ॥ ७३ ॥ एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए उवदंसिए ॥ ७४ ॥ त्ति बेमि ॥ इअ सम्मत्तपरक्कमे समत्ते ॥ २९ ॥

॥ अह तवमग्ग तीसइम अज्झयण ॥

जहा उ पावग कम्म, रागदोससमज्जिय । खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ १ ॥
पाणिवहमुसावायाअदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ । राईभोयणविरओ, जीवो भवइ अणासवो ॥ २ ॥
पचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जि इदिओ । अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥
एएसि तु विवच्चासे, रागदोससमज्जिय । खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ ४ ॥
जहा महातलायस्स, सन्निरुद्धे जलागमे । उस्सिचणाए तवणाए, कमेण सोसणा भवे ॥ ५ ॥
एव तु सजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे । भवकोडीसचिय कम्म, तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥
सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भन्तरो तवो ॥ ७ ॥
अणसणमूणोयरिया, भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ। कायकिलेसो सलीणया य बज्झो तवो होइ ॥ ८ ॥
इत्तरिय मरणकाला य, अणसणा दुविहा भवे । इत्तरिय सावकखा, निरवकखा उ बिइज्जिया ॥ ९ ॥
जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छव्विहो । सेढितवो पयरतवो, घणो य तह होइ वग्गो य ॥ १० ॥
तत्तो य वग्गवग्गो, पचमो छट्ठओ पइण्णतवो । मणइच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥ ११ ॥
जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा वि वियाहिया । सवियारमवियारा, कायचिट्ठ पइ भवे ॥ १२ ॥
अहवा सपरिकम्मा, अपरिकम्मा य आहिया । नीहारिमनीहारी, आहारच्छेओ दोसु वि ॥ १३ ॥
ओमोयरण पचहा, समासेण वियाहिय । दव्वओ खेत्तकालेण, भावेण पज्जवेहि य ॥ १४ ॥
जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओम तु जो करे । जहन्नेणेगसित्थाई, एव दव्वेण उ भवे ॥ १५ ॥
गामे नगरे तह रायहाणिनिगमे य आगरे पल्ली । खेडे कब्बडदोणमुहपट्टणमडम्बसबाहे ॥ १६ ॥
आसमपए विहारे, सन्निवेसे समायघोसे य । थलिसेणाखधारे, सत्थे सवट्टकोट्टे य ॥ १७ ॥
वाडेसु य रच्छासु व, घरेसु वा एवमित्तिय खेत्त । कप्पइ उ एवमाई, एव खेत्तेण उ भवे ॥ १८ ॥
पेडा य अद्धपेडा, गोमुत्तिपयगवीहिया चेव । सम्बुक्कावट्टाययगन्तुपच्चागया छट्ठा ॥ १९ ॥
दिवसस्स पोरुसीण, चउण्ह पि उ जत्तिओ भवे कालो । एव चरमाणो खलु कालोमाण मुणेयव्व ॥ २० ॥
अहवा तइयाए पोरिसीए ऊणाइ घासमेसन्तो । चउभागूणाए वा, एव कालेण उ भवे ॥ २१ ॥
इत्थी वा पुरिसो वा, अलकिओ वा नलकिओ वावि । अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेण व वत्थेण ॥ २२ ॥
अन्नेण विसेसेण, वण्णेण भावमणुमुयन्ते उ । एव चरमाणो खलु, भावोमाण मुणेयव्व ॥ २३ ॥
दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य आहिया उ जे भावा । एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥ २४ ॥
अट्ठविहगोयरग्ग तु, तहा सत्तेव एसणा । अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ॥ २५ ॥
खीरदहिसप्पिमाई, पणीय पाणभोयण । परिवज्जण रसाण तु, भणिय रसविवज्जण ॥ २६ ॥
ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा । उग्गा जहा धरिज्जन्ति, कायकिलेस तमाहिय ॥ २७ ॥
एगन्तमणावाए, इत्थीपसुविवज्जिए । सयणासणसेवणया, विवित्तसयणासण ॥ २८ ॥
एसो बाहिरगतवो, समासेण वियाहिओ । अब्भिन्तर तव एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ २९ ॥
पायच्छित्त विणओ, वेयावच्च तहेव सज्झाओ । झाण च विउस्सग्गो, एसो अब्भिन्तरो तवो ॥ ३० ॥

आलोयणारिहाईय, पायच्छित्त तु दसविह । ज भिक्खू वहई सम्म, पायच्छित्त तमाहिय ॥ ३१ ॥
अब्भुट्ठाण अजलिकरण, तहेवासणदायण । गुरुभत्तिभावसुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥ ३२ ॥
आयरियमाईए, वेयावच्चम्मि दसविह । आसेवण जहाथाम, वेयावच्च तमाहिय ॥ ३३ ॥
वायणा पुच्छणा चेव, तहेव परियट्टणा । अणुप्पेहा धम्मकहा, सज्झाओ पञ्चहा भवे ॥ ३४ ॥
अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिए । धम्मसुक्काइ झाणाइ, झाण त तु बुहावए ॥ ३५ ॥
सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे । कायस्स विउस्सग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥ ३६ ॥
एय तव तु दुविह, जे सम्म आयरे मुणी । सो खिप्प सव्वससारा, विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥ ३७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ तवमग्ग समत्त ॥ ३० ॥

॥ अह चरणविही एगतीसइम अज्झयण ॥

चरणविहि पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावह । ज चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा ससारसागर ॥ १ ॥
एगओ विरइ कुज्जा, एगओ य पवत्तण । असजमे नियत्ति च, सजमे य पवत्तण ॥ २ ॥
रागदोसे य दो पावे, पावकम्मपवत्तणे । जे भिक्खू रुम्भई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ३ ॥
दण्डण गारवाण च, सल्लाण च तिय तिय । जे भिक्खू चयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ४ ॥
दिव्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छमाणुसे । जे भिक्खू सहई जयई, से न अच्छइ मण्डले ॥ ५ ॥
विगहाकसायसन्नाण, झाणाण च दुय तहा । जे वज्जई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥
वएसु इन्दियत्थेसु समिईसु किरियासु य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ७ ॥
लेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ८ ॥
पिण्डोग्गहपडिमासु, भयट्ठाणेसु सत्तसु । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ९ ॥
मदेसु बम्भगुत्तीसु, भिक्खुधम्मम्मि दसविहे । जे भिक्खू जयइ निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १० ॥
उवासगाण पडिमासु, भिक्खूण पडिमासु य । जे भिक्खू जयइ निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ११ ॥
किरियासु भूयगामेसु, परमाहम्मिएसु य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १२ ॥
गाहासोलसएहिं, तहा असजमम्मि य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १३ ॥
बम्भम्मि नायज्झयणेसु, ठाणेसु य समाहिए । जे भिक्खू जयइ निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १४ ॥
एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १५ ॥
तेवीसाइ सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १६ ॥
पणुवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाइण । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १७ ॥
अणगारगुणेहिं च, पगप्पम्मि तहेव य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १८ ॥
पावसुयपसगेसु, मोहट्ठाणेसु चेव य । जे भिक्खू जयइ निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १९ ॥
सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ २० ॥
इय एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया । खिप्प सो सव्वससारा, विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥ २१ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ चरणविही समत्ता ॥ ३१ ॥

॥ अह पमायट्ठाणं बत्तीसइमं अज्झयणं ॥

अच्चन्तकालस्स समूलगस्स सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता, सुणेह एगन्तहियं हियत्थं ॥ १ ॥
नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥ २ ॥
तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झायएगन्तनिसेवणा य, सुत्तत्थसंचिन्तणया धिई य ॥ ३ ॥
आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ ४ ॥
न वा लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पावाइ विवज्जयन्तो, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥
जहा य अण्डप्पभवा बलागा, अण्डं बलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा, मोहं च तण्हाययणं वयन्ति ॥ ६ ॥
रागो य दोसो वि य कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति ।
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाईमरणं वयन्ति ॥ ७ ॥
दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥ ८ ॥
रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तुकामेण समूलजालं ।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा, ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ॥ ९ ॥
रसा पगामं न निसेवियव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
दित्तं च कामा समभिद्दवन्ति, दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥ १० ॥
जहा दवग्गी पउरिन्धणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ ।
एविन्दियग्गी वि पगामभोइणो, न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥ ११ ॥
विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं, ओमासणाणं दमिइन्दियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥ १२ ॥
जहा विरालावसहस्स मूले, न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे, न बम्भयारिस्स खमो निवासो ॥ १३ ॥
न रूवलावण्णविलासहासं, न जंपियं इंगियपेहियं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥ १४ ॥
अदंसणं चेव अपत्थणं च, अचिन्तणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजणस्सारियज्झाणजुग्गं, हियं सया बम्भवए रयाणं ॥ १५ ॥

काम तु देवीहि विभूसियाहिं, न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा, विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ॥ १६ ॥
मोक्खाभिकंखिस्स उ माणवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए, जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥ १७ ॥
एए य संगे समइक्कमित्ता, सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता, नई भवे अवि गङ्गासमाणा ॥ १८ ॥
कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइयं माणसियं च किंचि, तस्सन्तगं गच्छइ वीयरागो ॥ १९ ॥
जहा य किम्पागफला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
ते खुड्डए जीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ॥ २० ॥
जे इन्दियाणं विसया मणुन्ना, न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
न यामणुन्नेसु मणं पि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ २१ ॥
चक्खुस्स चक्खु गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ २२ ॥
रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति, चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ २३ ॥
रूवेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे से जह वा पयंगे, आलोयलोले समुवेइ मच्चुं ॥ २४ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि रूवं अवरज्झई से ॥ २५ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि रूवे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ २६ ॥
रूवाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ २७ ॥
रूवाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, वए सम्भोगकाले य अतित्तलाभे ॥ २८ ॥
रूवे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ २९ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ३० ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ३१ ॥
रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।

तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ३२ ॥
एमेव रूवम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ३३ ॥
रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ३४ ॥
सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ३५ ॥
सद्दस्स सोयं गहणं वयन्ति, सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ३६ ॥
सद्देसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे, सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥ ३७ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि सद्दं अवरुज्झई से ॥ ३८ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि सद्दे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ३९ ॥
सद्दाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ४० ॥
सद्दाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसंनिओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ४१ ॥
सद्दे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ४२ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ४३ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥
सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ४५ ॥
एमेव सद्दम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ४६ ॥
सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ४७ ॥
घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ४८ ॥

गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति, घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ४९ ॥
गन्धेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे ओसहगन्धगिद्धे, सप्पे बिलाओ विव निक्खमंते ॥ ५० ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि गन्धं अवरुज्झई से ॥ ५१ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ५२ ॥
गन्धाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ५३ ॥
गन्धाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ५४ ॥
गन्धे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ५५ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ५६ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ५७ ॥
गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ५८ ॥
एमेव गन्धम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ५९ ॥
गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ६० ॥
जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ६१ ॥
रसस्स जिब्भं गहणं वयंति, जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ६२ ॥
रसेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए, मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ॥ ६३ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि रसं अवरुज्झई से ॥ ६४ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि रसे अतालिसे से कुणई पओसं ।

दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ६५ ॥
रसाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ६६ ॥
रसाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ६७ ॥
रसे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ६८ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, रसे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ६९ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ७० ॥
रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ७१ ॥
एमेव रसम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ७२ ॥
रसे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ७३ ॥
कायस्स फासं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ७४ ॥
फासस्स कायं गहणं वयन्ति, कायस्स फासं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ७५ ॥
फासेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीयजलावसन्ने, गाहग्गहीए महिसे विवन्ने ॥ ७६ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि फासं अवरुज्झई से ॥ ७७ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि फासे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ७८ ॥
फासाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरूकिलिट्ठे ॥ ७९ ॥
फासाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ८० ॥
फासे अतित्ते य, परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण, दुही परस्स, [illegible] आययई अदत्तं ॥ ८१ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ८२ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो,फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ८३ ॥
फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ८४ ॥
एमेव फासम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ८५ ॥
फासे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ८६ ॥
मणस्स भावं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ८७ ॥
भावस्स मणं गहणं वयन्ति, मणस्स भावं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ८८ ॥
भावेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे, करेणुमग्गावहिए गजे वा ॥ ८९ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसिक्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि भावं अवरुज्झई से ॥ ९० ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि भावे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ९१ ॥
भावाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ९२ ॥
भावाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसंनिओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ९३ ॥
भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ९४ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ९५ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ९६ ॥
भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ९७ ॥
एमेव भावम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।

पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ९८ ॥
भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ॥ ९९ ॥
एविन्दियत्था य मणस्स अत्था दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं, न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ॥ १०० ॥
न कामभोगा समयं उवेन्ति, न यावि भोगा विगइं उवेन्ति ।
जे तप्पओसी य परिग्गही य, सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥ १०१ ॥
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोहं दुगुंछं अरइं रइं च ।
हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं, नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥ १०२ ॥
आवज्जई एवमणेगरूवे, एवंविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे, कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥ १०३ ॥
कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू, पच्छाणुतावे न तवप्पभावं ।
एवं वियारे अमियप्पयारे, आवज्जई इन्दियचोरवस्से ॥ १०४ ॥
तओ से जायन्ति पओयणाइं, निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा, तप्पच्चयं उज्जमए य रागी ॥ १०५ ॥
विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था, सद्दाइया तावइयप्पगारा ।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा, निव्वत्तयन्ती अमणुन्नयं वा ॥ १०६ ॥
एवं ससंकप्पविकप्पणासु, संजायई समयमुवट्ठियस्स ।
अत्थे असंकप्पयओ तओ से, पहीयए कामगुणेसु तण्हा ॥ १०७ ॥
स वीयरागो कयसव्वकिच्चो, खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
तहेव जं दंसणमावरेइ, जं चन्तरायं पकरेइ कम्मं ॥ १०८ ॥
सव्वं तओ जाणइ पासए य, अमोहणे होइ निरन्तराए ।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते, आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥ १०९ ॥
सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को, जं बाहई सययं जन्तुमेयं ।
दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो, तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥ ११० ॥
अणाइकालप्पभवस्स एसो, सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।
वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता, कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥ १११ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ पमायट्ठाणं समत्तं ॥ ३२ ॥

॥ अह कम्मप्पयडी तेत्तीसइम अज्झयण ॥

अट्ठ कम्माइ वोच्छामि, आणुपुव्विं जहाकम । जेहिं बद्धो अय जीवो, ससारे परिवट्टई ॥ १ ॥
नाणस्सावरणिज्ज, दसणावरण तहा । वेयणिज्ज तहा मोह, आउकम्म तहेव य ॥ २ ॥
नामकम्म च गोय च, अन्तराय तहेव य । एवमेयाइ कम्माइ, अट्ठेव उ समासओ ॥ ३ ॥
नाणावरण पञ्चविह, सुय आभिणिबोहिय । ओहिनाण च तइय, मणनाण च केवल ॥ ४ ॥
निद्दा तहेव पयला, निद्दानिद्दा पयलपयला य । तत्तो यथीणगिद्धी उ, पचमा होइ नायव्वा ॥ ५ ॥
चक्खुमचक्खुओहिस्स, दसणे केवले य आवरणे । एव तु नवविगप्प, नायव्व दसणावरण ॥ ६ ॥
वेयणीयपि य दुविह, सायमसाहिय च आहिय । सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥ ७ ॥
मोहणिज्जपि य दुविह, दसणे चरणे तहा । दसणे तिविह वुत्त, चरणे दुविह भवे ॥ ८ ॥
सम्मत्त चेव मिच्छत्त, सम्मामिच्छत्तमेव य । एयाओ तिन्नि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दसणे ॥ ९ ॥
चरित्तमोहण कम्म, दुविह त वियाहिय कसायमोहणिज्ज तु, नोकसाय तहेव य ॥ १० ॥
सोलसविहभेएण, कम्म तु कसायज । सत्तविह नवविह वा, कम्म च नोकसायज ॥ ११ ॥
नेरइयतिरिक्खाउ, मणुस्साउ तहेव य । देवाउय चउत्थ तु, आउ कम्म चउव्विह ॥ १२ ॥
नाम कम्म तु दुविह, सुहमसुह च आहिय । सुभस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥ १३ ॥
गोय कम्म दुविह, उच्च नीय च आहिय । उच्च अट्ठविह होइ, एव नीय पि आहिय ॥ १४ ॥
दाणे लाभे य भोगे य, उवभोगे वीरिए तहा । पञ्चविहमन्तराय, समासेण वियाहिय ॥ १५ ॥
एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया । पएसग्ग खेत्तकाले य, भाव च उत्तर सुण ॥ १६ ॥
सव्वेसिं चेव कम्माण, पएसग्गमणतग । गण्ठियसत्ताईय, अन्तो सिद्धाण आहिय ॥ १७ ॥
सव्वजीवाण कम्म तु, सगह छद्दिसागय । सव्वेसु वि पएसेसु, सव्व सव्वेण बद्धग ॥ १८ ॥
उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडिओ । उक्कोसिय ठिई होइ, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९ ॥
आवरणिज्जाण दुण्हंपि, वेयणिज्जे तहेव य । अन्तराए य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया ॥ २० ॥
उदहीसरिसनामाण, सत्तरिं कोडिकोडीओ । मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ २१ ॥
तत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया । ठिई उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ २२ ॥
उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडीओ । नामगोत्ताण उक्कोसा, अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥ २३ ॥
सिद्धाणणन्तभागो य, अणुभागा हवन्ति उ । सव्वेसु वि पएसग्ग, सव्वजीवे अइच्छिय ॥ २४ ॥
तम्हा एएसि कम्माण, अणुभागा वियाणिया । एएसि सवरे चेव, खवणे य जए बुहो ॥ २५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ कम्मप्पयडी समत्ता ॥ ३३ ॥

॥ अह लेसज्झयण चोत्तीसइम अज्झयण ॥

लेसज्झयणं पवक्खामि, आणुपुव्विं जहक्कम । छण्हंपि कम्म लेसाण, अणुभावे सुहेण मे ॥ १ ॥
नामाइं वण्णरसग धफासपरिणामलक्खण । ठाण ठिइं गइं चाउ, लेसाण तु सुणेह मे ॥ २ ॥
किण्हा नीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेव य । सुक्कलेसा य छट्ठा य, नामाइं तु जहक्कम ॥ ३ ॥
जीमूयनिद्धसकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा । खजणनयणनिभा, किण्हलेसा उ वण्णओ ॥ ४ ॥
नीलासोगसकासा, चासपिच्छसमप्पभा । वेरुलियनिद्धसकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥ ५ ॥
अयसीपुप्फसकासा, कोइलच्छदसन्निभा । सुयतुण्डपईवनिभा, काउलेसा उ वण्णओ ॥ ६ ॥
हिंगुलधाउसकासा, तरुणाइच्चसन्निभा । सुयतुण्डपईवनिभा, तेऊलेसा उ वण्णओ ॥ ७ ॥
हरियालभेयसकासा, हलिद्दाभेयसमप्पभा सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ वण्णओ ॥ ८ ॥
संखककुन्दसकासा, खीरपूरसमप्पभा । रययहारसकासा, सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥ ९ ॥

जह कडुयतुम्बगरसो, निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो य किण्हाए नायव्वो ॥ १० ॥
जह तिगडुयस्स य रसो, तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ नीलाए नायव्वो ॥ ११ ॥
जह परिणअम्बगरसो, तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ काऊए नायव्वो ॥ १२ ॥
जह परिणयम्बगरसो, पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ तेऊए नायव्वो ॥ १३ ॥
वरवारुणीए वा रसो, विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
महुमेरयस्स व रसो, एत्तो पम्हाए परएण ॥ १४ ।

खज्जूरमुद्दियरसो, खीररसो खण्डसक्करसो वा । एत्तो वि अणतगुणो,रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥ १५ ॥
जह गोमडस्स गधो सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स।एत्तो वि अणतगुणो,लेसाण अप्पसत्थाण ॥ १६ ॥
जह सुरहिकुसुमगधो,गधवासाण पिस्समाणाण। एत्तो वि अणतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्ह पि ॥ १७ ॥
जह करगयस्स फासो, गोजिब्भाए य सागपत्ताण। एत्तो वि अणतगुणो, लेसाण अप्पसत्थाण ॥ १८ ॥
जह बूरस्स व फासो,नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाण। एत्तो वि अणतगुणो,पसत्थलेसाण तिण्हपि ॥ १९ ॥
तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहेकसीओ वा। दुसओ तेयालो वा, लेसाण होइ परिणामो ॥ २० ॥
पचासवप्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसु अविरओ य। तिव्वारम्भपरिणओ, खुद्दो साहसिओ नरो ॥ २१ ॥
निद्धन्धसपरिणामो, निस्ससो अजिइन्दिओ । एयजोगसमाउत्तो, किण्हलेस तु परिणमे ॥ २२ ॥
इस्सा अमरिस अतवो, अविज्जमाया अहीरिय । गेही पओसे य सढे, पमत्ते रसलोलुए ॥ २३ ॥
सायगवेसए य आरम्भाओ अविरओ,खुद्दो साहस्सिओ नरो। एयजोगसमाउत्तो,नीललेस तु परिणमे २४
वके वकसमायारे, नियडिल्ले अणुज्जुए । पलिउचगओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥ २५ ॥
उप्फासगदुट्ठवाई य, तेणे यावि य मच्छरी । एयजोगसमाउत्तो, काऊलेस तु परिणमे ॥ २६ ॥

(न)ीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले। विणीयविणए दन्ते, जोगव उवहाणव ॥ २७ ॥
पियधम्मे दढधम्मेऽवज्जभीरू हिएसए। एयजोगसमाउत्तो, तेउलेस तु परिणमे ॥ २८ ॥
पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए। पसन्तचित्ते दन्तप्पा, जोगव उवहाणव ॥ २९ ॥
(त)हा पयणुवाई य, उवसन्ते जिइन्दिए। एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेस तु परिणमे ॥ ३० ॥
(अ)ट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, धम्मसुक्काणि झायए। पसन्तचित्ते दन्तप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥ ३१ ॥
(स)रागे वीयरागे वा, उवसन्ते जिइन्दिए। एयजोगसमाउत्तो, सुक्कलेस तु परिणमे ॥ ३२ ॥
(अ)संखिज्जाणोसप्पिणीण, उस्सप्पिणीण जे समया। संखाईया लोगा, लेसाण हवन्ति ठाणाइं ॥ ३३ ॥
(मु)हुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किण्हलेसाए ॥ ३४ ॥
(मु)हुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥ ३५ ॥
(मु)हुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥ ३६ ॥
(मु)हुत्तद्धं तु जहन्ना, दोण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥ ३७ ॥
(मु)हुत्तद्धं तु जहन्ना, दस होन्ति य सागरा मुहुत्तहिय। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥ ३८ ॥
(मु)हुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥ ३९ ॥
(ए)सा खलु लेसाण, ओहेण ठिई वण्णिया होइ। चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥ ४० ॥
(द)स वाससहस्साइं, काऊए ठिई जहन्निया होइ। तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥ ४१ ॥
तिण्णुदही पलिओवमसंखभागो जहन्नेण नीलठिई। दस उदही पलिओवमअसंखभागं च उक्कोसा ॥ ४२ ॥
दसउदही पलिओवमअसंखभागं जहन्निया होइ। तेत्तीससागराइं उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥ ४३ ॥
(ए)सा नेरइयाण, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ। तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाण ॥ ४४ ॥
अन्तोमुहुत्तमद्धं, लेसाण जहिं जहिं जाउ। तिरियाण नराणं वा, वज्जित्ता केवलं लेसं ॥ ४५ ॥
(मु)हुत्तद्धं तु जहन्ना उक्कोसा होइ पुव्वकोडी ओ। नवहि वरिसेहि ऊणा, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥ ४६ ॥

एसा तिरियनराणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ।
तेण परं वोच्छामि, लेसाण ठिईउ देवाणं। ४७ ॥
दस वाससहस्साइं, किण्हाए ठिई जहन्निया होइ।
पलियमसंखिज्ज इमो, उक्कोसो होइ किण्हाए ॥ ४८ ॥
जा किण्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेण नीलाए, पलियमसंखं च उक्कोसो ॥ ४९ ॥
जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेण काऊए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥ ५० ॥

तेण परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगणाणं। भवणवइवाणमन्तरजोइसवेमाणियाणं च ॥ ५१ ॥
पलिओवमं जहन्नं, उक्कोसा सागरा उ दुन्नहिया। पलियमसंखेज्जेणं, होइ भागेण तेऊए ॥ ५२ ॥
दस वाससहस्साइं, तेऊए ठिई जहन्निया होइ। दुन्नुदही पलिओवमअसंखभागं च उक्कोसा ॥ ५३ ॥
जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं पम्हाए, दस उ मुहुत्ताहियाइं उक्कोसा ॥ ५४ ॥

जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया। जहन्नेण सुक्काए, तेत्तीस मुहुत्तमब्भहिया ॥ ५५ ॥
किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहमलेसाओ। एयाहि तिहिवि जीवो, दुग्गइं उववज्जई ॥ ५६ ॥
तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्निवि एयाओ धम्मलेसाओ। एयाहि तिहिवि जीवो, सुग्गइं उववज्जई ॥ ५७ ॥
लेसाहिं सव्वाहिं, पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु। न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ॥ ५८ ॥
लेसाहिं सव्वाहिं, चरिमे समयम्मि परिणयाहिं तु। न हु कस्सइ उववाओ परे भवे होइ जीवस्स ॥ ५९ ॥
अन्तमुहुत्तम्मि गए अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव। लेसाहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥ ६० ॥
तम्हा एयासि लेसाणं, आणुभावे वियाणिया। अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिट्ठिए मुणि ॥ ६१ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ लेसज्झयणं समत्तं ॥ ३४ ॥

॥ अह अणगारज्झयणं णाम पञ्चतीसइमं अज्झयणं ॥

सुणेह मे एगग्गमणा, मग्गं बुद्धेहि देसियं। जमायरन्तो भिक्खू, दुक्खाणन्त करे भवे ॥ १ ॥
गिहवासं परिच्चज्ज, पवज्जामस्सिए मुणी। इमे सङ्गे वियाणिज्जा, जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥ २ ॥
तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबम्भसेवणं। इच्छाकामं च लोभं च, संजओ परिवज्जए ॥ ३ ॥
मणोहरं चित्तघरं, मल्लधूवेण वासियं। सकवाडं पण्डुरुल्लोयं, मणसावि न पत्थए ॥ ४ ॥
इन्दियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए। दुक्कराइं निवारेउं, कामरागविवड्ढणे ॥ ५ ॥
सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व इक्कओ। पइरिक्के परकडे वा, वासं तत्थाभिरोयए ॥ ६ ॥
फासुयम्मि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए। तत्थ संकप्पए वासं भिक्खू परमसंजए ॥ ७ ॥
न सयं गिहाइं कुव्विज्जा, णेव अन्नेहिं कारए। गिहकम्मसमारम्भे भूयाणं दिस्सए वहो ॥ ८ ॥
तसाणं थावराणं च, सुहुमाण बादराण य। तम्हा गिहसमारम्भं, संजओ परिवज्जए ॥ ९ ॥
तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य। पाणभूयदयट्ठाए, न पए न पयावए ॥ १० ॥
जलधन्ननिस्सिया जीवा, पुढवीकट्ठनिस्सिया। हम्मन्ति भत्तपाणेसु तम्हा भिक्खु न पयावए ॥ ११ ॥
विसप्पे सव्वओ धारे, बहुपाणिविणासणे। नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइं न दीवए ॥ १२ ॥
हिरण्णं जायरूवं च, मणसा वि न पत्थए। समलेट्ठुकञ्चणे भिक्खू, विरए कयविक्कए ॥ १३ ॥
किणन्तो कइओ होइ, विक्किणन्तो य वाणिओ। कयविक्कयम्मि वट्टन्तो, भिक्खू न भवइ तारिसो ॥ १४ ॥
भिक्खियव्वं न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा। कयविक्कओ महादोसो भिक्खावत्ती सुहावहा ॥ १५ ॥
समुयाणं उञ्छमेसिज्जा, जहासुत्तमणिन्दियं। लाभालाभम्मि सन्तुट्ठे पिण्डवायं चरे मुणी ॥ १६ ॥
अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादन्ते अमुच्छिए। न रसट्ठाए भुञ्जिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥ १७ ॥
अच्चणं रयणं चेव, वन्दणं पूयणं तहा। इड्ढीसक्कारसम्माणं, मणसा वि न पत्थए ॥ १८ ॥
सुक्कज्झाणं झियाएज्जा, अणियाणे अकिंचणे। वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ॥ १९ ॥
निज्जूहिऊण आहारं, कालधम्मे उवट्ठिए। जहिऊण माणुसं बोन्दिं, पहू दुक्खे विमुच्चई ॥ २० ॥
निम्ममो निरहंकारो, वीयरागो अणासवो। संपत्तो केवलं नाणं, सासयं परिणिव्वुए ॥ २१ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ अणगारज्झयणं समत्तं ॥ ३५ ॥

॥ अह जीवाजीवविभत्ती णाम छत्तीसइम अज्झयण ॥

जीवाजीवविभत्तिं, सुणेह मे एगमणा इओ । ज जाणिऊण भिक्खू , सम्म जयइ संजमे ॥ १ ॥
जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए । अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए ॥ २ ॥
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा । परूवणा तेसि भवे, जीवाणमजीवाण य ॥ ३ ॥
रूविणो चेवरूवी य, अजीवा दुविहा भवे । अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणो य चउव्विहा ॥ ४ ॥
धम्मत्थिकाए तद्देसे, तप्पएसे य आहिए । अहम्मे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ॥ ५ ॥
आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए । अद्धासमए चेव, अरूवी दसहा भवे ॥ ६ ॥
धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया । लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥ ७ ॥
धम्माधम्मागासा, तिन्निवि एए अणाइया । अपज्जवसिया चेव, सव्वद्धं तु वियाहिया ॥ ८ ॥
समएवि संतइं पप्प, एवमेव वियाहिए । आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिएवि य ॥ ९ ॥
खन्धा य खन्धदेसा य, तप्पएसा तहेव य । परमाणुणो य बोधव्वा, रूविणो य चउव्विहा ॥ १० ॥
एगत्तेण पुहुत्तेण, खंधा य परमाणुणो । लोएगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥ ११ ॥
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ १२ ॥
संतइं पप्प तेऽणाई, अपज्जवसियावि य । ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया वि य ॥ १३ ॥
असंखकालमुक्कोसं,एको समओ जहन्नय । अजीवाण य रूवीण, ठिई एसा वियाहिया ॥ १४ ॥
अणंतकालमुक्कोसमेको, समओ जहन्नय । अजीवाण य रूवीण, अन्तरेयं वियाहियं ॥ १५ ॥
वण्णओ गन्धओ चेव,रसओ फासओ तहा । संठाणओ य विन्नेओ, परिणामो तेसि पंचहा ॥ १६ ॥
वण्णओ परिणया जे उ,पंचहा ते पकित्तिया। किण्हा नीला य लोहिया,हालिद्दा सुक्किला तहा ॥ १७ ॥
गन्धओ परिणया जे उ,दुविहा ते वियाहिया॥ सुब्भिगन्धपरिणामा,दुब्भिगन्धा तहेव य ॥ १८ ॥
रसओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया । तित्तकडुयकसाया, अम्बिला महुरा तहा ॥ १९ ॥
फासओ परिणया जे उ, अट्ठहा ते पकित्तिया। कक्खडा मउआ चेव, गरुया लहुया तहा ॥ २० ॥
सीया उण्हा य निद्धा य,तहा लुक्खा य आहिया॥ इय फासपरिणया एए,पुग्गला समुदाहिया ॥ २१ ॥
संठाणओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया। परिमण्डला य वट्टा य, तंसा चउरंसमायया ॥ २२ ॥
वण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २३ ॥
वण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २४ ॥
वण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओवि य ॥ २५ ॥
वण्णओ पीयए जे उ, भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २६ ॥
वण्णओ सुक्किले जे उ, भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २७ ॥
गन्धओ जे भवे सुब्भी, भइए से उ वण्णओ। रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २८ ॥
गन्धओ जे भवे दुब्भी, भइए से उ वण्णओ। रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २९ ॥
रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ३० ॥

रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३१ ॥
रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गधओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३२ ॥
रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ। गन्धओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३३ ॥
रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३४ ॥
फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३५ ॥
फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३६ ॥
फासए गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३७ ॥
फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३८ ॥
फासए सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३९ ॥
फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ४० ॥
फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ४१ ॥
फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ४२ ॥
परिमण्डलसठाणे, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४३ ॥
सठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४४ ॥
सठाणओ भवे तसे, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४५ ॥
सठाणओ जे चउरसे, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४६ ॥
जे आययसठाणे, भइए से वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४७ ॥
एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया। इत्तो जीवविभत्तिं, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ ४८ ॥
ससारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया। सिद्धाणेगविहा वुत्ता, त मे कित्तयओ सुण ॥ ४९ ॥
इत्थी पुरिससिद्धा य, तहेव य नपुसगा। सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ॥ ५० ॥
उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाइ य। उड्ढं अह तिरियं च, समुद्दम्मि जलम्मि य ॥ ५१ ॥
दस य नपुसएसु वीस इत्थियासु य। पुरिसेसु य अट्ठसय, समएणेगेण सिज्झई ॥ ५२ ॥
चत्तारि य गिहिलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य। सलिंगेण अट्ठसय, समएणेगेण सिज्झई ॥ ५३ ॥
उक्कोसोगाहणाए य, सिज्झन्ते जुगव दुवे। चत्तारि जहन्नाए, मज्झे अट्ठुत्तर सय ॥ ५४ ॥
चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे, तओ जले वीसमह तहेव य।
सय च अट्ठुत्तर तिरियलोए, समएणेगेण सिज्झई धुव ॥ ॥ ५५ ॥
कहिं पडिहया सिद्धा, कहिं सिद्धा पइट्ठिया। कहिं बोन्दिं, चइत्ताण, कत्थ गन्तूण सिज्झई ॥ ५६ ॥
अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया। इह बोन्दिं चइत्ताण, तत्थ ग तूण सिज्झई ॥ ५७ ॥
बारसहिं जोयणेहिं, सव्वट्ठस्सुवरिं भवे। ईसिपब्भारनामा, पुढवी छत्तसठिया ॥ ५८ ॥
पणयालसयसहस्सा, जोयणाण तु आयया। तावइय चेव वित्थिण्णा, तिगुणो तस्सेव परिरओ ॥ ५९ ॥
अट्ठजोयणबाहुला, सा मज्झम्मि वियाहिया। परिहायन्ती चरिम ते, मच्छियपत्ताउ तणुयरी ॥ ६० ॥
अज्जुणसुवण्णगमई, सा पुढवी निम्मला सहावेण।
उत्ताणगछत्तगसठिया य, भणिया जिणवरेहिं ॥ ६१ ॥

सङ्खङ्ककुन्दसंकासा, पण्डुरा निम्मला सुहा। सीयाए जोयणे तत्तो, लोयन्तो उ वियाहिओ ॥ ६२ ॥
जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे। तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥ ६३ ॥
तत्थ सिद्धा महाभागा, लोयग्गम्मि पइट्ठिया। भवपवञ्चओ मुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥ ६४ ॥
उस्सेहो जेसिं जो होइ, भवम्मि चरिमम्मि उ। तिभागहीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥ ६५ ॥
एगत्तेण साईया, अपज्जवसियावि य। पुहत्तेण अणाईया, अपज्जवसियावि य ॥ ६६ ॥
अरूविणो जीवघणा, नाणदंसणसन्निया। अउलं सुहं संपन्ना, उवमा जस्स नत्थि उ ॥ ६७ ॥
लोएगदेसे ते सव्वे, नाणदंसणसन्निया। संसारपारनित्थिण्णा, सिद्धिं वरगइं गया ॥ ६८ ॥
संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया। तसा य थावरा चेव, थावरा तिविहा तहिं ॥ ६९ ॥
पुढवी आउजीवा य, तहेव य वणस्सई। इच्चेए थावरा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ ७० ॥
दुविहा पुढवीजीवा य, सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ७१ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया। सण्हा खरा य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ॥ ७२ ॥
किण्हा नीला य रुहिरा य, हलिद्दा सुक्किला तहा। पण्डुपणगमट्टिया, खरा छत्तीसईविहा ॥ ७३ ॥

पुढवी य सक्करा वालुया य, उवले सिला य लोणूसे।
अय-तम्ब-तउय-सीसग-रुप्प-सुवण्णे य वइरे य ॥ ॥ ७४ ॥
हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला सासगंजण-पवाले।
अब्भपडल-ब्भवालुय, बायरकाए मणिविहाणे ॥ ॥ ७५ ॥

गोमेज्जए य रुयगे, अंके फलिहे य लोहियक्खे य। मरगय मसारगल्ले, भुयमोयग इन्दनीले य ॥ ७६ ॥
चन्दण गेरुय हंसगब्भे, पुलए सोगन्धिए य बोधव्वे। चन्दप्पहवेरुलिए, जलकन्ते सूरकन्ते य ॥ ७७ ॥
एए खरपुढवीए, भेया छत्तीसमाहिया। एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥ ७८ ॥
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा। इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ ७९ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ ८० ॥
बावीससहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे। आउठिई पुढवीणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥ ८१ ॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। कायठिई पुढवीणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ ८२ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, पुढवीजीवाण अन्तरं ॥ ८३ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ ८४ ॥
दुविहा आउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ८५ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया। सुद्धोदए य उस्से, हरतणू महिया हिमे ॥ ८६ ॥
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया। सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥ ८७ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ ८८ ॥
सत्तेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे। आउठिई आऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ ८९ ॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। कायठिई आऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ ९० ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, आऊजीवाण अन्तरं ॥ ९१ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ ९२ ॥

दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥ ९३ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया। साहारणसरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ॥ ९४ ॥
पत्तेगसरीराओऽणेगहा ते पकित्तिया। रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ॥ ९५ ॥
चलया पव्वगा कुहुणा, जलरुहा ओसही तहा। हरियकाया बोधव्वा, पत्तेगाइ वियाहिया ॥ ९६ ॥
साहारणसरीराओऽणेगहा ते पकित्तिया। आलुए मूलए चेव, सिंगबेरे तहेव य ॥ ९७ ॥
हरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई केयकन्दली। पलण्डुलसणकन्दे य, कन्दली य कुडुंबए ॥ ९८ ॥
लोहिणीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य। कन्दे य वज्जकन्दे य, कन्दे सूरणए तहा ॥ ९९ ॥
अस्सकण्णी य बोधव्वा, सीहकण्णी तहेव य। मुसुण्ढी य हलिद्दा, य णेगहा एवमायओ ॥ १०० ॥
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥ १०१ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १०२ ॥
दस चेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया पणगाण। वणप्फईण आउं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १०३ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १०४ ॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अन्तरं ॥ १०५ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १०६ ॥
इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया। इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ १०७ ॥
तेऊ वाऊ य बोधव्वा, उराला य तसा तहा। इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १०८ ॥
दुविहा तेऊजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ १०९ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ताणेगहा ते वियाहिया। इंगाले मुम्मुरे अगणी, अच्चिजाला तहेव य ॥ ११० ॥
उक्का विज्जू य बोधव्वा णेगहा एवमायओ। एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥ १११ ॥
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा। इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ ११२ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ ११३ ॥
तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया। आउठिई तेऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ ११४ ॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ ११५ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, तेऊजीवाण अन्तरं ॥ ११६ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ ११७ ॥
दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ११८ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, पञ्चहा ते पकित्तिया। उक्कलिया मण्डलिया, घणगुंजा सुद्धवाया य ॥ ११९ ॥
संवट्टगवाया यणेगहा एवमायओ। एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥ १२० ॥
सुहुमा सव्वलोगम्मि, एगदेसे य बायरा। इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ १२१ ॥
सन्तइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १२२ ॥
तिण्णेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे। आउठिई वाऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १२३ ॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। कायठिई वाऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १२४ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, वाऊजीवाण अन्तरं ॥ १२५ ॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। सठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १२६ ॥
उराला तसा जे उ, चउहा ते पकित्तिया। बेइन्दिय-तेइन्दिय-चउरो पचिन्दिया चेव ॥ १२७ ॥
बेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया। पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १२८ ॥
किमिणो सोमगला चेव, अलसा माइवाहया। वासीमुहा य सिप्पिया, सख सखणगा तहा ॥ १२९ ॥
पल्लोयाणुल्लया चेव, तहेव य वराडगा। जलूगा जालगा चेव, चन्दणा य तहेव य ॥ १३० ॥
इइ बेइन्दिया एएऽणेगहा एवमायओ। लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥ १३१ ॥
सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १३२ ॥
वासाइ वारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया। बेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १३३ ॥
सखिज्जकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय। बेइन्दियकायठिई, त काय तु अमुचओ ॥ १३४ ॥
अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय। बेइन्दियजीवाण, अन्तर च वियाहिय ॥ १३५ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। सठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १३६ ॥
तेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया। पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १३७ ॥
कुथुपिवीलिउड्डसा, उक्कलुद्देहिया तहा। तणहारकट्ठहारा य, मालुगा पत्तहारगा ॥ १३८ ॥
कप्पासट्ठिम्मि जायन्ति, दुगा तउसमिंजगा। सदावरी य गुम्मी य, बोधव्वा इन्दगाइया ॥ १३९ ॥
इन्दगोवगमाईयाणेगहा एवमायओ। लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥ १४० ॥
सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १४१ ॥
एगूणपण्णहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया। तेइन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १४२ ॥
सखिज्जकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय। तेइन्दियकायठिई, त काय तु अमुचओ ॥ १४३ ॥
अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय। तेइन्दियजीवाण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १४४ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। सठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १४५ ॥
चउरिन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया। पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १४६ ॥
अन्धिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा। भमरे कीडपयगे य, ढिंकुणे कुकुणे तहा ॥ १४७ ॥
कुक्कुडे भिंगीरीडी य, नन्दावत्ते य विच्छुए। डोले भिंगारी य, विरली अच्छिवेहए ॥ १४८ ॥

अच्छिले माहए अच्छिरोडए, विचित्ते चित्तपत्तए।
उहिंजलिया जलकारी य, नीया तन्तवगाइया ॥ ॥ १४९ ॥

इय चउरिन्दिया, एएऽणेगहा एवमायओ। लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥ १५० ॥
सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य। ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १५१ ॥
छच्चेव मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया। चउरिन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १५२ ॥
सखिज्जकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय। चउरिन्दियकायठिई, त काय तु अमुचओ ॥ १५३ ॥
अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय। चउरिन्दियजीवाण, अन्तर च वियाहिय ॥ १५४ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। सठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १५५ ॥
पचिन्दिया उ जे जीवा, चउव्विहा ते वियाहिया। नेरइयतिरिक्खा य, मणुया देवा य आहिया ॥ १५६ ॥
नेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसू भवे। रयणाभसक्कराभा, वालुयाभा य आहिया ॥ १५७ ॥

पंकाभा धूमाभा, तमा तमतमा तहा। इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥ १५८ ॥
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे उ वियाहिया। एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १५९ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि य ॥ १६० ॥
सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया। पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥ १६१ ॥
तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं ॥ १६२ ॥
सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। तइयाए जहन्नेणं, तिण्णेव सागरोवमा ॥ १६३ ॥
दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। चउत्थीए जहन्नेणं, सत्तेव सागरोवमा ॥ १६४ ॥
सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। पंचमीए जहन्नेणं, दस चेव सागरोवमा ॥ १६५ ॥
बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। छट्ठीए जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥ १६६ ॥
तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। सत्तमाए जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥ १६७ ॥
जा चेव य आउठिई, नेरइयाणं वियाहिया। सा तेसिं कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥ १६८ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, नेरइयाणं अन्तरं ॥ १६९ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १७० ॥

पंचिन्दियतिरिक्खाओ, दुविहा ते वियाहिया।
सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ, गब्भवक्कन्तिया तहा ॥ ॥ १७१ ॥

दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा तहा। नहयरा य बोधव्वा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १७२ ॥
मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तहा। सुसुमारा य बोधव्वा, पंचहा जलयराहिया ॥ १७३ ॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया। एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १७४ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १७५ ॥
एगा य पुव्वकोडी, उक्कोसेण वियाहिया। आउठिई जलयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १७६ ॥
पुव्वकोडिपुहत्तं तु, उक्कोसेण वियाहिया। कायठिई जलयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥ १७७ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, जलयराणं अन्तरं ॥ १७८ ॥
चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे। चउप्पया चउविहा, ते मे कित्तयओ सुण ॥ १७९ ॥
एगखुरा दुखुरा चेव, गण्डीपयसणहप्पया। हयमाइगोणमाइगयमाइसीहमाइणो ॥ १८० ॥
भुओरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे। गोहाई अहिमाई य, एक्केक्काणेगहा भवे ॥ १८१ ॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया। एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १८२ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १८३ ॥
पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया। आउठिई थलयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १८४ ॥
पुव्वकोडिपुहत्तेणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया। कायठिई थलयराणं, अन्तरं तेसिमं भवे ॥ १८५ ॥
कालमणन्तमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, थलयराणं तु अन्तरं ॥ १८६ ॥

चम्मे उ लोमपक्खी य, तइया समुग्गपक्खिया।
विययपक्खी य बोधव्वा, पक्खिणो य चउव्विहा ॥ ॥ १८७ ॥

लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया। ... विभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १८८ ॥

सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य । ठिई पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १८९ ॥
पलिओवमस्स भागो, असखेज्जइमो भवे । आउठिई खहयराण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९० ॥
असखभाग पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया । पुव्वकोडीपुहत्तेण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९१ ॥
ठिई खहयराण, अन्तरे तेसिमे भवे । काल अणन्तकोस, मुक्कोस, अन्तोमुहुत्त, जहन्नय ॥ १९२ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ । सठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १९३ ॥
मणुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण । समुच्छिमा य मणुया, गब्भवक्कन्तिया तहा ॥ १९४ ॥
गब्भवक्कन्तिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया । कम्मअकम्मभूमा य, अन्तरद्दीवया तहा ॥ १९५ ॥
पन्नरस तीसविहा, भेया अट्ठवीसइ । सखा उ कम्मसो तेसिं, इइ एसा वियहिया ॥ १९६ ॥
समुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ वियाहिओ । लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया ॥ १९७ ॥
सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य । ठिई पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १९८ ॥
पलिओवमाउ तिण्णवि, असखेज्जइमो भवे । आउट्ठिई मणुयण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९९ ॥
पलिओवमाइ तिण्णि उ, उक्कोसेण उ साहिया । पुव्वकोटिपुहत्तेण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ २०० ॥
कायठिई मणुयाण, अन्तर तेसिम भवे । अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ॥ २०१ ॥
एएसिं, वण्णओ चेव, ग धओ रसफासओ । सठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ २०२ ॥
देवा चउविहा वुत्ता, तें मे कित्तयओ सुण । भोमिज्जवाणमन्तरजोइसवेमाणिया तहा ॥ २०३ ॥
दसहा उ भवणवासी, अट्ठहा वणचारिणो । पचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥ २०४ ॥

असुरा नागसुवण्णा, विज्जू अग्गी वियाहिया ।
दीवोदहिदिसा वाया, थणिया भवणवासिणो ॥ ॥ २०५ ॥
पिसायभूया जक्खा य, रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा ।
महोरगा य गन्धव्वा, अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥ ॥ २०६ ॥
चन्दा सूरा य नक्खत्ता, गहा तारागणा तहा ।
ठिया विचारिणो चेव, पचहा जोइसालया ॥ ॥ २०७ ॥

वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया । कप्पोवगा य बोधव्वा, कप्पाईया तहेव य ॥ २०८ ॥
कप्पोवगा बारसहा, सोहम्मीसाणगा तहा । सणकुमारमाहिन्दबम्भलोगा य लन्तगा ॥ २०९ ॥
महासुक्का सहस्सारा, आणया पाणया तहा । आरणा अच्चुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥ २१० ॥
कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया । गेविज्जाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥ २११ ॥
हेट्ठिमा हेट्ठिमा चेव, हेट्ठिमा मज्झिमा तहा । हेट्ठिमा उवरिमा चेव, मज्झिमा हेट्ठिमा तहा ॥ २१२ ॥

मज्झिमा मज्झिमा चेव, मज्झिमा उवरिमा तहा ।
उवरिमा हेट्ठिमा चेव, उवरिमा मज्झिमा तहा ॥ ॥ २१३ ॥

उवरिमा उवरिमा चेव, इय गेविज्जगा सुरा । विजया वेजयन्ता य, जयन्ता अपराजिया ॥ २१४ ॥
सव्वत्थसिद्धगा चेव, पचहाणुत्तरा सुरा । इय वेमाणिया एएऽणेगहा एवमायओ ॥ २१५ ॥
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वेवि वियाहिया । इत्तो कालविभाग तु, वुच्छ तेसिं चउव्विहं ॥ २१६ ॥
सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य । ठिइ पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि य ॥ २१७ ॥

साहीय सागर एक्क, उक्कोसेण ठिई भवे। भोमेज्जाणं जहन्नेण, दसवाससहस्सिया ॥ २१८ ॥
पलिओवममेगं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। वन्तराण जहन्नेण, दसवाससहस्सिया ॥ २१९ ॥
पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं। पलिओवमट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥ २२० ॥
दो चेव सागराइं, उक्कोसेण वियाहिया। सोहम्मम्मि जहन्नेण, एगं च पलिओवमं ॥ २२१ ॥
सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया। ईसाणम्मि जहन्नेण, साहियं पलिओवमं ॥ २२२ ॥
सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे। सणंकुमारे जहन्नेण, दुन्नि उ सागरोवमा ॥ २२३ ॥
साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेण ठिई भवे। माहिन्दम्मि जहन्नेण, साहिया दुन्नि सागरा ॥ २२४ ॥
दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। बम्भलोए जहन्नेण, सत्त ऊ सागरोवमा ॥ २२५ ॥
चउदस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। लन्तगम्मि जहन्नेण, दस उ सागरोवमा ॥ २२६ ॥
सत्तरस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। महासुक्के जहन्नेण, चोद्दस सागरोवमा ॥ २२७ ॥
अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। सहस्सारम्मि जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥ २२८ ॥
सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। आणयम्मि जहन्नेण, अट्ठारस सागरोवमा ॥ २२९ ॥
वीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। पाणयम्मि जहन्नेण, सागरा अउणवीसई ॥ २३० ॥
सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। आरणम्मि जहन्नेण, वीसई सागरोवमा ॥ २३१ ॥
बावीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। अच्चुयम्मि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ॥ २३२ ॥
तेवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। पढमम्मि जहन्नेण, बावीसं सागरोवमा ॥ २३३ ॥
चउवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। बिइयम्मि जहन्नेण, तेवीसं सागरोवमा ॥ २३४ ॥
पणवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। तइए जहन्नेण, चउवीसं सागरोवमा ॥ २३५ ॥
छवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। चउत्थम्मि जहन्नेण, सागरा पणुवीसई ॥ २३६ ॥
सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। पञ्चमम्मि जहन्नेण, सागरा उ छवीसई ॥ २३७ ॥
सागरा अट्ठवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। छट्ठम्मि जहन्नेण, सागरा सत्तवीसई ॥ २३८ ॥
सागरा अउणतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। सत्तमम्मि जहन्नेण, सागरा अट्ठवीसई ॥ २३९ ॥
तीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। अट्ठमम्मि जहन्नेण, सागरा अउणतीसई ॥ २४० ॥
सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। नवमम्मि जहन्नेण, तीसई सागरोवमा ॥ २४१ ॥
तेत्तीसा सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। चउसुपि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कतीसई ॥ २४२ ॥
अजहन्नमणुक्कोसा, तेत्तीस सागरोवमा। महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥ २४३ ॥
जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया। सा तेसिं कायठिई, जहन्नमुक्कोसिया भवे ॥ २४४ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, देवाणं हुज्ज अन्तरं ॥ २४५ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ २४६ ॥
संसारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया। रूविणो चेवरूवी य, अजीवा दुविहावि य ॥ २४७ ॥
इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्दहिऊण य। सव्वनयाणमणुमए, रमेज्ज संजमे मुणी ॥ २४८ ॥
तओ बहूणि वासाणि, सामण्णमणुपालिय। इमेण कम्मजोगेण, अप्पाणं संलिहे मुणी ॥ २४९ ॥
बारसेव उ वासाइं, संलेहुक्कोसिया भवे। छम्मासा य जहन्निया ॥ २५० ॥

पढमे वासचउक्कम्मि, विगई-निज्जूहणं करे । बिइए वासचउक्कम्मि, विचित्तं तु तवं चरे ॥ २५१ ॥
एगन्तरमायामं, कट्टु संवच्छरे दुवे । तओ संवच्छरद्धं तु, नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥ २५२ ॥
तओ संवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे । परिमियं चेव आयामं, तम्मि संवच्छरे करे ॥ २५३ ॥
कोडीसहियमायामं, कट्टु, संवच्छरे मुणी । मासद्धमासिएणं तु, आहारेण तवं चरे ॥ २५४ ॥

कन्दप्पमाभिओगं च, किब्बिसियं मोहमासुरत्तं च ।
एयाउ दुग्गईओ, मरणम्मि विराहिया होन्ति ॥ ॥ २५५ ॥

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा उ हिंसगा । इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥ २५६ ॥
सम्मद्दंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा । इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं सुलहा भवे बोही ॥ २५७ ॥

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा कण्हलेसमोगाढा ।
इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥ ॥ २५८ ॥

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं करेन्ति भावेण । अमला असंकिलिट्ठा, ते होन्ति परित्तसंसारी ॥ २५९ ॥

बालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव य बहूणि ।
मरिहन्ति ते वराया जिणवयणं जे न जाणन्ति ॥ ॥ २६० ॥

बहुआगमविन्नाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही । एएण कारणेणं, अरिहा आलोयणं सोउं ॥ २६१ ॥
कन्दप्पकुक्कुयाइं, तह सीलसहावहासविगहाइं । विम्हावेन्तो य परं, कन्दप्पं भावणं कुणइ ॥ २६२ ॥
मन्ताजोगं काउं, भूईकम्मं च जे पउंजन्ति । साय-रस-इड्ढिहेउं अभिओगं भावणं कुणइ ॥ २६३ ॥
नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूणं । माई अवण्णवाई, किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥ २६४ ॥
अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तम्मि होइ पडिसेवी । एएहि कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणइ ॥ २६५ ॥

सत्थग्गहणं विसभक्खणं च जलणं च जलपवेसो य ।
अणायारभण्डसेवा, जम्मणमरणाणि बंधन्ति ॥ ॥ २६६ ॥

इय पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए । छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धीयसंवुडे ॥ २६७ ॥
त्ति बेमि ॥ जीवाजीवविभत्ती समत्ता ॥ ३६ ॥

॥ इअ उत्तरज्झयण सुत्त समत्त ॥



॥ णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

॥ सिरि-दसवेआलियं-सुत्तं ॥

॥ दुमपुप्फिया पढम अज्झयण ॥

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो । देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं । ण य पुप्फं किलामेइ, सो अ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो । विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥
वयं च वित्तिं लब्भामो, ण य कोइ उवहम्मइ । अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥
महुगार(रा)समा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया । नाणपिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥

त्ति बेमि ॥ दुमपुप्फिया पढममज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह सामण्णपुव्वयं दुइअं अज्झयणं ॥

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए । पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥
वत्थगंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य । अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥
जे य कंते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठि कुव्वइ । साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥
समाइ पेहाइ परिव्वयंतो, सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।
न सा महं नो वि अहं वि तीसे, इच्चेव ताओ विणइज्ज रागं ॥ ॥ ४ ॥
आयावयाही चय सोगमल्लं, कामे कमाही कमियं खु दुक्खं ।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ॥ ५ ॥
पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं । नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥ ६ ॥
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा । वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥
अहं च भोगरायस्स तं चऽसि अंधगवण्हिणो । मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ । वायाविद्धो व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥
तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाइ सुभासियं । अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥
एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा । विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥ ११ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ सामण्णपुव्वयं नाम अज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह खुड्डयायारकहा तइम अज्झयण ॥

संजमे सुट्ठिअप्पाण, विप्पमुक्काण ताइण। तेसिमेयमणाइण्ण, निग्गथाण महेसिण ॥ १ ॥
उद्देसिय कीयगड, नियागमभिहडाणि य । राइभत्ते सिणाणे य, गधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥
सनिही गिहिमत्ते य, रायपिंडे किमिच्छए। सबाहणा दतपहोयणा य, सपुच्छणा देहपलोयणा य ॥ ३ ॥
अट्ठावए य नालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए। तेगिच्छ पाहणापाए, समारभ च जोइणो ॥ ४ ॥
सिज्झायरपिंड च, आसदीपलियकए। गिहतरनिसिज्झा य, गायस्सुवट्टणाणि य ॥ ५ ॥
गिहिणो वेआवडिय, जा य आजीववत्तिया। तत्तानिव्वुडभोइत्त, आउरस्सरणाणि य ॥ ६ ॥
मूलए सिंगबेरे य, उच्छुखडे अनिव्वुडे। कदे मूले य सचित्ते, फले बीए य आमए ॥ ७ ॥
सोवच्चले सिंधवे लोणे, रोमालोणे य आमए। समुद्दे पसुखारे य, कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
धूवणे त्ति वमणे य, वत्थीकम्मविरेयणे। अजणे दतवणे य, गायब्भगविभूसणे ॥ ९ ॥
सव्वमेयमणाइन्न, निग्गथाण महेसिणं। सजमम्मि अ जुत्ताण, लहुभूयविहारिण ॥ १० ॥
पचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु सजया। पचनिग्गहणा धीरा, निग्गथा उज्जुदसिणो ॥ ११ ॥
आयावयति गिम्हेसु, हेमतेसु अवाउडा। वासासु पडिसलीणा, सजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
परीसहरिऊदता, धूअमोहा जिइंदिया। सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥ १३ ॥
दुक्कराइ करित्ताण, दुस्सहाइ सहित्तु य। केइत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झन्ति नीरया ॥ १४ ॥
खवित्ता पुव्वकम्माइ, सजमेण तवेण य। सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुडे ॥ ॥ १५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ खुड्डयायारकहा नाम तइयमज्झयण ॥

॥ अह छज्जीवणियानाम चउत्थ अज्झयण ॥

सुअ मे आउसतेणं भगवया एवमक्खाय, इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअ मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपण्णत्ती ॥ १ ॥ कयरा खलु साछज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअ मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपण्णत्ती ॥ २ ॥ इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअ मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपन्नत्ती ॥ तजहा—पुढविकाइया १, आउकाइया २, तेउकाइया ३, वाउकाइया ४, वणस्सइकाइया ५, तसकाइया ६। पुढवी चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण। आऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण। वाऊ चित्तमत मक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण। वाऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थपरिणएण। वणस्सई चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण तजहा—अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खधबीया, बीयरुहा, समुच्छिमा, तणलया, वणस्सइकाइया, सबीया चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण। से जे पुण इमे

अणेगे बहवे तसा पाणा, तंजहा–अंडया, पोयया, जराउया, रसया, ससेइमा, सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया, जेसिं केसिंचि पाणाण, अभिक्कंत, पडिक्कंत, संकुचिय, पसारिय, रुय, भंत, तसिय, पलाइय आगइगइविन्नाया, जे अ कीडपयङ्गा, जा य कुंथुपिपीलिया, सव्वे बेइंदिया, सव्वे तेइंदिया, सव्वे चउरिंदिया, सव्वे पंचिंदिया, सव्वे तिरिक्खजोणिया, सव्वे नेरइया, सव्वे मणुआ, सव्वे देवा, सव्वे पाणा, परमाहम्मिआ, एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चइ। इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं नेव सयं दंडं समारंभिज्जा, नेवन्नेहिं दंडं समारंभाविज्जा, दंडं समारंभन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥

पढमे भन्ते! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! पाणाइवायं पच्चक्खामि। से सुहुमं वा, बायरं वा, तसं वा, थावरं वा, नेव सयं पाणे अइवाइज्जा, नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि। पढमे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ १ ॥

अहावरे दुच्चे भन्ते! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! मुसावायं पच्चक्खामि। से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेव सयं मुसं वइज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायाविज्जा, मुसं वयन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि। दुच्चे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ २ ॥

अहावरे तच्चे भन्ते! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि। से गामे वा, नगरे वा, रण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा, नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा, अदिन्नं गिण्हन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि। तच्चे भन्ते! महव्वए उवट्ठियो मि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भन्ते! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! पच्चक्खामि। से दिव्वं वा, माणुसं वा, तिरिक्खजोणियं वा, नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि। चउत्थे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥ ४ ॥

अहावरे पञ्चमे भन्ते! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं। सव्वं भंते! परिग्गहं पच्चक्खामि। से अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा। नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा,

नेवन्नेहिं परिग्गह परिगिण्हन्ते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न समणुजाणामि, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि। पञ्चमे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे भन्ते! वए राइभोअणाओ वेरमण। सव्व भन्ते! राइभोयण पच्चक्खामि। से असण वा, पाण वा, खाइम वा, साइमं वा। नेव सय राइ भुजिज्जा, नेव राइ भुजिज्जा, नेवन्नेहिं राइ भुजाविज्जा, राइ भुजतेऽवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि। छट्ठे भंते! वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमण ॥६॥ इच्चेयाइ पचमहव्वयाइ राइभोअणवेरमणछट्ठाइ अत्तहियट्ठियाए उवसपज्जित्ता ण विहरामि ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिल वा, लेट्टु वा, ससरक्ख वा काय, ससरक्ख वा वत्थ, हत्थेण वा, पाएण वा, कट्ठेण किलिंचेण वा, अगुलियाए वा, सिलागाए वा, सिलागहत्थेण वा न आलिहिज्जा, न विलिहिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिंदिज्जा, अन्न न आलिहाविज्जा, न विलिहाविज्जा, न घटाविज्जा, न भिंदाविज्जा, अन्न आलिहत वा, विलिहत वा, घट्टत वा, भिंदत वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि तस्स। भंते! पडिक्कमामि उिंदामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ १ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदग वा, ओस वा, हिम वा, महिय वा, करग वा, हरितणुग वा, सुद्धोदग वा, उदउल्ल वा वत्थ, ससिणिद्ध वा काय, ससिणिद्ध वा वत्थ न आमुसिज्जा, न सफुसिज्जा, न आवीलिज्जा, न पवीलिज्जा, न अक्खोडिज्जा, न पक्खोडिज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्नं न आमुसाविज्जा, न सफुसाविज्जा, न आवीलाविज्जा, न पवीला विज्जा, न अक्खोविज्जा, न पक्खोडाविज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्न आमुसत वा, सफुसत वा, आवीलत वा, पवीलत वा, अक्खोडत वा, पक्खोडत वा, आयावन्त वा, पयावन्त वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए, तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥२॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से अगणिं वा, इगाल वा, मुम्मुर वा, अच्चिं वा, जाल वा, अलाय वा, सुद्धागणिं वा, उक्क वा, न उजिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिंदिज्जा, न उज्जालिज्जा, न पज्जालिज्जा, न निव्वाविज्जा, अन्न न उज्जाविज्जा, न घटाविज्जा, न भिंदाविज्जा, न

उज्जालाविज्जा, न पज्जालाविज्जा, न निव्वाविज्जा, अन्न उज्जन्त वा, घट्टन्त वा, भिदन्त वा, उज्जालन्त वा, पज्जालन्त वा, निव्वावन्त वा, न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्त पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ३ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहुयणेण वा, तालियटेण वा, पत्तेण वा, पत्तभंगेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुणहत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकण्णेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा काय, बाहिर वा वि पुग्गल न फुमिज्जा, न वीएज्जा, अन्न न फुमाविज्जा, न वीआविज्जा, अन्न फुमन्त वा, वीअन्त वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ४ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से बीएसु वा, बीयपइट्ठेसु वा, रूढेसु वा, रूढपइट्ठेसु वा, जाएसु वा, जायपइट्ठेसु वा, हरिएसु हरियपइट्ठेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नपइट्ठेसु वा, सचित्तेसु वा, सचित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा, न निसीइज्जा, न तुअट्टिज्जा, अन्न न गच्छाविज्जा, न चिट्ठाविज्जा, न निसीआविज्जा, न तुअट्टाविज्जा, अन्न गच्छन्त वा, चिट्ठन्त वा, निसीअन्त वा, तुयट्टन्त वा न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्त पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ५ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीड वा, पयग वा, कुथु वा, पिपीलिय वा, हत्थसि वा, पायसि वा, बाहुसि वा, उरुसि वा, उदरसि वा, सीससि वा, वत्थसि वा, पडिग्गहसि वा, कवलसि वा, पायपुच्छणसि वा, रयहरणसि वा, गुच्छगसि वा, उडगसि वा दडगसि वा, पीढगसि वा, फलगसि वा, सथारगसि वा, अन्नयरसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ सजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिअ पमज्जिअ एगतमवणिज्जा, नो ण सघायमावज्जिज्जा ॥ ६ ॥

अजय चरमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बन्धइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ १ ॥
अजय चिट्ठमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ २ ॥
अजय आसमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बन्धइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ३ ॥
अजय सयमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ४ ॥
अजय भुजमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ५ ॥
अजय भासमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ६ ॥

कह चरे कह चिट्ठे, कहमासे कह सए। कह भुजन्तो भासतो, पावकम्म न बधइ ॥ ७ ॥
जय चरे जय चिट्ठे, जयमासे जय सए। जय भुजन्तो भासतो, पावकम्म न बधइ ॥ ८ ॥
सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्म भूयाइ पासओ। पिहिआसवस्स दतस्स, पावकम्म न बधइ ॥ ९ ॥
पढम नाण तओ दया, एव चिट्ठइ सव्वसजए। अन्नाणी कि काही, किं वा नाही सेयपावग ॥ १० ॥
सोच्चा जाणइ कल्लाण, सोच्चा जाणइ पावग। उभय पि जाणइ सोच्चा, ज सेय त समायरे ॥ ११ ॥
जो जीवे वि न याणइ, अजीवे वि न याणइ। जीवाजीवे अयाणतो, कह सो नाहीइ सजम ॥ १२ ॥
जो जीवे वियाणेइ, अजीवे वि वियाणइ। जीवाजीवे वियाणतो, सो हु नाहीइ सजम ॥ १३ ॥
जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियाणइ। तया गइ बहुविह, सव्व जीवाण जाणइ ॥ १४ ॥
जया गइ बहुविह सव्वजीवाण जाणइ। तया पुण्ण च पाव च, बंध मुक्ख च जाणइ। १५ ॥
जया पुण्ण च पाव च, बध मुक्ख च जाणइ। तया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥
जया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे। तया चयइ सजोग, सब्भिन्तर बाहिर ॥ १७ ॥
जया चयइ सजोग, सब्भितर बाहिर। तया मुड भवित्ताण, पव्वइए अणगारिय ॥ १८ ॥
जया मुडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारिय। तया सवरमुक्किट्ठ, धम्म फासे अणुत्तर ॥ १९ ॥
जया सवरमुक्किट्ठ, धम्म फासे अणुत्तर। तया धुणइ कम्मरय, अबोहिकलुस कड ॥ २० ॥
जया धुणइ कम्मरय, अबोहिकलुस कड। तया सव्वत्तग नाण, दसण चाभिगच्छइ ॥ २१ ॥
जया सव्वत्तग नाण, दसण चाभिगच्छइ। तया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥
जया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली। तया जोगे निरुभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ॥ २३ ॥
जया जोगे निरुभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ। तया कम्म खवित्ताण, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥
जया कम्म खवित्ताण, सिद्धिं गच्छइ नीरओ। तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ ॥ २५ ॥

सुह सायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स।
उच्छोलणापहोअस्स, दुलहा सुगई तारिसगस्स ॥ २६ ॥
तवोगुणपहाणस्स, उज्जुमइ खन्तिसजमरयस्स।
परीसहे जिणतस्स, सुलहा सुगई तारिसगस्स ॥ २७ ॥
पच्छा वि ते पयाया, खिप्प गच्छंति अमरभवणाइ।
जेसिं पिओ तवो सजमो अ, खती अ बभचेर च ॥ २८ ॥
इच्चेय छज्जीवणिअ, सम्मद्दिट्ठी सया जए।
दुलह लहित्तु सामण्ण, कम्मुणा न विराहिज्जासि ॥ २९ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ छज्जीवणिआ णाम चउत्थ अज्झयण समत्त ॥ ४ ॥

॥ अह पिंडेसणा णाम पंचमज्झयणं ॥

संपत्ते भिक्खकालम्मि, असंभंतो अमुच्छिओ। इमेण कमजोगेण, भत्तपाणं गवेसए ॥ १ ॥
से गामे वा नगरे वा, गोअरग्गगओ मुणी। चरे मंदमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेअसा ॥ २ ॥
पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे। वज्जंतो बीअहरियाइं, पाणे अ दगमट्टिअं ॥ ३ ॥
ओवायं विसमं खाणुं, विज्जलं परिवज्जए। संकमेण न गच्छिज्जा, विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥
पवडंते व से तत्थ, पक्खलंते व संजए। हिंसेज्ज पाणभूयाइं, तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥
तम्हा तेण न गच्छिज्जा, संजए सुसमाहिए। सइ अण्णेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥
इंगालं छारिअं रासिं, तुसरासिं च गोमयं। ससरक्खेहिं पाएहिं, संजओ तं नइक्कमे ॥ ७ ॥
न चरेज्ज वासे वासंते, महियाए व पडंतिए। महावाए व वायंते, तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥
न चरेज्ज वेससामंते, बंभचेरवसाणुए। बंभयारिस्स दंतस्स, होज्जा तत्थ विसोत्तिआ ॥ ९ ॥
अणायणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं। होज्ज वयाणं पीला, सामण्णम्मि अ संसओ ॥ १० ॥
तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं। वज्जए वेससामंतं, मुणी एगंतमस्सिए ॥ ११ ॥
साणं सूइअं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं। संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए ॥ १२ ॥
अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले। इंदिआइं जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३ ॥
दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो अ गोअरे। हसंतो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया ॥ १४ ॥
आलोअं थिग्गलं दारं, संधिं दगभवणाणि अ। चरंतो न विणिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए ॥ १५ ॥
रन्नो गिहवईणं च, रहस्सारक्खिआण य। संकिलेसकरं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥ १६ ॥
पडिकुट्ठकुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए। अचिअत्तकुलं न पविसे, चिअत्तं पविसे कुलं ॥ १७ ॥
साणीपावारपिहिअं, अप्पणा नावपंगुरे। कवाडं नो पणुल्लिज्जा, उग्गहंसि अजाइआ ॥ १८ ॥
गोअरग्गपविट्ठो अ, वच्चमुत्तं न धारए। ओगासं फासुअं नच्चा, अणुन्नविय वोसिरे ॥ १९ ॥
णीयं दुवारं तमसं, कुट्ठगं परिवज्जए। अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥ २० ॥
जत्थ पुप्फाइं बीआइं, विप्पइण्णाइं कोट्ठए। अहुणोवलित्तं उल्लं, दट्ठूणं परिवज्जए ॥ २१ ॥
एलगं दारगं साणं, वच्छगं वा वि कुट्ठए। उल्लंघिआ न पविसे, विऊहित्ताण व संजए ॥ २२ ॥
असंसत्तं पलोइज्जा, नाइदूरावलोअए। उप्फुल्लं न विणिज्झाए, निअट्टिज्ज अयंपिरो ॥ २३ ॥
अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोअरग्गगओ मुणी। कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मिअं भूमिं परक्कमे ॥ २४ ॥
त[illegible] पडिलेहिज्जा, भूमिभागविअक्खणो। सिणाणस्स य वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए ॥ २५ ॥
दगमट्टिअआयाणे, बीआणि हरिआणि अ। परिवज्जंतो चिट्ठिज्जा, सव्विंदिअसमाहिए ॥ २६ ॥
तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहारे पाणभोअणं। अकप्पिअं न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअं ॥ २७ ॥
आहरंती सिआ तत्थ, परिसाडिज्ज भोअणं। दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ २८ ॥
संमद्दमाणी पाणाणि, बीआणि हरिआणि अ। असंजमकरिं नच्चा, तारिसिं परिवज्जए ॥ २९ ॥
साहट्टु निक्खिवित्ताणं, सच्चित्तं घट्टियाणि य। तहेव समणट्ठाए, उदगं संपणुल्लिया ॥ ३० ॥

ओगाहइत्ता चलइत्ता, आहारे पाणभोअण । दिंतिअ पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ३१ ॥
पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ३२ ॥
एव उदउल्ले ससिणिद्धे, ससरक्खे मट्टिआओसे। हरिआले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे ॥ ३३ ॥
गेरुअवन्निअसेढिअ, सोरट्ठिअपिट्ठकुक्कुसकए अ । उक्किट्ठमससट्ठे, ससट्ठे चेव बोद्धव्वे ॥ ३४ ॥
असंसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा । दिज्जमाण न इच्छिज्जा, पच्छाकम्म जहिं भवे ॥ ३५ ॥
ससट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा । दिज्जमाण पडिच्छिज्जा, ज तत्थेसणिय भवे ॥ ३६ ॥
दुण्ह तु भुजमाणाण, एगो तत्थ निमतए । दिज्जमाण न इच्छिज्जा, छद से पडिलेहए ॥ ३७ ॥
दुण्ह भुजमाणाण, दो वि तत्थ निमतए । दिज्जमाण पडिच्छिज्जा, ज तत्थेसणिय भवे ॥ ३८ ॥
गुव्विणीए उवण्णत्थ, विविह पाणभोअण । भुजमाण विवज्जिज्जा, भुत्तसेस पडिच्छए ॥ ३९ ॥
सिआ य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी । उट्ठिआ वा निसीइज्जा, निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥ ४० ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ४१ ॥
थणग पिज्जमाणी, दारग वा कुमारिअ । त निक्खिवित्तु रोअत, आहारे पाणभोअण ॥ ४२ ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिय । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ४३ ॥
ज भवे भत्तपाण तु, कप्पाकप्पम्मि सकिय । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ४४ ॥
दगवारएण पिहिअ, नीसाए पीढएण वा । लोढेण वा विलेवेण, सिलेसेण वा केणइ ॥ ४५ ॥
त च उब्भिदिआ दिज्जा, समणट्ठा एव दावए । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ४६ ॥
असण पाणग वावि, खाइम साइम तहा । ज जाणिज्जा सुणिज्ज वा, दाणट्ठा पगड इम ॥ ४७ ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ४८ ॥
असण पाणग वावि, खाइम साइम तहा । ज जाणिज्जा सुणिज्जा वा, पुण्णट्ठा पगड इम ॥ ४९ ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ५० ॥
असण पाणग वावि, खाइम साइम तहा । ज जाणिज्जा सुणिज्जा वा, वणिमट्ठा पगड इम ॥ ५१ ॥
त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ५२ ॥
असण पाणग वावि, खाइम साइम तहा । ज जाणिज्ज सुणिज्जा वा, समणट्ठा पगड इम ॥ ५३ ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ५४ ॥
उद्देसिय कीयगड, पूइकम्म च आहड । अज्झोअरपामिच्च, मीसजाय विवज्जए ॥ ५५ ॥
उग्गम से अ पुच्छिज्जा, कस्सट्ठा केण वा कड। सुच्चा निस्सकिय सुद्ध, पडिगाहिज्ज सजए ॥ ५६ ॥
असण पाणग वावि, खाइम साइम तहा । पुप्फेसु हुज्ज उम्मीस, बीएसु हरिएसु वा ॥ ५७ ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ५८ ॥
असण पाणग वावि, खाइम साइम तहा । उदगम्मि हुज्ज निक्खित्त, उत्तिंगपणगेसु वा ॥ ५९ ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, नमे कप्पइ तारिस ॥ ६० ॥

असण पाणग वावि, खाइम साइम तहा ।
उम्मि (अगणिम्मि) होज्ज निक्खित्त, त च सघट्टिआ दए ॥ ॥ ६१ ॥

त भवे भत्तपाण तु, संजयाण अकप्पिअ। दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ६२ ॥

एव उस्सिक्किया ओसक्किया, उज्जालिआ पज्जालिआ निव्वाविया।
उस्सिंचिया निस्सिंचिया, उव्वत्तिया (उवत्तिया) ओयारिया दए ॥ ॥ ६३ ॥

त भवे भत्तपाण तु, संजयाण अकप्पिअ। दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ६४ ॥

हुज्ज कट्ठ सिल वावि, इट्टाल वावि एगया। ठविअ संकमट्ठाए, त च हुज्ज चलाचल ॥ ६५ ॥

न तेण भिक्खू गच्छिज्जा, दिट्ठो तत्थ असंजमो। गंभीर झुसिर चेव, सव्विदिअ समाहिय ॥ ६६ ॥

निस्सेणिं फलग पीढ, उस्सवित्ता ण मारुहे। मच कील च पासाय, समणट्ठा एव दावए ॥ ६७ ॥

दुरूहमाणी पवडिज्जा, (पडिवज्जा) हत्थ पाय व लूसए।
पुढवीजीवे वि हिंसेज्जा, जे अ तन्निस्सिआ जगे ॥ ॥ ६८ ॥

एआरिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो। तम्हा मालोहड भिक्ख न पडिगिण्हंति संजया ॥ ६९ ॥

कद मूल पलब वा, आम छिन्न च सन्निर। तुवागं सिंगबेर च, आमग परिवज्जए ॥ ७० ॥

तहेव सत्तुचुन्नाइ, कोलचुन्नाइ आवणे। सक्कुलिं फाणिअ पूअ, अन्न वा वि तहाविह ॥ ७१ ॥

विक्कायमाण पसढ, रएण परिफासिअ। दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ७२ ॥

बहुअट्ठिअ पुग्गल, अणिमिस वा बहुकटय। अत्थिय तिंदुय बिल्ल, उच्छुखड व सिंबलिं ॥ ७३ ॥

अप्पे सिआ भोअणजाए, बहुउज्झिय धम्मिए (य)।
दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ॥ ७४ ॥

तहेवुच्चावय पाण, अदुवा वारधोअण। ससेइम चाउलोदग, अहुणाधोअ विवज्जए ॥ ७५ ॥

जाणिज्जा चिराधोअ, मईए दसणेण वा, पडिपुच्छिऊण सुच्चा वा, ज च निस्सकिय भवे ॥ ७६ ॥

अजीव परिणय नच्चा, पडिगाहिज्ज संजए। अह संकिय भविज्जा, आसाइत्ताण रोअए ॥ ७७ ॥

थोवमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे। मा मे अच्चंबिल पूअ, नाल तिण्ह विणित्तए ॥ ७८ ॥

त च अच्चंबिल पूअ, नाल तिण्हविणित्तए। दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ७९ ॥

त च हुज्जा अकामेण, विमणेण पडिच्छिअ। त अप्पणा न पिबे। नो वि अन्नस्स दावए ॥ ८० ॥

एगतमवक्कमित्ता, अचित्त पडिलेहिआ। जय परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ८१ ॥

सिया अ गोअरग्गओ इच्छिज्जा परिभुत्तुअ। कुट्ठग भित्तिमूल वा, पडिलेहित्ताण फासुअ ॥ ८२ ॥

अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि संवुडे। हत्थगं संपमज्जित्ता, तत्थ भुंजिज्ज संजए ॥ ८३ ॥

तत्थ से भुंजमाणस्स, अट्ठिअ कटओ सिआ। तणकट्ठसक्कर वावि, अन्न वावि तहाविह ॥ ८४ ॥

त उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छड्डए। हत्थेण त गहेऊण, एगतमवक्कमे ॥ ८५ ॥

एगतमवक्कमित्ता अचित्त पडिलेहिआ। जय परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ८६ ॥

सिआ अ भिक्खू इच्छिज्जा, सिज्जमागम्म भुत्तुअ। सपिंडपायमागम्म, उडुअ पडिलेहिआ ॥ ८७ ॥

विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी। इरियावहियमायाय, आगओ अ पडिक्कमे ॥ ८८ ॥

आभोइत्ताण नीसेस, अइआर च जहक्कम। गमणागमणे चेव, भत्ते पाणे च संजए ॥ ८९ ॥

उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेअसा। आलोए गुरुसगासे, ज जहा गहिय भवे ॥ ९० ॥

न सम्ममालोइअ हुज्जा, पुव्विं पच्छा व ज कड। पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसट्ठो चिंतए इमं ॥ ९१ ॥

अहो जिणेहिं असावज्जा, वित्ती साहूण देसिआ। मुक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा ॥ ९२ ॥
णमुक्कारेण पारित्ता, करित्ता जिणसंथवं। सज्झायं पट्ठवित्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी ॥ ९३ ॥
वीससंतो इमं चिंते हियमट्ठं लाभमट्ठिओ। मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू हुज्जामि तारिओ ॥ ९४ ॥
साहवो तो चिअत्तेण, निमंतिज्ज जहक्कमं। जइ तत्थ केइ इच्छिज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥ ९५ ॥
अह कोइ न इच्छिज्जा, तओ भुंजिज्ज एक्कओ। आलोए भायणे साहू जयं अपरिसाडिअं ॥ ९६ ॥

तित्तगं च कडुअं च, कसायं अंबिलं च महुरं लवणं वा।
एयलद्धमन्नत्थपउत्तं महु घयं व भुंजिज्ज संजए ॥ ॥ ९७ ॥

अरसं विरसं वावि, सूइअं वा असूइअं। उल्लं वा जइ वा सुक्खं, मंथुकुम्मासभोअणं ॥ ९८ ॥
उप्पण्णं नाइहीलिज्जा, अप्पं वा बहु फासुअं। मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जिअं ॥ ९९ ॥
दुल्लहाओ मुहादाई, मुहाजीवी, वि दुल्लहा। मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सुग्गइं ॥ १०० ॥

॥ इअ पिंडेसणाए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेवमायाइ संजए। दुगंधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डए ॥ १ ॥
सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो अगोचरे। अयावयट्ठा भुच्चाणं, जइ तेण न संथरे ॥ २ ॥
तओ कारणमुप्पण्णे, भत्तपाणं गवेसए। विहिणा पुव्वउत्तेण, इमेण उत्तरेण य ॥ ३ ॥

कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जित्ता (ज्जा), काले कालं समायरे ॥ ॥ ४ ॥
अकाले चरसि भिक्खू, कालं न पडिलेहिसि।
अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ॥ ५ ॥

सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारिअं। अलाभोत्ति न सोइज्जा, तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥
तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया। तं उज्जुअं न गच्छिज्जा, जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
गोअरग्गपविट्ठो अ, न निसीइज्ज कत्थई। कहं च न पबंधिज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वा वि संजए। अवलंबिआ न चिट्ठिज्जा, गोअरग्गओ मुणी ॥ ९ ॥
समणं माहणं वावि, किविणं वा वणीमगं। उवसंकमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥ १०,॥
तमइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोअरे। एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठिज्ज संजए ॥ ११ ॥
वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा। अप्पत्तिअं सिआ हुज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा ॥ १२ ॥
पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए। उवसंकमिज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥ १३ ॥
उप्पलं पउमं वावि, कुमुअं वा मगदंतिअं। अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं, तं च संलुंचिआ दए ॥ १४ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पिअं। दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ १५ ॥
उप्पलं पउमं वावि, कुमुअं वा मगदंतिअं। अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं, तं च सम्मद्दिआ दए ॥ १६ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं। दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ १७ ॥
सालुअं वा विरालिअं, कुमुअं उप्पलनालियं। मुणालिअं सासवनालिअं, उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥ १८ ॥
तरुणगं वा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा। अन्नस्स वा वि हरिअस्स, आमगं परिवज्जए ॥ १९ ॥

तरुणिअं वा छिवाडिं, आमिअं भज्जिय सयं। दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ २० ॥
तहा कोलमणुस्सिन्नं वेलुअं कासवनालिअं। तिलपप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्जए ॥ २१ ॥
तहेव चाउलं पिट्ठं, विअडं वा तत्तनिव्वुडं। तिलपिट्ठपूइपिन्नागं, आमगं परिवज्जए ॥ २२ ॥
कविट्ठं माउलिंगं च, मूलगं मूलगत्तिअं, आमं असत्थपरिणयं मणसा वि न पत्थए ॥ २३ ॥
तहेव फलमंथूणि, बीअमंथूणि जाणिआ। विहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए ॥ २४ ॥
समुआणं चरे भिक्खू कुलमुच्चावयं सया। नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए ॥ २५ ॥
अदीणो वित्तिमेसिज्जा, न विसीएज्ज पंडिए। अमुच्छिओ भोअणम्मि, मायण्णे एसणारए ॥ २६ ॥
बहु परघरे अत्थि विविहं खाइमसाइमं। न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा दिज्ज परो न वा ॥ २७ ॥
सयणासणवत्थं वा, भत्तं पाणं च संजए। अदिंतस्स न कुप्पिज्जा, पच्चक्खे वि अ दीसओ ॥ २८ ॥
इत्थिअं पुरिसं वावि, डहरं वा महल्लगं। वंदमाणं न जाइज्जा, नो अ णं फरुसं वए ॥ २९ ॥
जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे। एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठइ ॥ ३० ॥
सिआ एगइओ लद्धुं लोभेण विणिगूहइ। मामेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए ॥ ३१ ॥
अत्तट्ठा गुरुओ लुद्धो, बहु पावं पकुव्वइ। दुत्तोसओ अ से (सो) होइ, निव्वाणं च न गच्छइ ॥ ३२ ॥
सिआ एगइओ लद्धुं, विविहं पाणभोअणं। भद्दगं भद्दगं भुच्चा, विवन्नं विरसमाहरे ॥ ३३ ॥
जाणंतु ता इमे समणा, आययट्ठी अयं मुणी। संतुट्ठो सेवए पंतं, लूहवित्ती सुतोसओ ॥ ३४ ॥
पूयणट्ठा जसोकामी, माणसम्माणकामए। बहुं पसवई पावं, मायासल्लं च कुव्वइ ॥ ३५ ॥
सुरं वा मेरगं वावि, अन्नं वा मज्जगं रसं। ससक्खं न पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥ ३६ ॥
पियए एगओ तेणो, न मे कोई विआणइ। तस्स पस्सह दोसाइं, नियडिं च सुणेह मे ॥ ३७ ॥
वड्ढई सुंडिआ तस्स, मायामोसं च भिक्खुणो। अयसो अ अनिव्वाणं, सययं च असाहुआ ॥ ३८ ॥
निच्चुव्विग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मई। तारिसो मरणंते वि न आराहेइ संवरं ॥ ३९ ॥
आयरिए नाराहेइ, समणे आवी तारिसो। गिहत्था वि णं गरिहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥ ४० ॥
एवं तु अगुणप्पेही, गुणाणं च विवज्जए। तारिसो मरणंते वि, ण आराहेइ संवरं ॥ ४१ ॥
तवं कुव्वइ मेहावी, पणीअं वज्जए रसं। मज्जप्पमायविरओ, तवस्सी अइउक्कसो ॥ ४२ ॥
तस्स पस्सह कल्लाणं, अणेगसाहुपूइअं। विउलं अत्थसंजुत्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे ॥ ४३ ॥
एवं तु गुणप्पेही, अगुणाणं च विवज्जए (ओ)। तारिसो मरणंते वि, आराहेइ संवरं ॥ ४४ ॥
आयरिए आराहेइ, समणे आवि तारिसो। गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ॥ ४५ ॥
तवतेणे वयतेणे, रूवतेणे अ जे नरे। आयारभावतेणे अ, कुव्वइ देवकिब्बिसं ॥ ४६ ॥
लद्धूण वि देवत्तं, उववन्नो देवकिब्बिसे। तत्थावि से न याणाइ किं मे किच्चा इमं फलं ॥ ४७ ॥
तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्भइ एलमूअगं। नरगं तिरिक्खजोणिं वा, बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥ ४८ ॥
एअं च दोसं दट्ठूण, नायपुत्तेण भासिअं। अणुमायं पि मेहावी, मायामोसं विवज्जए ॥ ४९ ॥
सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे। तत्थ भिक्खु सुप्पणिहिंदिए, तिव्वलज्जगुणवं
विहरिज्जासि ॥५०॥ त्ति बेमि॥ इअ पिंडेसणाए बीओ उद्देसो॥ पंचमज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह छट्ठं धम्मत्थकामज्झयणं ॥

नाणदंसणसपन्नं, संजमे अ तवे रयं। गणिमागमसंपन्नं, उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥
रायाओ रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिआ। पुच्छंति निहुअप्पाणो, कहं मे आयारगोयरो ॥ २ ॥
तेसिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूअसुहावहो, सिक्खाएसु समाउत्तो, आयक्खइ विअक्खणो ॥ ३ ॥
हंदि धम्मत्थकामाणं, निग्गंथाणं सुणेह मे। आयारगोअरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठिअं ॥ ४ ॥
नन्नत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परमदुच्चरं। विउलट्ठाणभाइस्स, न भूअं न भविस्सइ ॥ ५ ॥
सखुड्डगविअत्ताणं, वाहिआणं च जे गुणा। अखंडफुडिआ कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥
दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोऽवरज्झइ। तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गंताओ भस्सइ ॥ ७ ॥
वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं। पलियंकनिस[सि]ज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥ ८ ॥
तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसिअं। अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो ॥ ९ ॥
जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा। ते जाणमजाणं वा, न हणे णो विघायए ॥ १० ॥
सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं। तम्हा पाणिवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ ११ ॥
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया। हिंसगं न मुसं बूआ, नोवि अन्नं वयावए ॥ १२ ॥
मुसावाओ य लोगम्मि, सव्वसाहूहिं गरिहिओ। अविस्सासो य भूआणं, तम्हा मोसं विवज्जए ॥ १३ ॥
चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं। दंतसोहणमित्तं पि, उग्गहंसि अजाइया ॥ १४ ॥
तं अप्पणा न गिण्हंति, नो वि गिण्हावए परं। अन्नं वा गिण्हमाणं पि, नाणुजाणंति संजया ॥ १५ ॥
अबंभचरिअं घोरं, पमायं दुरहिट्ठिअं। नायरंति मुणी लोए, भेआयणवज्जिणो ॥ १६ ॥
मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं। तम्हा मेहुणसंसग्गं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ १७ ॥
बिडमुब्भेइमं लोणं, तिल्लं सप्पिं च फाणिअं। न ते संनिहिमिच्छंति, नायपुत्तवओरया ॥ १८ ॥
लोहस्सेसणुफासे, मन्ने अन्नयरामवि। जे सिया सन्निहिं कामे, गिही पव्वइए न से ॥ १९ ॥
जं पि वत्थं च पायं वा, कंबलं पायपुंछणं। तं पि संजमलज्जट्ठा, धारंति परिहरंति अ ॥ २० ॥
न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा। मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २१ ॥
सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खणपरिग्गहे अवि अप्पणोऽवि देहम्मि, नायरंति ममाइयं ॥ २२ ॥
अहो निच्चं तवो कम्मं, सव्वबुद्धेहिं वण्णिअं। जा य लज्जासमा वित्ती, एगभत्तं च भोअणं ॥ २३ ॥
संति मे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा। जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणिअं चरे ॥ २४ ॥
उदउल्लं बीअसंसत्तं, पाणा निवडिया महिं। दिआ ताइं विवज्जिज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ॥ २५ ॥
एअं च दोसं दट्ठूण, नायपुत्तेण भासियं। सव्वाहारं न भुंजंति, निग्गंथा राइभोअणं ॥ २६ ॥
पुढविकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा। तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥ २७ ॥
पुढविकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए। तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ २८ ॥
तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं। पुढविकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥ २९ ॥
आउकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा। तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥ ३० ॥

आउकाय विहिंसतो, हिंसई तयस्सिए। तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ३१ ॥
तम्हा एअ विआणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढण। आउकायसमारम, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३२ ॥
जायतेअ न इच्छति पावग जलइत्तए। तिक्खमन्नयर सत्थ, सव्वओ वि दुरासय ॥ ३३ ॥
पाईण पडिण वावि, उड्ढ अणुदिसामवि। अहे दाहिणिओ वा वि दहे उत्तरओ वि अ ॥ ३४ ॥
भूआणमेसमाघाओ हव्ववाहो न ससओ। त पईवपयावट्ठा, सजया किंचि नारभे ॥ ३५ ॥
तम्हा एयविआणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढण। तेउकायसमारभ, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३६ ॥
अणिलस्स समारभ, बुद्धा मन्नति तारिस। सावज्जबहुल चेअ, नेअ ताईहिं सेविअ ॥ ३७ ॥
तालिअटेण पत्तेण, साहाविहुअणेण वा। न ते वीइउमिच्छति, वीआवेऊण वा पर ॥ ३८ ॥
ज पि वत्थ व (च) पाय वा, कबल पायपुछण न ते वायमुईरति, जय परिहरति अ ॥ ३९ ॥
तम्हा एअ विआणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढण। वाउकायसमारभ, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४० ॥
वणस्सइ न हिंसति, मणसा वयसा कायसा। तिविहेण करणजोएण, सजया सुसमाहिआ ॥ ४१ ॥
वणस्सइ विहिंसतो, हिंसइ उ तयस्सिए। तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ४२ ॥
तम्हा एय विआणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढण। वणस्सइ समारंभ, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४३ ॥
तसकाय न हिंसति, मणसा वयसा कायसा। तिविहेण करणजोएण, सजया सुसमाहिआ ॥ ४४ ॥
तसकाय विहिंसतो, हिंसई उ तयस्सिए। तसे अ विविह पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ४५ ॥
तम्हा एअ विआणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढण। तसकायसमारभ, जावज्जीवाए [इ] वज्जए ॥ ४६ ॥
जाइ चत्तारि भुज्जाइ, इसिणा हारमाइणि। ताइ तु विवज्जतो, सजम अणुपालए ॥ ४७ ॥
पिंड सिज्ज च वत्थ च, चउत्थ पायमेव य। अकप्पिअ न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअ ॥ ४८ ॥
जे नियाग ममायति, कीअमुद्देसिआहड। वह ते समणुजाणति, इअ उ (वु)त्त महेसिणा ॥ ४९ ॥
तम्हा असणपाणाइ, कीअमुद्देसियाहड। वज्जयति ठिअप्पाणो, निग्गथा धम्मजीविणो ॥ ५० ॥
कसेसु कसपाएसु कुडमोएसु वा पुणो। भुजतो असणपाणाइ, आयरा परिभस्सइ ॥ ५१ ॥
सीओदग समारभे, मत्तधोअणछड्डणे जाइ छनति भूआइ, दिट्ठो तत्थ असजमो ॥ ५२ ॥
पच्छाकम्म पुरेकम्म, सिआ तत्थ न कप्पइ। एअमट्ठ न भुजति, निग्गथा गिहिभायणे ॥ ५३ ॥
आसदीपलिअकेसु, मचमासालएसु वा। अणायरिअमज्जाण, आसइत्तु सइत्तु वा ॥ ५४ ॥
नासदीपलिअकेसु, न निसिज्जा न पीढए। निग्गथा पडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥ ५५ ॥
गभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा। आसदी पलिअको अ, एयमट्ठ विवज्जिआ ॥ ५६ ॥
गोअरग्गपविट्ठस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ। इमेरिसमणायार, आवज्जइ अबोहिअ ॥ ५७ ॥
विवत्ती बभचेरस्स, पाणाण च वहे वहो। वणीमगपडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं ॥ ५८ ॥
अगुत्ती बभचेरस्स, इत्थीओ वा वि सकण। कुसीलवड्ढण, ठाण, दूरओ परिवज्जए ॥ ५९ ॥
तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ। जराए अभिभूअस्स, वाहिअस्स तवस्सिणो ॥ ६० ॥
वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाण जो उ पत्थए। वुक्कतो होइ आयारो, जढो हवइ सजमो ॥ ६१ ॥
सतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु अ। जे अ भिक्खू सिणायतो, विअडेणुप्पिलावए ॥ ६२ ॥
तम्हा ते न सिणायति, सीएण उसिणेण वा। जावज्जीव वयं घोर, असिणाणमहिट्ठगा ॥ ६३ ॥

सिणाणं अदुवा कक्कं, लुद्धं पउमगाणि अ। गायस्सुव्वट्टणट्ठाए, नायरंति कयाइ वि ॥ ६४ ॥
नगिणस्स वावि मुडस्स, दीहरोमनहंसिणो। मेहुणाओ उवसंतस्स, किं विभूसाय कारिअं ॥ ६५ ॥
विभूसावत्तिअं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं। संसारसायरे घोरे, जेणं पडइ दुरुत्तरे ॥ ६६ ॥
विभूसावत्तिअं चेअं, बुद्धा मन्नंति तारिसं। सावज्जबहुलं चेअं, नेयं ताईहिं सेविअं ॥ ६७ ॥

खवंति अप्पाणममोहदंसिणो, तवे रया संजम अज्जवे गुणे।
धुणंति पावाइं पुरेकडाइं नवाइं पावाइं न ते करंति ॥ ॥ ६८ ॥
सओवसंता अममा अकिंचणा, सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा। सिद्धिं विमाणाइं उवेंति (वयंति) ताइणो ॥ ६९ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ छट्ठं धम्मत्थकामज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

॥ अह सुवक्कसुद्धी णाम सत्तमं अज्झयणं ॥

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पन्नवं। दुण्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासिज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
जा अ सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा अ जा मुसा। जा अ बुद्धेहिं नाइन्ना, न तं भासिज्ज पन्नवं ॥ २ ॥
असच्चमोसं सच्चं च, अणवज्जमकक्कसं। समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासिज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥
एयं च अट्ठमन्नं वा, जं तु नामेइ सासयं। स भासं सच्चमोसं च पि तं (पि) धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
वितहं पि तहामुत्तिं, जं गिरं भासए नरो। तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुण जो मुसं वए ॥ ५ ॥

तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ।
अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ ॥ ॥ ६ ॥

एवमाइ उ जा भासा, एसकालम्मि संकिआ। संपयाइअमट्ठे वा, तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
अईअम्मि अ कालम्मि, पच्चुप्पण्णमणागए। जमट्ठं तु न जाणिज्जा, एवमेअं ति नो वए ॥ ८ ॥
अईअम्मि अ कालम्मि, पच्चुप्पण्णमणागए। जत्थ संका भवे तं तु, एवमेअं तु नो वए ॥ ९ ॥
अईअम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पण्णमणागए। निस्संकिअं भवे जं तु, एवमेअं तु निद्दिसे ॥ १० ॥
तहेव फरुसा भासा, गुरुभूओवघाइणी। सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ॥ ११ ॥
तहेव काणं काणं त्ति, पंडगं पंडगं त्ति वा। वाहिअं वा वि रोगि त्ति, तेणं चोरे त्ति नो वए ॥ १२ ॥
एएणन्नेण अट्ठेणं, परो जेणुवहम्मइ। आयारभावदोसन्नू, न तं भासिज्ज पण्णवं ॥ १३ ॥
तहेव होले गोलि त्ति, साणे वा वसुलि त्ति अ। दमए दुहए वा वि, नेवं भासिज्ज पण्णवं ॥ १४ ॥

अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउस्सिअ त्ति अ।
पिउस्सिए भायणिज्ज त्ति, धूए णत्तुणिअ त्ति अ ॥ ॥ १५ ॥
हले हलित्ति अन्नि त्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि।
होले गोले वसुलि त्ति, इत्थियं नेवमालवे ॥ ॥ १६ ॥

नामधिज्जेण णं बूआ, इत्थीगुत्तेण वा पुणो। जहारिहमभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा ॥ १७ ॥

अज्जए पज्जए वा वि, बप्पो चुल्लपिउ त्ति अ। माउलो भाइणिज्ज त्ति, पुत्ते णत्तुणिअ त्ति अ ॥ १८ ॥
हे भो! हलित्ति अन्नित्ति, भट्टा सामि अ गोमिअ। होला गोल वसुलित्ति, पुरिसं नेवमालवे ॥ १९ ॥
नामधिज्जेण णं बूआ, पुरिसगुत्तेण वा पुणो। जहारिहमभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा ॥ २० ॥
पंचिंदिआण पाणाणं, एस इत्थी अयं पुमं। जाव णं नो विजाणिज्जा, ताव जाइ त्ति आलवे ॥ २१ ॥
तहेव मणुसं पसुं, पक्खिं वा वि सरीसिवं। थूले पमेइले वज्झे, पाइमि त्ति अ नो वए ॥ २२ ॥
परिवुड्ढे त्ति णं बूआ, बूआ उवचिए त्ति अ। संजाए पीणिए वावि महाकाय त्ति आलवे ॥ २३ ॥
तहेव गाओ दुज्झाओ, दम्मा गोरहग त्ति अ। वाहिमा रहजोगि त्ति, नेवं भासिज्ज पण्णवं ॥ २४ ॥
जुवं गवि त्ति णं बूआ, धेणुं रसदय त्ति अ। रहस्से महल्लए वा वि, वए संवहणि त्ति अ ॥ २५ ॥
तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि अ। रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासिज्ज पण्णवं ॥ २६ ॥
अलं पासायखंभाणं, तोरणाणि गिहाणि अ। फलिहग्गलनावाणं, अलं उदगदोणिणं ॥ २७ ॥
पीढए चंगबेरे अ, नंगले मइयं सिआ। जंतलट्ठी व नाभी वा, गंडिआ व अलं सिआ ॥ २८ ॥
आसणं सयणं जाणं, हुज्जा वा किंचुवस्सए। भूओवघाइणिं भासं, नेवं भासिज्ज पण्णवं ॥ २९ ॥
तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि अ। रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भासिज्ज पण्णवं ॥ ३० ॥
जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया। पयायसाला विडिमा, वए दरिसणि त्ति अ ॥ ३१ ॥
तहा फलाइं पक्काइं, पायखज्जाइं नो वए। वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइं त्ति नो वए ॥ ३२ ॥
असंथडा इमे अंबा, बहुनिव्वडिमा फला। वइज्ज बहुसंभूआ, भूअरूव त्ति वा पुणो ॥ ३३ ॥
तहेवोसहीओ पक्काओ, नीलिआओ छवीइ अ। लाइमा भज्जिमाउ त्ति, पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥ ३४ ॥
रूढा बहुसंभूआ, थिरा ओसढा वि अ। गब्भिआओ पसूआओ, ससाराउ त्ति आलवे ॥ ३५ ॥

तहेव संखडिं नच्चा, किच्चं कज्जं ति नो वए।
तेणगं वावि वज्झि त्ति, सुतित्थि त्ति अ आवगा ॥ ॥ ३६ ॥
संखडिं संखडिं बूआ, पणिअट्ठ त्ति तेणगं।
बहुसमानि तित्थाणि, आवगाणं विआगरे ॥ ॥ ३७ ॥
तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिज्ज त्ति नो वए।
नावाहिं तारिमाउ त्ति, पाणिपिज्ज त्ति नो वए ॥ ॥ ३८ ॥

बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा। बहुवित्थडोदगा आवि, एवं भासिज्ज पण्णवं ॥ ३९ ॥
तहेव सावज्जं जोगं, परस्सट्ठा अ निट्ठिअं। कीरमाणं ति वा नच्चा, सावज्जं न लवे मुणी ॥ ४० ॥
सुकडि त्ति सुपक्कि त्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे। सुनिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ॥ ४१ ॥

पयत्तपक्कि त्ति व पक्कमालवे, पयत्तछिन्न त्ति व छिन्नमालवे।
पयत्तलट्ठित्ति व कम्महेउअं, पहारगाढि त्ति व गाढमालवे ॥ ॥ ४२ ॥

सव्वुक्कसं परग्घं वा, अउलं नत्थि एरिसं। अविक्किअमवत्तव्वं, अचिअत्तं चेव नो वए ॥ ४३ ॥
सव्वमेअं वइस्सामि, सव्वमेअं त्ति नो वए। अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एवं भासिज्ज पण्णवं ॥ ४४ ॥
सुक्कीअं वा सुविक्कीअं, अकिज्जं किज्जमेव वा। इमं गिण्ह इमं मुंच, पणिअं नो विआगरे ॥ ४५ ॥

अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा विक्कए वि वा । पडिअट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्ज विआगरे ॥ ४६ ॥
तहेवासंजय धीरो, आस एहि करहि वा । सयचिट्ठ वयाहित्ति, नेवं भासिज्ज पण्णवं ॥ ४७ ॥
बहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो । न लवे असाहुं साहुत्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ॥ ४८ ॥
नाणदंसणसंपन्नं, संजमे अ तवे रयं । एवं गुणसमाउत्तं, संजयं साहुमालवे ॥ ४९ ॥
देवाणं मणुआणं च, तिरिआणं च वुग्गहे । अमुगाणं जओ होउ, मा वा होउत्ति नो वए ॥ ५० ॥

वाओ वुट्ठं व सीउण्हं, खेमं धायं सिवं ति वा ।
कया णु हुज्ज एयाणि, मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ५१ ॥
तहेव मेहं व नहं व माणवं, न देवदेव त्ति गिरं वइज्जा ।
समुच्छिए उन्नए वा पओए, वइज्ज वा वुट्ठ बलाहय त्ति ॥ ५२ ॥
अंतलिक्खे त्ति णं बूआ, गुज्झाणुचरिअ त्ति अ ।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंत ति आलवे ॥ ५३ ॥
तहेव सावज्जणुमोअणी गिरा, जा य परोवघायणी ।
से कोह लोह भय हास माणवो, न हासमाणो वि गिरं वइज्जा ॥ ५४ ॥
सुवक्कसुद्धिं समुपेहिआ मुणी, गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया ।
मिअं अदुट्ठं अणुवीइ भासए, सयाण मज्झे लहई पसंसणं ॥ ५५ ॥
भासाइ दोसे अ गुणे अ जाणिआ, तीसेअ दुट्ठे परिवज्जए सया ।
छसु संजए सामणिए सया जए, वइज्ज बुद्धे हिअमाणुलोअं ॥ ५६ ॥
परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए, चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।
स निद्धुणे धुत्तमलं पुरेकडं, आराहए लोगमिणं तहा परं ॥ ५७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ सुवक्कसुद्धीनाम सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥



॥ अह आयारप्पणिही अट्ठमज्झयण ॥

आयारप्पणिहिं लद्धु, जहा कायव्व भिक्खुणा । त मे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥
पुढविदगअगणिमारुअ, तणरुक्खस्स बीयगा । तसा अ पाणा जीव त्ति, इइ वुत्त महेसिणा ॥ २ ॥
तेसिं अच्छणजोएण, निच्च होअव्वय सिआ । मणसा कायवक्केण, एव हवइ संजए ॥ ३ ॥
पुढविं भित्तिं सिल लेलु, नेव भिंदे न संलिहे । तिविहेण करणजोएण, संजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
सुद्धपुढवीं न निसीए, ससरक्खम्मि अ आसणे । पमज्जित्तु निसीइज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गह ॥ ५ ॥
सीओदगं न सेविज्जा, सिलावुट्ठ हिमाणि अ । उसिणोदग तत्तफासुअ, पडिगाहिज्ज संजए ॥ ६ ॥
उदउल्लं अप्पणो काय, नेव पुंछे न संलिहे । समुप्पेह तहाभूअ, नो ण संघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
इंगाल अगणिं अच्चिं, अलाय वा सजोइअ । न उंजिज्जा न घट्टिज्जा, नो ण निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥
तालिअंटेण पत्तेण, साहाए विहुयणेण वा । न वीइज्ज अप्पणो काय, बाहिर वा वि पुग्गल ॥ ९ ॥
तणरुक्ख न छिंदिज्जा, फल मूल च कस्सइ । आमग विविह बीअ, मणसा वि ण पत्थए ॥ १० ॥
गहणेसु न चिट्ठिज्जा, बीएसु हरिएसु वा । उदगम्मि तहा निच्च, उत्तिंगपणगेसु वा ॥ ११ ॥
तसे पाणे न हिंसिज्जा, वाया अदुव कम्मुणा । उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज विविह जग ॥ १२ ॥
अट्ठ सुहुमाइ पेहाए, जाइ जाणित्तु संजए । दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ॥ १३ ॥
कयराइ अट्ठ सुहुमाइ, जाइ पुच्छिज्ज संजए । इमाइ ताइ मेहावी, आइक्खिज्ज विअक्खणो ॥ १४ ॥
सिणेह पुप्फसुहुम च, पाणुत्तिंग तहेव य । पणग बीअ हरिअ च, अंडसुहुम च अट्ठम ॥ १५ ॥
एवमेआणि जाणित्ता, सव्वभावेण संजए । अप्पमत्तो जए निच्च, सव्विंदिअसमाहिए ॥ १६ ॥
धुव च पडिलेहिज्जा, जोगसा पायकंबल । सिज्जमुच्चारभूमिं च, संथार अदुवासण ॥ १७ ॥
उच्चार पासवण, खेल सिंघाणजल्लिअ । फासुअ पडिलेहित्ता, परिट्ठाविज्ज संजए ॥ १८ ॥
पविसित्तु परागार, पाणट्ठा भोअणस्स वा । जय चिट्ठे मिअ भासे, न य रूवेसु मण करे ॥ १९ ॥
बहु सुणेइ कण्णेहिं, बहु अच्छीहिं पिच्छइ । न य दिट्ठ सुअ सव्व भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥ २० ॥
सुअ वा जइ वा दिट्ठ, न लविज्जोवघाइअ । न य केण उवाएण, गिहिजोग समायरे ॥ २१ ॥
निट्ठाण रसनिज्जूढ, भद्दग पावग ति वा । पुट्ठो वावि अपुट्ठो वा, लाभालाभ न निद्दिसे ॥ २२ ॥
न य भोअणम्मि गिद्धो, चरे उंछ अयंपिरो । अफासुअ न भुंजिज्जा, कीअमुद्देसिआहड ॥ २३ ॥
संनिहिं च न कुव्विज्जा, अणुमाय पि संजए । मुहाजीवी असंबद्धे, हविज्ज जगनिस्सिए ॥ २४ ॥
लूहवित्ति सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिआ । आसुरत्त न गच्छिज्जा, सुच्चा ण जिणसासण ॥ २५ ॥
कण्णसुक्खेहिं सद्देहिं, पेम नाभिनिवेसए । दारुण कक्कस फास, काएण अहिआसए ॥ २६ ॥
खुह पिवास दुस्सिज्ज, सीउण्ह अरइ भय । अहिआसे अव्वहिओ देहदुक्ख महाफल ॥ २७ ॥
अत्थ गयम्मि आइच्चे, पुरत्था अ अणुग्गए । आहारमाइअ सव्व, मणसा वि ण पत्थए ॥ २८ ॥
अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी, मिआसणे । हविज्ज उअरे दंते, थोव लद्धु न खिंसए ॥ २९ ॥
न बाहिर परिभवे अत्ताण न समुक्कसे । सुअलाभे न मज्जिज्जा, जच्चा तवस्सि बुद्धिए ॥ ३० ॥

से जाणमजाण वा, कट्टु आहम्मिअं पयं। संवरे खिप्पमप्पाणं, बीअं तं न समायरे ॥ ३१ ॥
अणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हवे। सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए ॥ ३२ ॥
अमोहं वयणं कुज्जा, आयरीअस्स महप्पणो। तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ३३ ॥
अधुवं जीविअं नच्चा, सिद्धिमग्गं विआणिआ। विणिअट्टिज्ज भोगेसु, आउं परिमिअमप्पणो ॥ ३४ ॥
बलं थामं च पेहाए, सद्धामारुग्गमप्पणो। खित्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं निजुंजए ॥ ३५ ॥
जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ। जाविंदिआ न हायंति, ताव धम्मं समायरे ॥ ३६ ॥
कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं। वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हिअमप्पणो ॥ ३७ ॥
कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो। माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो ॥ ३८ ॥
उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे। मायमज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥ ३९ ॥

कोहो अ माणो अ अणिग्गहीआ, माया अ लोभो अ पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥ ॥ ४० ॥
रायणिएसु विणयं पउंजे, धुवसीलयं सययं न हावइज्जा।
कुम्मुव्व अल्लीणपलीणगुत्तो, परक्कमिज्जा तवसंजमम्मि ॥ ॥ ४१ ॥

निद्दं च न बहु मन्निज्जा, सप्पहासं विवज्जए। मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायम्मि रओ सया ॥ ४२ ॥
जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अनलसो धुवं। जुत्तो अ समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥ ४३ ॥
इहलोगपारत्तहिअं, जेणं गच्छइ सुग्गइं। बहुस्सुअं पज्जुवासिज्जा, पुच्छिज्जत्थविणिच्छयं ॥ ४४ ॥
हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए। अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ॥ ४५ ॥
न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ। न य ऊरुं समासिज्ज, चिट्ठिज्जा गुरुणंतिए ॥ ४६ ॥
अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाणस्स अंतरा। पिट्ठिमंसं न खाइज्जा, मायामोसं विवज्जए ॥ ४७ ॥

अप्पत्तिअं जेण सिआ, आसु कुप्पिज्ज वा परो।
सव्वसो तं न भासिज्जा, भासं अहिअगामिणिं ॥ ॥ ४८ ॥

दिट्ठं मिअं असंदिद्धं, पडिपुन्नं विअं जिअं। अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं ॥ ४९ ॥
आयारपन्नत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं। वायविक्खलिअं नच्चा, न तं उवहसे मुणी ॥ ५० ॥
नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंतभेसजं। गिहिणो तं न आइक्खे, भूआहिगरणं पयं ॥ ५१ ॥
अन्नट्ठं पगडं लयणं, भइज्ज सयणासणं। उच्चारभूमिसंपन्नं, इत्थीपसुविवज्जिअं ॥ ५२ ॥
विवित्ता अ भवे सिज्जा, नारीणं न लवे कहं। गिहिसंथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहिं संथवं ॥ ५३ ॥
जहा कुक्कुडपोअस्स, निच्चं कुललओ भयं। एवं खु बंभयारिस्स, इत्थीविग्गहओ भयं ॥ ५४ ॥
चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सुअलंकिअं। भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥ ५५ ॥
हत्थपायपडिच्छिन्नं, कन्ननासविगप्पिअं। अवि वाससयं नारिं, बंभयारी विवज्जए ॥ ५६ ॥
विभूसा इत्थिसंसग्गी, पणीअं रसभोअणं। नरस्सत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥ ५७ ॥
अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लविअपेहिअं। इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं ॥ ५८ ॥
विसएसु मणुण्णेसु, पेमं नाभिनिवेसए। अणिच्चं तेसिं विण्णाय, परिणामं पुग्गलाण उ ॥ ५९ ॥

पोग्गलाण परिणाम, तेसिं नच्चा जहा तहा। विणीअतिण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ॥ ६० ॥
आइ सद्धाइ निक्खतो, परिआयट्ठाणमुत्तम। तमेव अणुपालिज्जा, गुणे आयरियसमए ॥ ६१ ॥
तव चिम सजमजोगय च, सज्झायजोग च सया अहिट्ठ ए।
सूरे व सेणाइ सम्मत्तमाउहे, अलमप्पणो होइ अल परसिं ॥ ६२ ॥
सज्झायसुज्झाणरयस्स ताइणो, अपावभावस्स तवे रयस्स।
विसुज्झई ज सि मल पुरेकड, समीरिअ रुप्पमल व जोइणा ॥ ६३ ॥
से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए, सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे।
विरायई कम्मघणम्मि अवगए, कसिणब्भपुडावगमे व चंदिम ॥ ६४ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ आयारपणिही णाम अट्ठममज्झयण समत्त ॥ ८ ॥

॥ अह विणयसमाही णाम नवममज्झयण ॥

थभा व कोहा व मयप्पमाया, गुरुस्सगासे विणय न सिक्खे।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो, फल व कीअस्स वहाय होइ ॥ १ ॥
जे आवि मदि त्ति गुरु विइत्ता, डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा।
हीलति मिच्छ पडिवज्जमाणा, करति आसायण ते गुरूण ॥ २ ॥
पगईए मदा वि भवति एगे, डहरा वि अ जे सुअबुद्धोववेआ।
आयारमता गुणसुट्ठिअप्पा, जे हीलिआ सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥
जे आवि नाग डहर ति नच्चा, आसायए से अहिआय होइ।
एवायरियपि हु हीलयतो, निअच्छई जाइपह खु मदो (दे) ॥ ४ ॥
आसीविसो वावि पर सुरुट्ठो, किं जीवनासाउ पर न कुज्जा।
आयरिआपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहिआसायण नत्थि मुक्खो ॥ ५ ॥
जो पावग जलिअमवक्कमिज्जा, आसीविस वा वि हु कोवइज्जा।
जो वा विस खायइ जीविअट्ठी, एसोवमासायणया गुरूण ॥ ६ ॥
सिआ हु से पावय नो डहिज्जा, आसीविसो वा कुविओ न भक्खे।
सिआ विस हालहल न मारे, न आवि मुक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥
जो पव्वय सिरसा भित्तुमिच्छे, सुत्त व सीह पडिबोहइज्जा।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहार, एसोवमासायणया गुरूण ॥ ८ ॥
सिआ हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिआ हु सीहो कुविओ न भक्खे।
सिआ न भिंदिज्ज व सत्तिअग्ग, न आवि मुक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥
आयरिअपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहिआसायण नत्थि मुक्खो।
तम्हा अणाबाहसुहाभिकखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमिज्जा ॥ १० ॥
जहाहिअग्गी जलण नमसे, नाणाहुईमतपयाभिसित्त।

एवायरिअ उवचिट्ठइज्जा, अणतनाणोवगओ वि सतो ॥ ११ ॥
जस्सतिए धम्मपयाइ सिक्खे, तस्सतिए वेणइय पउजे ।
सक्कारए सिरसा पजलीओ, कायग्गिरा भो मणसा अ निच ॥ १२ ॥
लज्जा दया सजमबभचेरं, कल्लाणभागिस्स विसोहिठाण ।
जे मे गुरू सययमणुसासयति, तेहिं गुरू सयय पूजयामि ॥ १३ ॥
जहा निसते तवणचिमाली, पभासई केवलभारह तु ।
एवायरिओ सुअसीलबुद्धिए, विरायई सुरमज्झे व इदो ॥ १४ ॥
जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो, नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
खे सोहई निमले अब्भमुक्के, एव गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥ १५ ॥
महागरा आयरिआ महेसी, समाहिजोगे सुअसीलबुद्धिए ।
सपाविउकामे अणुत्तराइ, आराहए तोसइ धम्मकामी ॥ १६ ॥
सुच्चा ण मेहावी सुभासिआइ, सुस्सूसए आयरिअप्पमत्तो ।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे, से पावई सिद्धिमणुत्तर त्ति बेमि ॥ १७ ॥
॥ इअ विणयसमाहिज्झयणे पढमो उद्देसो समत्तो ॥

मूलाउ खधप्पभवो दुमस्स, खधाउ पच्छा समुविंति साहा ।
साहप्पसाहा विरुहति पत्ता, तओ सि (से)पुप्फ च फल रसो अ ॥ ॥ १ ॥
एव धम्मस्स विणओ, मूल परमो अ से मुक्खो, जेण कित्तिं सुअ सिग्घ, नीसेस चाभिगच्छइ ॥ २ ॥
जे अ चडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडी सढे । वुज्झइ से अविणीअप्पा, कट्ठ सोअगय जहा ॥ ३ ॥
विणयम्मि जो उवाएण, चोइओ कुप्पइ नरो । दिव्व सो सिरिमिज्जति, दडेण पडिसेहिए ॥ ४ ॥
तहेव अविणीअप्पा, उववज्झा हया गया । दीसति दुहमेहता, आभिओगमुवट्ठिआ ॥ ५ ॥
तहेव सुविणीअप्पा, उववज्झा हया गया । दीसति सुहमेहता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ६ ॥
तहेव अविणीअप्पा, लोगम्मि नरनारिओ । दीसति दुहमेहता, छाया ते विगलिंदिआ ॥ ७ ॥
दडसत्थपरिज्जुन्ना, असब्भवयणेहि अ । कलुणा विवन्नछदा, खुप्पिवासपरिग्गया ॥ ८ ॥
तहेव सुविणीअप्पा, लोगसि नरनारिओ । दीसति सुहमेहता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
तहेव अविणीअप्पा, देवा जक्खा अ गुज्झगा । दीसति दुहमेहता, आभिओगमुवट्ठिआ । १० ॥
तहेव सुविणीअप्पा, देवा जक्खा अ गुज्झगा । दीसति सुहमेहता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ११ ॥
जे आयरिअउवज्झायाण, सुस्सूसावयण करे । तेसिं सिक्खा पवड्ढति, जलसित्ता इव पायवा ॥ १२ ॥
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा णेउणिआणि अ । गिहिणो उवभोगट्ठा, इहलोगस्स कारणा ॥ १३ ॥
जेण बध वह घोर, परिआव च दारुण । सिक्खमाणा निअच्छति, जुत्ता ते ललिइदिआ ॥ १४ ॥
ते वि त गुरु पूअति, तस्स सिप्पस्स कारणा । सक्कारति नमसति, तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ॥ १५ ॥
किं पुण जे सुअग्गाही, अणतहिअकामए । आयरिआ ज वए भिक्खू तम्हा त नाइवत्तए ॥ १६ ॥

नीअं सिज्जं गइं ठाणं, नीअं च आसणाणि अ। नीअं च पाए वंदिज्जा, नीअं कुज्जा अ अंजलिं ॥ १७ ॥
संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहिणामवि। खमेह अवराहं मे, वइज्ज न पुणु त्ति अ ॥ १८ ॥
दुग्गओ वा पओएणं, चोइओ वहइ रहं। एवं दुबुद्धि किच्चाणं, वुत्तो वुत्तो पकुव्वइ ॥ १९ ॥
आलवंते लवंते वा, न निसिज्जाए पडिस्सुणे। मुत्तूण आसणं धीरो, सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥ २० ॥
कालं छंदोवयारं च, पडिलेहित्ताण हेउहिं। तेण तेण उवाएणं, तं तं संपडिवायए ॥ २१ ॥
विवत्ती अविणीअस्स, संपत्ती विणिअस्स य। जस्सेयं दुहओ नायं, सिक्खं से अभिगच्छइ ॥ २२ ॥
जे आवि चंडे मइइड्ढिगारवे, पिसुणे नरे साहसहीणपेसणे।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए, असंविभागी न हु तस्स मुक्खो ॥ ॥ २३ ॥
निद्देसवित्ती पुण जे गुरूणं, सुअत्थधम्मा विणयम्मि कोविआ।
तरित्तु ते ओघमिणं दुरुत्तरं, खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥ ॥ २४ ॥

त्ति बेमि इअ विणयसमाहिणामज्झयणे बीओ उद्देसो समत्तो ॥

आयरिअ(अ) अग्गिमिवाहिअग्गी, सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा।
आलोइअं इंगिअमेव नच्चा, जो छंदमाराहयई स पुज्जो ॥ १ ॥
आयारमट्ठा विणयं पउंजे, सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो, गुरुं च नासायइ जे स पुज्जो ॥ २ ॥
रायणिएसु विणयं पउंजे डहरा वि अ जे परिआयजिट्ठा।
नीअत्तणे वट्टइ सच्चवई, ओवायवं वक्ककरे स पुज्जो ॥ ३ ॥
अन्नायउंछं चरई विसुद्धं, जवणट्ठया समुआणं च निच्चं।
अलद्धुअं नो परिदेवइज्जा, लद्धुं न विकत्थयई स पुज्जो ॥ ४ ॥
संथारसिज्जासणभत्तपाणे, अप्पिच्छया अइलाभे वि संते।
जो एवमप्पाणभितोसइज्जा, संतोसपाहन्नरए स पुज्जो ॥ ५ ॥
सक्का सहेउं आसाइ कंटया, अओमया उच्छहया नरेणं।
अणासए जो उ सहिज्ज कंटए, वईमए कन्नसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥
मुहुत्तदुक्खा उ हवंति कंटया, अओमया ते वि तओ सुउद्धरा।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥
समावयंता वयणाभिघाया, कन्नंगया दुम्मणिअं जणंति।
धम्मु त्ति किच्चा परमग्गसूरे, जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥
अवण्णवायं च परम्मुहस्स, पच्चक्खओ पडिणीअं च भासं।
ओहारणिं अप्पिअकारिणिं च, भासं न भासिज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥
अलोलुए अक्कुहए अमाई, अपिसुणे आवि अदीणवित्ती।
नो भावए नो वि अ भाविअप्पा, अकोउहल्ले अ सया स पुज्जो ॥ १० ॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण मुंचऽसाहू ।
विआणिआ अप्पगमप्पएण, जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥ ११ ॥
तहेव डहरं च महल्लगं वा, इत्थी पुमं पव्वइअं गिहिं वा ।
नो हीलए नो वि अ खिंसइज्जा थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥ १२ ॥
जे माणिआ सययं माणयंति जत्तेण कन्नं व निवेसयंति ।
ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥ १३ ॥
तेसिं गुरूणं गुणसायराणं, सुच्चाण मेहावि सुभासिआइं ।
चरे मुणी पंचरए तिगुत्तो, चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥ १४ ॥
गुरुमिह सययं पडिअरिअ मुणी, जिणमयनिउणे अभिगमकुसले ।
धुणिअ रयमलं पुरेकडं, भासुरमउलं गइं वइ (गय) ॥ १५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ विणयसमाहीए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

सुअं मे आउसं-तेण भगवया एवमक्खायं । इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिठाणा पन्नत्ता । कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता। इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता । तंजहा-विणयसमाही, सुअसमाही, तवसमाही, आयारसमाही । "विणए सुए अ तवे, आयारे निच्च पंडिआ । अभिरामयंति अप्पाणं, जे भवंति जिइंदिआ" चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ । तंजहा-अणुसासिज्जंतो, सुस्सूसइ । सम्मं पडिवज्जइ। वयमाराहइ। न य भवइ अत्तसंपग्गहिए। चउत्थं पयं भवइ। भवइ अ इत्थ सिलोगो॥ "पेहेइ हिआणुसासणं, सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठिए । न य माणमएण मज्जइ, विणयसमाहिआययट्ठिए" ॥ २ ॥ चउव्विहा खलु सुअसमाही भवइ । तंजहा-सुअं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइअव्वं भवइ । एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइअव्वं भवइ । अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइअव्वं भवइ। ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइअव्वं भवइ। चउत्थं पयं भवइ। भवइ अ इत्थ सिलोगो॥ "नाणमेगग्गचित्तो अ, ठिओ अ ठावई परं । सुआणि अ अहिज्जित्ता, रओ सुअसमाहिए" ॥ ३ ॥ चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ । तंजहा-नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नो कित्तिवन्नसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा । चउत्थं पयं भवइ । भवइ अ इत्थ सिलोगो । "विविहगुणतवोरए, निच्चं भवइ निरासए निज्जरट्ठिए । तवसा धुणइ पुराणपावगं, जुत्तो सया तवसमाहिए"॥ ४ ॥ चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ । तंजहा-नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा, नो नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा, नो कित्तिवन्नसद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा, नन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठिज्जा । चउत्थं पयं भवइ । भवइ अ इत्थ सिलोगो । "जिणवयणरए अतिंतणे, पडिपुन्नाययमाययट्ठिए । आयारसमाहिसंवुडे, भवइ अ दंते भावसंधए ॥ ५ ॥ अभिगम चउरो समाहिओ, सुविसुद्धो सुसमाहिअप्पणो । विउलहिअं सुहावहं पुणो, कुव्वइ अ सो पयखेममप्पणो ॥ ६॥ जाइमरणाओ मुच्चइ इत्थत्थं

च चएइ सव्वसो । सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्डिए ॥ ७ ॥
त्ति बेमि॥ इअ विणयसमाही नाम चउत्थो उद्देसो नवममज्झयणं समत्तं ॥ ९ ॥

॥ अह भिक्खू नाम दसममज्झयणं ॥

निक्खम्ममाणाइ अ बुद्धवयणे, निच्चं चित्तसमाहिओ हविज्जा ।
इत्थीण वसं न आवि गच्छे, वंतं नो पडिआयइ जे स भिक्खू ॥ १ ॥
पुढविं न खणे न खणावए, सीओदगं न पिए न पिआवए ।
अगणि सत्थं जहा सुनिसिअं, तं न जले न जलावए जे स भिक्खू ॥ २ ॥
अनिलेण न वीए न वीयावए, हरियाणि न छिंदे न छिंदावए ।
बीआणि सया विवज्जयंतो, सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ॥ ३ ॥
वहणं तसथावराण होइ, पुढवितणकट्ठनिस्सिआणं ।
तम्हा उद्देसिअं न भुंजे नो वि, पए न पयावए जे स भिक्खू ॥ ४ ॥
रोइअ नायपुत्तवयणे, अत्तसमे मन्निज्ज छप्पि काए ।
पंच य फासे महव्वयाइं, पंचासवसंवरे जे स भिक्खू ॥ ५ ॥
चत्तारि वमे सया कसाए, धुवजोगी हविज्ज बुद्धवयणे ।
अहणे निज्जायरूवरयए, गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥ ६ ॥
सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे, अत्थि हु नाणे तवे संजमे अ ।
तवसा धुणइ पुराणपावगं, मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥ ७ ॥
तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।
होही अट्ठो सुए परे वा, तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥ ८ ॥
तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।
छंदिअ साहम्मिआण भुंजे, भुच्चा सज्झायरए जे स भिक्खू ॥ ९ ॥
न य वुग्गहिअं कहं कहिज्जा, न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।
संजमधुवजोगजुत्ते, उवसंते अविहेडए जे स भिक्खू ॥ १० ॥
जो सहइ हु गामकंटए, अक्कोसपहारतज्जणाओ अ ।
भयभेरवसद्दसप्पहासे, समसुहदुक्खसहे अ जे स भिक्खू ॥ ११ ॥
पडिमं पडिवज्जिआ मसाणे, नो भायए भयभेरवाइं दिस्स ।
विविहगुणतवोरए अ निच्चं, न सरीरं चाभिकंखए जे स भिक्खू ॥ १२ ॥
असइं वोसिट्ठचत्तदेहे, अक्कुट्ठे व हए लूसिए वा ।
पुढविसमे मुणी हविज्जा अनिआणे अकोउहल्ले जे स भिक्खू ॥ १३ ॥
अभिभूअ काएण परीसहाइं, समुद्धरे जाइपहाउ अप्पयं ।
विइत्तु जाईमरणं महब्भयं, तवे रए सामणिए जे स भिक्खू ॥ १४ ॥

हत्थसजए पायसजए, वायसजए सजइंदिए।
अज्झप्परए सुसमाहिअप्पा, सुत्तत्थ च विआणइ जे स भिक्खू ॥ १५ ॥
उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे, अन्नायउछ पुलनिप्पुलाए।
कयविक्कयसन्निहिओ विरए, सव्वसगावगए अ जे स भिक्खू ॥ १६ ॥
अलोल(लु)भिक्खू न रसेसु गिज्झे,उछ चरे जीविअनाभिकखी।
इड्ढिं च सक्कारण पूअण च, चए ठिअप्पा अणिहे जे स भिक्खू ॥ १७ ॥
न पर वइज्जासि अय कुसीले, जेण च कुप्पिज्ज न त वइज्जा।
जाणिअ पत्तेअ पुन्नपाव' अत्ताण न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥ १८ ॥
न जाइमत्ते न य रूवमत्ते, न लाभमत्ते न सुएण मत्ते।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता, धम्मज्झाणरए जे स भिक्खू ॥ १९ ॥
पवेअए अज्जपय महामुणी, धम्मे ठिओ ठावयइ पर पि।
निक्खम्म वज्जिज्ज कुसीललिंग,न आवि हास कुहए जे स भिक्खू ॥ २० ॥
त देहवास असुइ असासय, सया चए निच्चहिअट्ठिअप्पा।
छिंदित्तु जाइमरणस्स बधण, उवेइ भिक्खू अपुणागम गइ ॥ २१ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ भिक्खु नाम दसमज्झयण समत्त ॥

॥ अह रइवक्का पढमा चूलिआ ॥

इह खलु भो पव्वइएण उप्पण्णदुक्खेण सजमे अरइसमावन्नचित्तेण ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएण चेव हयरस्सिगयकुसपोयपडागाभूआइ इमाइ अट्ठारस ठाणाइ सम्म सपडिलेहिअव्वाइ भवति। तजहा ह भो! दुस्समाइ दुप्पजीवी ॥ १ ॥ लहुसगा इत्तरिआ गिहीण कामभोगा ॥ २ ॥ भुज्जो अ साय बहुला मणुस्सा ॥ ३ ॥ इमे अ मे दुक्खे न चिरकालोवट्ठाइ भविस्सइ ॥ ४ ॥ ओमजणपुरक्कारे ॥५॥ वतस्स य पडिआयण ॥ ६ ॥ अहरगइवासोवसपया ॥ ७ ॥ दुल्लहे खलु भो! गिहीण धम्मे गिहिवासमज्झे वसताण ॥८॥ आयके से वहाय होइ ॥९॥ सकप्पे से वहाय होइ ॥१०॥ सोवक्केसे गिहवासे, निरुवक्केसे परिआए ॥ ११ ॥ बधे गिहवासे, मुक्खे परिआए ॥१२॥ सावज्जे गिहवासे, अणवज्जे परिआए ॥ १३ ॥ बहुसाहारणा गिहीण कामभोगा ॥ १४ ॥ पत्तेअ पुन्नपाव ॥ १५ ॥ अणिच्चे खलु भो! मणुआण जीविए कुसग्गजलबिंदुचचले ॥१६॥ बहु च खलु भो! पाव कम्म पगड ॥ १७ ॥ पावाण च खलु भो! कडाण कम्माण पुव्विं दुच्चिन्नाण दुप्पडिकन्ताण वेइत्ता मुक्खो नत्थि अवेइत्ता तवसा वा झोसइत्ता ॥ १८ ॥ अट्ठारसम पय भवइ, भवइ अ इत्थ सिलोगो—

जया य चयई धम्म, अणज्जो भोगकारणा। से तत्थ मुच्छिए बाले, आयइ नावबुज्झई ॥ १ ॥
जया ओहाविओ होइ, इदो वा पडिओ छम। सव्वधम्मपरिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥
जया अ वदिमो होइ, पच्छा होइ अवदिमो। देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥
जया अ पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो, राया व रज्जपब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ४ ॥

जया अ माणिमो होइ, पच्छाहोइ अमाणिमो । सिट्ठिव्व कब्बडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥
जया अ थेरओ होइ, सम.कतजुव्वणो । मच्छुव्व गलिं गलित्ता, स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥
जया अ कुकुडुंबस्स, कुतत्तीहिं विहम्मइ । हत्थी व बंधणे बद्धो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥
पुत्तदारपरिकिण्णो, मोहसंताणसंतओ । पंकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥
अज्ज आहं गणी हुंतो, भाविअप्पा बहुस्सुओ । जइ हरमंतो परिआए, सामन्ने जिणदेसिए ॥ ९ ॥
देवलोगसमाणो अ, परिआओ महेसिणं । रयाणं, अरयाणं च, महानरयसारिसो ॥ १० ॥

अमरोवमं जाणिअ सुक्खमुत्तमं, रयाण परिआए तहारयाणं ।
निरओवमं जाणिअ दुक्खमुत्तमं, रमिज्ज तम्हा परिआयपडिए ॥ ११ ॥
धम्माउ भट्ठं सिरिओववेयं, जन्नग्गि विज्झायमिवप्पतेअं ।
हीलंति णं दुव्विहिअं कुसीला, दाढुद्धिअं घोरविसं व नागं ॥ १२ ॥
इहेव धम्मो अयसो अकित्ती, दुन्नामधिज्जं च पिहुज्जणम्मि ।
चुअस्स धम्माउ अहम्मसेविणो, संभिन्नवित्तस्स य हिट्ठओ गई ॥ १३ ॥
भुंजित्तु भोगाइ पसज्झ चेअसा, तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं ।
गइं च गच्छे अणहिज्झिअं दुहं, बोही अ से नो सुलहा पुणो पुणो ॥ १४ ॥
इमस्स ता नेरइअस्स जंतुणो, दुहोवणीअस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं, किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ॥ १५ ॥
न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ, असासया भोगपिवास जंतुणो ।
न चे सरीरेण इमेण विस्सइ, अविस्सई जीविअपज्जवेण मे ॥ १६ ॥
जस्सेवमप्पा उ हविज्ज निच्छिओ, चइज्ज देहं न हु धम्मसासणं ।
तं तारिसं नो पइलिंति इंदिआ, उविंति वाया व सुदंसणं गिरिं ॥ १७ ॥
इच्चेव संपस्सिअ बुद्धिमं नरो, आयं उवायं विविहं विआणिआ ।
काएण वाया अदु माणसेणं तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि ॥ १८ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ रइवक्का पढमा चूला समत्ता ॥ १ ॥

॥ अह विवित्तचरिया बीआ चूलिआ ॥

चूलिअं तु पवक्खामि, सुअं केवलिभासिअं । जं सुणित्तु सुपुण्णाणं, धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥
अणुसोअपट्ठिए बहुजणम्मि पडिसोअलद्धलक्खेणं । पडिसोअमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेणं ॥ २ ॥
अणुसोअसुहो लोओ,पडिसोओ आसवो सुविहिआणं।अणुसोओ संसारो,पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥ ३ ॥
तम्हा आयारपरक्कमेण संवरसमाहिबहुलेणं । चरिआ गुणा अ नियमा अ, हुंति साहूण दट्ठव्वा ॥ ४ ॥

अणिएअवासो समुआणचरिआ, अन्नायउंछं पयरिक्कया अ ।
अप्पोवही कलहविवज्जणा अ, विहारचरिआ इसिणं पसत्था ॥ ५ ॥
आइन्नओमाणविवज्जणा अ, ओसन्नदिट्ठाहडभत्तपाणे ।

ससट्ठकप्पेण चरिज्ज भिक्खू तज्जायससट्ठ जई जइज्जा ॥ ६ ॥
अमज्जमंसासि अमच्छरीआ, अभिक्खणं निव्विगइं गया अ ।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी, सज्झायजोगे पयओ हविज्जा ॥ ७ ॥
न पडिन्नविज्जा सयणासणाइ, सिज्जं निसिज्जं तह भत्तपाणं ।
गामे कुले वा नगरे व देसे, ममत्तभावं न कहिं पि कुज्जा ॥ ८ ॥
गिहिणो वेआवडिअं न कुज्जा, अभिवायण वंदणपूअणं वा ।
असंकिलिट्ठेहिं समं वसिज्जा, मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥
न या लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहिअं वा गुणओ समं वा ।
इक्को वि पावाइं विवज्जयंतो, विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ १० ॥
संवच्छरं वा वि परं पमाणं, बीअं च वासं न तहिं वसिज्जा ।
सुत्तस्स मग्गेण चरिज्जभिक्खू, सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥ ११ ॥
जो पुव्वरत्तावररत्तकाले, संपिक्खए अप्पगमप्पएणं ।
किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं, किं सक्कणिज्जं न समायरामि ॥ १२ ॥
किं मे परो पासइ किंच अप्पा, किं वाहं खलिअं न विवज्जयामि ।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो, अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥ १३ ॥
जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेणं ।
तत्थेव धीरो पडिसाहरिज्जा, आइन्नओ खिप्पमिव क्खलीणं ॥ १४ ॥
जस्सेरिसा जोग जिइंदिअस्स, धिइमओ सप्पुरिसस्स निच्चं ।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी, सो जीअइ संजमजीविएणं ॥ १५ ॥
अप्पा खलु सययं रक्खिअव्वो, सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं ।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ, सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥ १६ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ विवित्तचरिआ बीआ चूला समत्ता ॥

॥ इअ दसवेआलिअं सुत्तं समत्तं ॥





॥ श्रीमद्देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणप्रणीत ॥

श्री नन्दीसूत्र मूलपाठः ।

जयइ जग जीव जोणी वियाणओ । जगगुरू जगाणदो ॥ जगणाहो जगबधू, जयइ जगप्पियामहोभयव ॥ १ ॥ जयइ सुआण पभवो । तित्थयराण अपच्छिमो जयइ ॥ जयइ गुरूलोगाण । जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥ भद्द सव्व जगुज्जोयगस्स । भद्द जिणस्स वीरस्स ॥ भद्द सुरासुरनमसियस्स । भद्द धुयरयस्स ॥ ३ ॥ गुणभवणगहण । सुयरयण भरियदसणविसुद्धरत्थागा सघ नगर भद्द ते । अखड चारित्तपागारा ॥ ४ ॥ सजम तव तुबारयस्स । नमो सम्मत्त पारियल्लस्स ॥ अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया सघचक्कस्स ॥ ५ ॥ भद्द सील पडागूसियस्स । तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥ सघरहस्स भगवओ । सज्झाय सुनदिघोसस्स ॥ ६ ॥ कम्मरय जलोह विणिग्गयस्स । सुयरयण दीहनालस्स ॥ पच महव्वय थिरकन्नियस्स । गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥ सावग जण महुअरि परिवुडस्स । जिण सूर तेय बुद्धस्स ॥ सघपउमस्स भद्द । समण गण सहस्स पत्तस्स ॥ ८ ॥ तव सजम मयलछण । अकिरिय राहुमुह दुद्धरिसनिच्च । जय सघ चद । निम्मल सम्मत्त विसुद्ध जोण्हागा ॥ ९ ॥ पर तित्थिय गह पह नासगस्स । तवतेय दित्त लेसस्स ॥ नाणु ज्जोयस्स जए भद्द दम सघ सूरस्स ॥ १० ॥ भद्द धिइ वेला परिगयस्स । सज्झाय जोग मगरस्स ॥ अक्खोहस्स भगवओ । सघ समुद्दस्स रुदस्स ॥ ११ ॥ सम्म दसण वर वइर दढ रूढ गाढावगाढ पेढस्स ॥ धम्म वररयण मडिय चामीयर मेहलागस्स ॥ १२ ॥ नियमूसिय कणय सिलायलुज्जल जलत चित्तकूडस्स ॥ नदण वण मणहर सुरभि सील गधुद्धुमायस्स ॥ १३ ॥ जीवदया सुदर कद रुद्दरिय मुणिवर मइद इन्नस्स ॥ हेउ सय धाउ पगलत रयणदित्तोसहि गुहस्स ॥ १४ ॥ सवर वर जल पगलिय उज्झर पविराय माणहारस्स ॥ सावग जण पउर रवत मोर नच्चत कुहरस्स ॥ १५ ॥ विणय नय पवर मुणिवर फुरत विज्जुज्जलत सिहरस्स । विविह गुण कप्प रुक्खग फलभर कुसुमाउल वणस्स ॥ १६ ॥ नाण वर रयण दिप्पत कत वेरुलिय विमल चूलस्स ॥ वदामि विणय पणओ सघ महामदर गिरिस्स ॥ १७ ॥ गुण रयणुज्जल कडय सील सुगधि तव मडिउद्देस ॥ सुयबारसगसिहर सघ महामदर वदे ॥ १८ ॥ नगर रह चक्क पउमे चदे सूरे समुद्द मेरुम्मि ॥ जो उवमिज्जइ सयय त सघगुणायर वदे ॥ १९ ॥ वंदे उसभ अजिय सभव मभिनदण सुमइ सुप्पभ सुपास ॥

ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जस वासुपुज्ज च ॥ २० ॥ विमल मणंत य धम्मं सन्ति कुंथु अरं च मल्लिं च ॥ मुनिसुव्वय नमिनेमिं पास तह वद्धमाण च ॥ २१ ॥ पढमत्थि इंदभूइ वीए पुणहोइ अग्गिभूइत्ति ॥ तईए य वाउभूई तओ वियत्ते सुहम्मेय ॥ २२ ॥ मंडिअ मोरिय पुत्ते अकंपिए चेव अयलभायाय॥ मे यज्जेय पहासेय गणहरा हुति वीरस्स ॥ २३ ॥ निव्वुइ पह सासणय जयइ सया सव भाव देसणय॥ कु समय मय नासणय जिणिंदवर वीर सासणय ॥२४॥ सुहम्म अग्गिवेसाण जम्बू नाम च कासवं पभवं ॥ कच्चायण वंदे वच्छं सिज्जभव तहा ॥ २५ ॥ जसभद्द तुंगिय वंदे संभूय चेव मादर ॥ भद्दबाहु च पाइन्न थूलभद्द च गोयम ॥ २६ ॥ एलावच्चसगोत्त वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ॥ तत्तो कोसियगोत्त बहुलस्स सरिव्वय वन्दे ॥ २७ ॥ हारिय गुत्त साइं च वंदिमो हारिय च सामज्ज ॥ वन्दे कोसिय गोत्त संडिल्लं अज्ज जीयधर ॥ २८ ॥ तिसमुद्दखायकित्तिं दीव समुद्देसु गहिय पेयाल ॥ वंदे अज्ज समुद्द अक्खुभिय समुद्दगंभीर ॥ २९ ॥ भणगं करगं झरगं पभावगं णाणदसण गुणाण ॥ वंदामि अज्ज मंगु सुय सागर पारगं धीरं ॥३०॥ वंदामि अज्ज धम्मं तत्तो वंदे य भद्द गुत्त च ॥ तत्तोय अज्ज वइरं तव नियम गुणेहिं वइर सम ॥ ३१ ॥ वंदामि अज्ज रक्खियख मणे रक्खियचारित्त सव्वस्से ॥ रयण करडग भूओ अणुओगो जेहिं ॥ ३२ ॥ नाणम्मि दसण म्मिय तव विणए णिच्च काल मुज्जुत्त ॥ अज्ज नदिलखमण सिरसा वंदे पसन्नमण ॥ ३३ ॥ वड्ढउ वायगवंसो जसवंसो अज्ज नागहत्थीण॥ वागरण करण भंगिय कम्मपयडी पहाणाण ॥३ ॥ जच्चजण धाउ समप्पहाण मुद्दिय कुवलय निहाण ॥ वड्ढउ वायगवंसो रेवइनक्खत्त नामाण ॥३५॥ अयलपुरा णिक्खते कालियसुय आणुओगिए धीरे ॥ बभद्दीवगसीहे वायगपय मुत्तम पत्ते ॥ ३६॥ जेसिं इमो अणु ओगो पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ॥ बहु नयर निग्गय जसे ते वंदे खंदिलायरिए ॥ ३७ ॥ तत्तो हिमवन्त महंत विक्कमे धिइ परक्कम मणंते ॥ सज्झाय मणंतधरे हिमवंत वंदिमो सिरसा ॥ ३८ ॥ कालिय सुय अणु ओगस्स धारए धारए य पुव्वाण ॥ हिमवंत खमा समणे वंदे णागज्जुणायरिये ॥ ३९ ॥ मिउमद्दव सपन्ने आणुपुव्वि वायगत्तण पत्ते ॥ ओहसुय समायारे नागज्जुण वायए वंदे ॥ ४० ॥ गोविंदाण पि नमो अणुओगे विउल धारिणिंदाण ॥ णिच्च खंति दयाण परूवणे दुल्लभिंदाण ॥ ४१ ॥ तत्तो य भूयदिन्नं निच्च तव सजमे अनिव्विण्ण ॥ पंडिय जण सामण्ण वंदामो सजम विहिण्णु ॥ ४२ ॥ वरकणगतविय चपग विमउलवर कमल गब्भ सरिवन्ने ॥ भविय जणहियय दइए दयागुण विसारए धीरे॥४३॥ अड्ढ भरहप्पहाणे बहुविह सज्झाय सुमुणिय पहाणे । अणुओगिय वर वसभे नाइल कुल वसनंदिकरे ॥४४॥ भूयहियअपगब्भे वंदऽहं भूयदिन्न मायरिए ॥ भवभय वुच्छेय करे सीस नागज्जुण रिसीण ॥४५॥ सुमुणिय निच्चा निच्च सुमुणिय सुत्तत्थ धारय वन्दे ॥ सब्भावुब्भावणया तत्थ लोहिच्चणामाण ॥ ४६ ॥ अत्थ महत्थ क्खाणिं सुसमण वक्खाण कहण निव्वाणिं॥ पयईए महुरवाणिं पयओ पणमामि दूसगणिं ॥ ४७ ॥ तव नियम सच्च सजम विणयज्जव खंति मद्दवरयाण ॥ सील गुणगद्दियाण अणुओग जुगप्पहाणाण ॥ ४८ ॥ सुकुमाल कोमल तले तेसिं पणमामि लक्खण पसत्थे पाए पावयणीण पडिच्छ सय एहिं पणि वइए ॥ ४९ ॥ जे अन्न भगवन्ते कालिय सुय आणु ओगिए धीरे ॥ ते पणमिऊण सिरसा नाणस्स परूवण वोच्छं ॥ ५० ॥

इति ।

सेल-घण, कुडग, चालणि, परिपूणग, हंस, महिस, मेसे य, मसग, जलूग, बिराली जाहग, गो, भेरी आभीरी ॥ ५१ ॥

"सा समासओ तिविहा पन्नत्ता तंजहा जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा" जाणिया जहा खीरं-मिव, जहा हंसा जे घुट्टन्ति इह गुरुगुण समिद्धा दोसे य विवज्जंति तं जाणसु जाणियं परिसं ॥५२॥ अजाणिया जहा-जा होइ पगइमहुरा मियछावय सीह कुक्कुडय भूआ । रयणमिव असठविया । अजाणिया सामवे परिसा ॥ ५३ ॥ दुव्वियड्ढा जह-नय कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण । वत्थिव्व वायपुण्णो फुट्टइ गामिल्लयवियड्ढो दुव्वियड्ढो ॥ ५४ ॥ (सूत्र) नाणं पञ्चविहं पन्नत्तं, तंजहा-आभिणि बोहियनाणं सुयनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं ॥ १ ॥ तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-पच्चक्खं च परोक्खं च ॥ सू० २ ॥ से किं तं पच्चक्खं ? पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा इंदियपच्चक्खं । नोइन्दियपच्चक्खं च ॥ सू० ३ ॥ से किं तं इंदिय पच्चक्खं ? इंदिय-पच्चक्खं पञ्चविहं पण्णत्तं, तंजहा-सो इंदियपच्चक्खं । चक्खिंदिय पच्चक्खं । घाणिंदिय पच्चक्खं । जिब्भिन्दिय पच्चक्खं । फासिंदिय पच्चक्खं । सेतं इंदियपच्चक्खं ॥ सू० ४ ॥ से किं तं नोइंदियपच्चक्खं ? नोइंदियपच्चक्खं तिविहं पण्णत्तं तंजहा-ओहिनाण पच्चक्खं । मणपज्जवनाण पच्चक्खं । केवलनाण पच्चक्खं ॥ ५ ॥ से किं तं ओहिनाण पच्चक्खं ? ओहिनाण पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-भवपच्चइयं च खा ओवसमियं च ॥ ६ ॥ से किं तं भवपच्चइयं ? भवपच्चइयं दुण्हं, तंजहा-देवाणय नेरइयाणय ॥ ७ ॥ से किं तं खा ओवसमियं ? खा ओवसमियं दुण्हं, तंजहा—मणूसाण य पंचेंदिय तिरिक्ख जोणियाण य । को हेऊ खाओवसमियं ? खाओवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिनाणं समुप्पज्जइ ॥ सू० ८ ॥ अहवा गुण-पडिवन्नस्स अणगारस्स ओहिनाणं समुप्पज्जइ तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-आणुगामियं, अणाणुगामियं, वड्ढमाणयं, हीयमाणयं, पडिवाइयं, अपडिवाइयं ॥ ९ ॥ से किं तं आणुगामियं? आणुगामियं ओहिनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-अंतगयं च मज्झगयं च । से किं तं अंतगयं ? अंतगयं तिविहं पण्णत्तं तंजहा पुरओ अंतगयं । मग्गओ अंतगयं । पासओ अंतगयं से किं तं पुरओ अंतगयं ? पुरओ अंतगयं-से जहा नामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा पुरओ काउं पणुल्लेमाणे २ गच्छेज्जा, से तं पुरओ अंतगयं । से किं तं मग्गओ अंतगयं ? मग्गओ अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से तं अंतगयं । से किं तं पासओ अंतगयं ? पासओ अंतगयं सेजहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा पासओ काउं परिकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से तं पासओ अंतगयं से तं अंत-गयं । से किंतं मज्झगयं ? मज्झगयं [illegible] केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा

मणिं वा पईन वा जोइं वा मत्थए काउ समुव्वह माणे २ गच्छिज्जा सेत मज्झगय । अतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो । पुरओ अतगएण ओहि नाणेण पुरओ चेव सखिज्जाणि वा असखेज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ मग्गओ अतगएण ओहिनाणेण मग्गओ चेव सखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ । पासओ अतगएण ओहिनाणेण पासओ चेव सखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ । मज्झगएण ओहिनाणेण सवओ समता सखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ । से त आणुगामिय ओहिनाण ॥ १० ॥ से किं त अणाणुगामिय ओहिनाण अणाणु गामियं ओहिनाण से जहानामए केइ पुरिसे एग महत जोइट्ठाण काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेर तेहिं परिपेरतेहिं, परिघोले माणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाण पासइ, अन्नत्थगए न जाणइ न पासइ एवामेव अणाणुगामिय ओहिनाण जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव सखेज्जाणि वा असखेज्जाणि वा सबद्धाणि वा असबद्धाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ, अन्नत्थगएण पासइ, से त अणाणुगामिय ओहिनाण ॥ ११ ॥ से किं त वड्ढमाणय ओहिनाण? वड्ढमाणय ओहिनाण पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेसु वड्ढमाणस्स वड्ढमाण चरित्तस्स । विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाण चरित्तस्स । सवओ समता ओहि वड्ढइ—

जावइआ तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ॥ ओगाहणा जहन्ना ओहीखित्त जहन्नं तु ॥ ५५ ॥ सव बहु अगणि जीवा निरतर जत्तिय भरिज्जसु ॥ खित्त सवदिसाग परमोही खेत्तनिद्दिट्ठो । ५६ ॥ अगुलमावलियाण भाग मसखिज्ज दोसु सखिज्जा ॥ अगुलमावलियतो आवलिया अगुल पुहुत्त ॥ ५७ ॥ हत्थम्मि मुहुत्ततो, दिवसतो गाउयम्मि बोद्धव्वो ॥ जोयण दिवसपुहुत्त, पक्खतो पन्नवीसाओ ॥ ५८ ॥ भरहम्मि अद्धमासो, जम्बुद्दीवम्मि साहिओ मासो ॥ वास च मणुय लोए, वासपुहुत्त च रुयगम्मि ॥ ५९ ॥ सखिज्जम्मि उ काले, दीवसमुद्दावि हुति सखिज्जा ॥ कालम्मि असखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥ ६० ॥ काले चउण्हवुड्ढी, कालो भइयव्वु खित्त वुड्ढीए ॥ वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥ ६१ ॥ सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयर हवइ खित्त अगुल सेढी मित्ते, ओसप्पिणिओ असखिज्जा ॥ ६२ ॥ से त वड्ढमाणय ओहिनाण ॥ १२ ॥ से किं त हीयमाणय ओहिनाण? हीयमाणय ओहिनाण अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वड्ढमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स सकिलिस्स माणस्स सकिलिस्समाणचरित्तस्स सवओ समन्ता ओही परिहायइ से त हीयमाणय ओहिनाण ॥ १३ ॥ से किं त पडिवाइ ओहिनाण? पडिवाइ ओहिनाण जहण्णेण अगुलस्स असखिज्जय भाग वा सखिज्जय भाग वा वालग्ग वा वालग्ग पुहुत्त वा लिक्ख वा लिक्खपुहुत्त वा, जूय वा जूयपुहुत्त वा, जव वा जव पुहुत्त वा । अगुल वा अगुल पुहुत्त वा । पाय वा पायपुहुत्त वा । विहत्थिं वा विहत्थि पुहुत्त वा । रयणिं वा रयणि पुहुत्त वा। कुच्छिं कुच्छिपुहुत्त वा, धणु वा धणुपहुत्त वा । गाउअ वा गाउयपुहुत्त वा । जोयण वा जोयण पुहुत्त वा । जोअणसय वा जोयणसय पुहुत्त वा जोयण सहस्स वा जो यणसहस्स पुहुत्त वा । जोयणलक्ख वा जोयणलक्ख पुहुत्त वा । जोयणकोडिं वा जोयणकोडाकोडि पुहुत्त वा। जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडि पुहुत्त वा । [जो अणसखिज्ज वा जो अणसखिज्ज पुहुत्त वा जो अण

असंखेज्जा जो अणअसंखेज्जपुहुत्तवा ।] उक्कोसेण लोग वा पासि त्ताण पडिवइज्जा । से त पडिवाइ ओहिनाण ॥ १४ ॥ से किं त अपडिवाइ ओहिनाण । अपडिवाइ ओहिनाणजेण अलोगस्स एग-मवि आगासपएस जाणइ पासइ तेण पर अपडिवाइ ओहिनाण । से च अपडिवाइ ओहिनाण ॥१५॥ त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तजहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्थ दव्वओ ण ओहि-नाणी जहन्नेण अणताइ रूविदव्वाइ जाणइ पासइ उक्कोसेण सव्वाइ रूविदव्वाइ जाणइ पासइ खित्त ओण ओहिनाणी जहन्नेण अगुलस्स असखिज्जय भाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखि ज्जाइ अलोगे लोगप्पमाण मित्ताइ खडाइ जाणइ पासइ, कालओ ण ओहिनाणी जहन्नेण आवलियाए असखिज्जय भाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अईय मणागय च काल जाणइ, पासइ भावओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अणत भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेणवि अणत भावे जाणइ पासइ । सव्व भावाण मणत भाग भावे जाणइ पासइ ॥ १६ ॥ ओही भवपच्चइओ गुणपच्च-इओ य वण्णिओ दुविहो । तस्स य बहू विगप्पा दव्वे खित्ते य कालेय । नेरइयदेवतित्थकरा य ओहिस्सऽबाहिरा हुति । पासति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासति । से च ओहिनाणपच्चक्ख से किं त मणपज्जवनाण ? मणपज्जवनाणे ण भते ! किं मणुस्साण उप्पज्जइ अमणुस्साण ? गोयमा ! मणुस्साण नो अमणुस्साण० ? जइमणुस्साण किं समुच्छिममणुस्साण गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ? नोसमुच्छिममणुस्साण उप्पज्जइ गब्भवक्कतियमणुस्साण । जइगब्भवक्कतियमणुस्साण कि कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, अकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, अन्तरदीवगगब्भव-क्कतिय मणुस्साण, गोयमा ? कम्मभूमिय गब्भवक्कतियमणुस्साण नो अकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय-मणुस्साण, नो अन्तरदीवग गब्भ वक्कतियमणुस्साण जइ कम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण, कि सखिज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतियमणुस्साण असखिज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणु-स्साण ? गोयमा ? सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, नो असखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय मणुस्साण। जइ सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, कि पज्जत्तग सखे ज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण,अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ! पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण,नो अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण । जइ पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभू मिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण० कि सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्क तिय मणुस्साण, मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, स-म्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ! सम्म दिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण नो मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण०, नो सम्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, जइ सम्मदिट्ठिपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभू मिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण किं सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ-वक्कतिय मणुस्साण, असजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण । सजया सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणु

स्साण ? गोयमा ! संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, नो असंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण। नो संजयासंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण। जइ संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण किं पमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण ? गोयमा ! अपमत्तसंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, नो पमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण। जइ अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, किं इड्ढीपत्त अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण अणिड्ढीपत्त अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा ! इड्ढीपत्तअपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, नो अणिड्ढीपत्त अपमत्तसंजयसम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय मणुस्साण। मणपज्जवनाण समुप्पज्जइ ॥ सू० ॥ १७ ॥ त च दुविह उप्पज्जइ तजहा उज्जुमई य विउलमई य त समासओ चउव्विह पन्नत्त तजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओण उज्जुमई अणते अणत पएसिए खंधे जाणइ पासइ, त चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ। खित्तओण उज्जुमई यजहन्नेण अंगुलस्स असंखेज्जय भाग उक्कोसेण अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डग पयरे उड्ढ जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरिय जाव अन्तोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमिसु तीसाए अकम्मभूमिसु छपन्नाए अन्तरदीवगेसु सन्निपचेदियाण पज्जत्तयाण मणोगए भावे जाणइ पासइ त चेव विउलमई अड्ढाईज्जेहिमगुलेहिं अब्भहियतर विउलतर विसुद्धतर वितिमिरतराग खेत्त जाणइ पासइ। कालओ ण उज्जुमई जहन्नेण पलिओवमस्स असखिज्जयभाग उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असखिज्जयभाग अतीयमणागय वा काल जाणइ पासइ। त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ पासइ। भावओ ण उज्जुमई अणते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाण अणतभाग जाणइ पासइ। त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ पासइ। मणपज्जवनाण पुण जणमणपरिचिंतियत्थपागडण। माणुसखित्तनिबद्ध गुणपच्चइय चरित्तवओ ॥ ६७ ॥ से त मणपज्जवनाण सू० ॥ १८ ॥ से किं त केवलनाण ? केवलनाण दुविह पन्नत्त, तजहा—भवत्थकेवलनाण च सिद्धकेवलनाण च। से किं त भवत्थकेवलनाण ? भवत्थकेवलनाण दुविह पण्णत्त, तजहा—सजोगिभवत्थकेवलनाण च अजोगिभवत्थकेवलनाण च। से किं त सजोगिभवत्थकेवलनाण ? सजोगिभवत्थकेवलनाण दुविह पण्णत्त, तजहा—पढमसमयसजोगिभवत्थ, केवलनाण च अपढम समय सजोगिभवत्थकेवलनाण च, अहवा, चरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाण च अचरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाण च, से त सजोगिभवत्थकेवलनाण। से किं त अजोगिभवत्थकेवलनाण ? अजोगिभवत्थकेवलनाण दुविह पन्नत्त, तजहा—पढमसमयअजोगि-

भवत्थकेवलनाण च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाण च अहवा चरमसमयअजोगिभवत्थकेवल नाण च अचरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाण च, से त्त अजोगिभवत्थकेवलनाण, से त्त भवत्थके- वलनाण ॥ सू० ॥ १९ ॥ से किं त सिद्धकेवलनाण? सिद्धकेवलनाण दुविह पण्णत्त, तंजहा—अण- तरसिद्धकेवलनाण च परपरसिद्धकेवलनाण च ॥ सू० ॥ २० ॥ से किं त अणतरसिद्धकेवलनाण? अणतरसिद्धकेवलनाण पन्नरसविह पण्णत्त, तंजहा—तित्थसिद्धा १, अतित्थसिद्धा २, तित्थयरसिद्धा ३, अतित्थयरसिद्धा ४, सयबुद्धसिद्धा ५, पत्तेयबुद्धसिद्धा ६, बुद्धबोहियसिद्धा, ७ इत्थिलिंगसिद्धा ८, पुरिसलिंगसिद्धा ९, नपुसगलिंगसिद्धा १०, सलिंगसिद्धा ११, अन्नलिंगसिद्धा १२, गिहिलिंग सिद्धा १३, एगसिद्धा १४, अणेगसिद्धा १५, से त्त अणतरसिद्धकेवलनाण ॥ सू० ॥ २१ ॥ से किं त परपरसिद्धकेवलनाण? परपरसिद्धकेवलनाण अणेगविह पण्णत्त, तंजहा—अपढमसमयसिद्धा, दुस- मयसिद्धा, तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, जाव दससमयसिद्धा, सखिज्जसमयसिद्धा, असखिज्जस मयसिद्धा, अणतसमयसिद्धा, से त्त परपरसिद्धकेवलनाण, से त्त सिद्धकेवलनाण ॥ त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तंजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ ण केवलनाणी सव्वद- व्वाइ जाणइ पासइ। खित्तओ ण केवलनाणी सव्व खित्त जाणइ पासइ। कालओ ण केवलनाणी सव्व काल जाणइ पासइ। भावओ ण केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ। अह सव्वदव्वपरिणाम, भावविण्णत्तिकारणमणत। सासय मप्पडिवाइ, एगविह केवल नाण ॥ ६६ ॥ सू० ॥ २२ ॥ केव- लनाणेणऽत्थे, नाउ ज तत्थ पण्णवणजोगे। ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुय हवइ सेस ॥ ६७ ॥ से त्त केवलनाण, से त्त नोइदियपच्चक्ख से त्त पच्चक्खनाण ॥ सू० ॥ २३ ॥ से किं त परोक्ख- नाण? परोक्खनाण दुविह पन्नत्त, तंजहा—आभिणिबोहियनाणपरोक्ख च, सुयनाण परोक्ख च, जत्थ आभिणिबोहियनाण तत्थ सुयनाण, जत्थ सुयनाण तत्थाभिणिबोहियनाण, दोऽवि एयाइ अण्णमण्णमणुगयाइ, तहवि पुण इत्थ आयरिया नाणत्त पण्णवयति—अभिनिबुज्झइति आभिणिबोहि- यनाण, सुणेइत्ति सुय, मइपुव्व जेण सुय, न मई सुयपुव्विया ॥ सू० ॥ २४ ॥ अविसेसिया मई, मइनाण च मइअन्नाण च। विसेसिया सम्मदिट्ठिस्स मई मइनाण मिच्छदिट्ठिस्स मई मइअन्नाण। अविसेसिय सुय सुयनाण च सुयअन्नाण च। विसेसिय सुय सम्मदिट्ठिस्स सुय सुयनाण, मिच्छ- दिट्ठिस्स सुय सुयअन्नाण ॥ सू० २५ ॥ से किं त आभिणिबोहियनाण? आभिणिबोहियनाण दुविह पण्णत्त, तंजहा—सुयनिस्सिय च, अस्सुयनिस्सिय च। से किं त अस्सुयनिस्सिय? अस्सुयनि- स्सिय चउव्विह पण्णत्त, तंजहा—उप्पत्तिया १ वेणइया २, कम्मया ३, परिणामिया ४। बुद्धि चउव्विहा वुत्ता, पचमा नोवलब्भइ ॥ ६८ ॥ सू० ॥ २६ ॥ पुव्वमदिट्ठमस्सुयमवेइय, तक्खणवि- सुद्धगहियत्था। अव्वाहयफलजोगा, बुद्धि उप्पत्तिया नाम ॥ ६९ ॥ भरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३ खुड्डग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८। गय ९ घयण १० गोल ११ खभे १२, खुड्डग १३ मग्गि १४ त्थि १५ पइ १६ पुत्ते १७ ॥ ७० ॥ भरह १ सिल २ मिढ ३ कुक्कुड ४, तिल ५ वालुय ६ हत्थि ७ अगड ८ वणसडे ९। पायस १० अइया ११ पत्ते १२, खाडहिला १३ पच पिअरो य १४ ॥ ७१ ॥ महुसित्थ १८ मुद्दि १९ अके २०, य नाणए २१ भिक्खु २२ चेडगनिहाणे २३ सिक्खा २४ य अत्थसत्थे २५, इच्छा य महं २६ सयसहस्से २७ ॥ ७२ ॥

भरनित्थरणसमत्था, तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला। उभओलोगफलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ ७३ ॥ निमित्ते १ अत्थसत्थे य २ लेहे ३ गणिए य कूव ५ अस्से ६ य। गद्दभ ७ लक्खण ८ गंठी ९, अगए १० रहिए ११ य गणिया १२ य ॥ ७४ ॥ सीया साडी दीहं, च तण अवसव्वय च कुंचस्स १३ निव्वोदए १४ य गोणे, घोडगपडण च रुक्खाओ १५ ॥ ७५ ॥ उवओगदिट्ठसारा, कम्मपसंगपरिघोलणविसाला। साहुक्कारफलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ ७६ ॥ हेरण्णिए १ करिसए २, कोलिय ३ डोवे ४ य मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ तुन्नाए ८ वड्ढइ य ९ पूयइ १० घड ११ चित्तकारे १२ य ॥ ७७ ॥ अणुमाणहेउदिट्ठंतसाहिया वयविवागपरिणामा। हियनिस्सेयसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥ ७८ ॥ अभए १ सिट्ठि कुमारे ३, देवी ४ उदिओदए हवइ राया ५ साहू य नंदिसेणे ६, धणदत्ते ७ सावग ८ अमच्चे ९ ॥ ७९ ॥ खमए १० अमच्चपुत्ते ११, चाणक्के १२ चेव थूलभद्दे १३ य। नासिक्कसुंदरिनंदे १४ वइरे परिणामिया बुद्धी ॥८०॥ चलणाहण १६ आमंडे १७, मणी १८ य सप्प १९ य खग्गि २० थूभिंदे २१। परिणामियबुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥ ८१ ॥ सेत्तं अस्सुयनिस्सियं। से किं तं सुयनिस्सियं? सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-उग्गहे १ ईहा २ अवाओ ३ धारणा ४ ॥ सू० ॥ २६ ॥ से किं तं उग्गहे? दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-अत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य, ॥ सू० ॥ २७ ॥ से किं तं वंजणुग्गहे? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-सोइंदियवंजणुग्गहे, घाणिंदियवंजणुग्गहे जिब्भिंदियवंजणुग्गहे फासिंदियवंजणुग्गहे, से त्तं वंजणुग्गहे ॥ सू० ॥ ॥ २८ ॥ से किं तं अत्थुग्गहे? अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियअत्थुग्गहे, चक्खिंदियअत्थुग्गहे, घाणिंदियअत्थुग्गहे, जिब्भिंदियअत्थुग्गहे, फासिंदियअत्थुग्गहे, नोइंदियअत्थुग्गहे ॥ सू० ॥ ॥ २९ ॥ तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा-ओगेण्हणया, उवधारणया, सवणया, अवलंबणया, मेहा, से त्तं उग्गहे ॥ सू० ॥ ३० ॥ से किं तं ईहा? छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदियईहा, चक्खिंदियईहा, घाणिंदियईहा, जिब्भिंदियईहा, फासिंदियईहा, नोइंदियईहा, तीसेणं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणा वंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा-आभोगणया, मग्गणया, गवेसणया, चिंता, वीमंसा, से त्तं ईहा ॥ सू० ॥ ३१ ॥ से किं तं अवाए? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियअवाए, चक्खिंदियअवाए, घाणिंदियअवाए जिब्भिंदियअवाए, फासिंदियअवाए, नोइंदियअवाए, तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवन्ति, तंजहा—आउट्टणया, पच्चाउट्टणया, अवाए, बुद्धी, विण्णाणे, से त्तं अवाए ॥ सू० ३२ ॥ से किं तं धारणा? धारणा छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदियधारणा, चक्खिंदियधारणा, घाणिंदियधारणा, जिब्भिंदियधारणा, फासिंदियधारणा, नोइंदियधारणा, तीसे णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा धरणा, धारणा, ठवणा, पइट्ठा, कोट्ठे, से त्तं धारणा ॥ सू० ॥ ३३ ॥ उग्गहे इक्कसमइए, अंतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिए अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ॥ सू० ॥ ३४ ॥ एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियनाणस्स वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठंतेण मल्लगदिट्ठंतेण। से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं? पडिबोहगदिट्ठंतेणंसे जहानामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहिज्जा,

अमुगा अमुगत्ति तत्थ चोयगे पन्नवय एव वयासी—किं एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति? दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति? जाव दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति? संखिज्ज-समयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति?, असंखिज्ज समयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति?, एव वयत चोयग पण्णवए एव वयासी—नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, जाव नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, नो संखिज्जसमयप-विट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, से त पडिबोहग-दिट्ठतेण। से किं त मल्लगदिट्ठतेण? मल्लगदिट्ठतेण से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लग गहाय तत्थेग उदगबिंदु पक्खेविज्जा, से नट्ठे, अण्णेऽवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे, एव पक्खि-प्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगबिंदू जे ण त मल्लग रावेहिइत्ति, होही से उदगबिंदू, जे ण तसि मल्लगसि ठाहिति, होही से उदगबिंदू जे ण त मल्लग भरिहित, होही से उदगबिंदू, जे ण त मल्लग पवाहेहिति, एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं अणतेहिं पुग्गलेहिं जाहे त वजण पूरिय होइ; ताहेहुति करेइ नो चेव ण जाणइ के वेम सद्दाइ? तओ ईह पविसइ, तओजाणइ अ-मुगे एस सद्दइ, तओ अवाय पविसइ तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओण धारेइ संखिज्ज वा काल, असंखिज्ज वा काल, से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त सद्द सुणिज्जा, तेण सद्दोत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस सद्दाइ, तओ ईह पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस सद्दे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल अ सखेज्ज वा काल। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त रूव पासिज्जा तेण रूवत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस रूवत्ति; तओ ईहपविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रूवे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल, असखेज्ज वा काल। से जहानामए केइपुरिसे अव्वत्त गध अग्घाइज्जा तेण गधत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेम गधेत्ति; तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस गधे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ; तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल असखेज्ज वा काल। से जहानामए—केइ पुरिसे अव्वत्त रस आसाइज्जा तेण रसोत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस रसेत्ति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ संखिज्ज वा काल असंखिज्ज वा काल। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त फास पडिसवेइज्जा तेण फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस फासओत्ति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल असखेज्ज वा काल। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त सुमिण पासिज्जा तेण सुमिणेत्ति उग्गहिए नो चेव ण जाणइ के वेस सुमिणेत्ति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सुमिणे; तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल, असखेज्ज वा काल, से त्त मल्लगदिट्ठतेण॥ सू० ३५॥ त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तजहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, तत्थ दव्वओ ण आ-भिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वाइ दव्वाइ जाणइ, न पासइ। खेत्तओण आभिणिबोहियनाणी—

आएसेण सव्व खेत्त जाणइ न पासइ। कालओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व काल जाणइ न पासइ। भावओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वे भावे जाणइ, न पासइ।

उग्गह ईहाऽवाओ, य धारणा एव हुति चत्तारि। आभिणिबोहियनाणस्स भेयवत्थू समासेण ॥८२॥ * अत्थाण उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा। ववसायम्मि अवाओ, धरण पुण धारण बिंति ॥ ८३ ॥ उग्गह इक्क समय, ईहावाया मुहुत्तमद्ध तु। कालमसख सख च धारणा होई नायव्वा ॥ ८४ ॥ पुट्ठ सुणेइ सद्द, रूव पुण पासइ अपुट्ठ तु। गध रस च फास च, बद्धपुट्ठ वियागरे ॥ ८५ ॥ भासासमसेढीओ, सद्द ज सुणइ मीसिय सुणइ। वीसेढी पुण सद्द, सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ८६ ॥ ईहा अपोह वीमसा, मग्गणा य गवेसणा। सन्ना सई मई पन्ना, सव्व आभिणिबोहिय ॥ ८७ ॥

से त्त आभिणिबोहियनाणपरोक्ख, से त्त मइनाण ॥ सू० ॥ ३६ ॥ से किं त सुयनाणपरोक्ख? सुयनाणपरोक्ख चोद्दसविह पण्णत्त तजहा—अक्खरसुय १ अणक्खरसुय २ सण्णिसुय ३ असण्णिसुय ४ सम्मसुय ५ मिच्छसुय ६ साइय ७ अणाइय ८ सपज्जवसिय ९ अपज्जवसिय १० गमिय ११ अगमिय १२ अगपविट्ठ १३ अणगपविट्ठ १४ ॥सू०३७॥ से किं त अक्खरसुय? अक्खरसुय तिविह पण्णत्त तजहा—सन्नक्खर वजणक्खर, लद्धिअक्खर। से किं त सन्नक्खर? सन्नक्खर अक्खरस्स सठाणागिई, से त्त सन्नक्खर। से किं त वजणक्खर? वजणक्खर अक्खरस्स वजणाभिलावो, से त्त वजणक्खर। से किं त लद्धिअक्खर? लद्धिअक्खर अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खर समुप्पज्जइ, तजहा—सोइदिय लद्धिअक्खर, चक्खिदिय लद्धिअक्खर, घाणिंदिय लद्धिअक्खर, रसणिंदिय लद्धिअक्खर, फासिंदिय लद्धिअक्खर, नोइदिय लद्धिअक्खर, से त्त लद्धिअक्खर, से त्त अक्खरसुय ॥ से किं त अणक्खरसुय? अणक्खरसुय अणेगविह पण्णत्त, तजहा—ऊससिय नीससिय, निच्छूढ खासिय च छीय च। निस्सिंघियमणुसार, अणक्खर छेलियाईय ॥ ८८ ॥

से त्त अणक्खरसुय ॥ सू० ३८ ॥ से किं त सण्णिसुय? सण्णिसुय तिविह पण्णत्त, तजहा—कालिओवएसेण, हेऊवएसेण, दिट्ठिवाओवएसेण। से किं त कालिओवएसेण? कालिओवएसेण ... ण अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा गवेसणा, चिंता, वीमसा, से ण सण्णीति लब्भइ। जस्स ण नत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमसा, से ण असण्णीति लब्भइ, से त्त कालिओवएसेण। से किं त हेऊवएसेण? हेऊवएसेण जस्स ण अत्थि अभिसधारणपुव्विया करणसत्ती से ण सण्णीति लब्भइ। जस्स ण नत्थि अभिसधारणपुव्विया करणसत्ती से ण असण्णीति लब्भइ, से त्त हेऊवएसेण। से किं त दिट्ठिवाओवएसेण? दिट्ठिवाओवएसेण सण्णिसुयस्स खओवसमेण सण्णी लब्भइ, असण्णिसुयस्स खओवसमेण असण्णी लब्भइ, से त्त दिट्ठिवाओवएसेण, से त्त सण्णिसुय, से त्त असण्णिसुय ॥ सू० ॥ ३९ ॥ से किं त सम्मसुय? सम्मसुय ज इम अरहतेहिं भगवतेहिं उप्पण्णनाणदसणधरेहिं तेलुक्कनिरिक्खियमहियपूइएहिं तीयपडुप्पण्णमणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं पणीय दुवालसग गणिपिडग, तजहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाण ३ समवाओ

* अत्थाण उग्गहण, च उग्गह तह वियालण ईह। ववसाय च अवाय धरण पुण धारण बिंति ॥ १ ॥ इति पाठान्तरगाथा।

४ विवाहपण्णत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अतगडदसाओ अतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइ १० विवागसुय ११ दिट्ठिवाओ १२, इच्चेय दुवालसग गणिपिडग चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुय, अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुय, तेण पर भिण्णेसु भयणा, से त सम्मसुय ॥ सू० ॥ ४० ॥ से कि त मिच्छासुय ? मिच्छासुय ज इम अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छदबुद्धिमइविगप्पिय, तजहा—भारह, रामायण, भीमासुरुक्ख, कोडिल्लय, सगडभद्दियाओ, खोड (घोडग) मुह, कप्पासिय, नागसुहुम, कणगसत्तरी, वइसेसिय, बुद्धवयण, तेरासिय, काविलिय, लोगायय, सट्ठितत, माढर, पुराण, वागरण, भागवय, पायजली पुस्सदेवय, लेह, गणिय, सउणरुय नाडयाइ, अहवा बावत्तरिकलाओ, चत्तारि य वेया सगोवगा, एयाइ मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइ मिच्छासुय एयाइ चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइ सम्मसुय, अहवा मिच्छदिट्ठिस्सवि एयाइ चेव सम्मसुय, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ जम्हा ते मिच्छदिट्ठिया तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ चयति,से त मिच्छासुय ॥ सू० ॥ ४१ ॥ से कि त साइय सपज्जवसिय, अणाइय अपज्जवसिय च ? इच्चेइय दुवालसग गणि पिडग वुच्छित्तिनयट्ठयाए साइय सपज्जवसिय अवुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइय अपज्जवसिय, त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, तत्थ दव्वओ ण सम्मसुय एग पुरिस पडुच्च साइय सपज्जवसिय, बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, खेत्तओ ण पच भरहाइ पचेरवयाइ पडुच्च साइय सपज्जवसिय, पच महाविदेहाइ पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, कालओ ण उस्सप्पिणि ओसप्पिणि च पडुच्च साइय सपज्जवसिय, नो उस्सप्पिणि नो ओसप्पिणि च पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, भावओ ण जे जया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, ते तया भावे पडुच्च साइय सपज्जवसिय खा ओवसमिय पुण भाव पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, अहवा भवसिद्धियस्स सुय साइय सपज्जवसिय च, अभवसिद्धियस्स सुय अणाइय अपज्जवसिय च, सव्वागासपएसग्ग सव्वागासपएसेहिं अणतगुणिय पज्जवक्खर निप्फज्जइ, सव्वजीवाणपि य ण अक्खरस्स अणतभागो,निच्चुग्घाडिओ जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा तेण जीवो अजीवत्त पाविज्जा,— "सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइ पभा चदसूराण" से त साइय सपज्जवसिय, से त अणाइय अपज्जवसिय ॥ सू० ॥ ४२ ॥ से किं त गमिय ? गमिय दिट्ठिवाओ, से कि त अगमिय अगमिय कालिय सुय, से त गमिय, से त अगमिय । अहवा त समासओ दुविह पण्णत्त, तजहा—अगपविट्ठ, अग बाहिर च । से किं त अगबाहिर ? अगबाहिर दुविह पण्णत्त, तजहा—आवस्सय च, आवस्सयवइरित्त च । से किं त आवस्सय ? आवस्सय छव्विह पण्णत्त, तजहा—सामाइय, चउवीसत्थओ, वदणय, पडिक्कमण, काउस्सग्गो, पच्चक्खाण, से त आवस्सय । से किं त आवस्सयवइरित्त ? आवस्सयवइरित्त दुविह पण्णत्त, तजहा–कालिय च, उक्कालिय च। से किं त उक्कालिय २ अणेगविह पण्णत्त,तजहा–दसवेयालिय, कप्पियाकप्पिय, चुल्लकप्पसुय, महाकप्पसुय, उववाइय, रायपसेणिय, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमाय, नदी, अणुओगदाराइ, देविंदत्थओ, तदुलवेयालिय, चदाविज्झय, सूरपण्णत्ती, पोरिसिमण्डल, मण्डलपवेसो, विज्जाचरणविणिच्छओ, गणिविज्जा, झाणविभत्ती, मरणविभत्ती, आयवि

सोही, वीयरागसुय, सलेहणासुय, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपचक्खाण, महापचक्खाण, एवमाइ, से त्तं उक्कालिय। से किं त कालिय ? कालिय अणेगविह पण्णत्त, तजहा–उत्तरज्झयणाइ, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीह, महानिसीह, इसिभासियाइ, जम्बूदीवपन्नत्ती, दीवसागरपन्नत्ती, चदपन्नत्ती, खुड्डिया विमाणपविभत्तीमहल्लिया विमाणपविभत्ती, अगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, धरणोववाए, वेसमणोववाए वेलधरोववाए, देविंदोववाए, उट्ठाणसुए, समुट्ठाणसुए, नागपरियावलियाओ, निरयावलियाओ कप्पियाओ, कप्पवडिसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हीदसाओ, आसीविसभावणाण, दिट्ठिविसभावणाणं, सुमिण भावणाण महासुमिणभावणाण, तेयग्गिनिसग्गाण, एवमाइयाइ चउरासीइ पइण्णगसहस्साइ भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स, तहा सखिज्जाइ पइन्नगसहस्साइ मज्झिमगाण जिणवराण, चोद्दस पइन्नगसहस्साइ भगवओ वद्धमाणसामिस्स, अहवा जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाए, वेणइयाए कम्मयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइ, पत्तेयबुद्धावि तत्तिया चेव, से त्त कालिय, से त्त आवस्सयवइरित्त, से त्तं अणगपविट्ठ ॥ सू० ॥ ४३ ॥ से किं त अगपविट्ठ ? अगपविट्ठ दुवालसविं पण्णत्त, तजहा–आयारो १ सूयगडो २ ठाण ३ समवाओ ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइ १० विवागसुय ११ दिट्ठिवाओ १२ ॥ सू० ४४ ॥ से किं त आयारे ? आयारे ण समणाण निग्गथाण आयारगोयरविणयवेणइयसिक्खाभासाअभासाचरणकरणजायामायावित्तीओ आघविज्जति, से समासओ पचविहे पण्णत्ते, तजहा–नाणायारे दसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे, आयारे ण परित्ता वायणा, सखेज्जा, अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से ण अगट्ठयाए पढमे अगे, दो सुयक्खधा, पणवीस अज्झयणा, पचासीइ उद्देसणकाला, पचासीइ समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइ पयग्गेण, सखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पन्नविज्जति, परुविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्त आयारे १ ॥ सू० ॥ ४५ ॥ से किं त सूयगडे ? सूयगडे ण लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोयालोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जति, अजीवा सूइज्जति, जीवाजीवा सूइज्जति, ससमए सूइज्जइ, परसमए सूइज्जइ, ससमयपरसमए सूइज्जइ, सूयगडे ण असीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीइए अकिरियावाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणीयवाईण, बत्तीसाए वेणइयवाईण, तिण्ह तेसट्ठाण पासडियसयाण वूह किच्चा ससमए ठाविज्जइ, सूयगडे ण परित्ता वायणा, सखिज्जा, अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अगट्ठयाए बिइए अगे, दो सुयक्खधा, तेवीस अज्झयणा, तित्तीस उद्देसणकाला, तित्तीस समुद्देसणकाला, छत्तीस पयसहस्साइ पयग्गेण, सखिज्जा, अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पणविज्जति, परुविज्जति, दसिज्जति, निद-

सिज्जति, उवदंसिज्जति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं सूयगडे २ ॥ सू० ॥ ४६ ॥ से किं तं ठाणे ? ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवाजीवा ठाविज्जंति, ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमयपरसमए ठाविज्जइ, लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ। ठाणे णं टंका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पब्भारा, कुंडाइं, गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ, आघविज्जंति। ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ। ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा एगवीसं उद्देसणकाला, एक्कवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरिं पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं ठाणे ३ ॥ सू० ॥ ४७ ॥ से किं तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति, जीवाजीवा समासिज्जंति, ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमयपरसमए समासिज्जइ लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ लोयालोए समासिज्जइ। समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसयविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ; दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ, समवायस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ, निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले सयसहस्से पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से त्तं समवाए ४ सू० ।४८। से किं तं विवाहे? विवाहे णं जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जंति, जीवाजीवा विआहिज्जंति ससमए विआहिज्जंति, परसमए विआहिज्जंति, ससमएपरसमए विआहिज्जंति, लोए विआहिज्जंति अलोए विआहिज्जंति, लोयालोए विआहिज्जंति, विवाहस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए, दस उद्देसगसहस्साइं दस समुद्देसगसहस्साइं, छत्तीसं वागरणसहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं विवाहे ५ ॥ सू० से किं तं नायाधम्मकहाओ ? नाय नायाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, रायाणो, अम्मापियरो

धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचाया, पव्वज्जाओ, परिआया, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अतकिरियाओ य आघविज्जति, दस धम्मकहाण वग्गा, तत्थ ण एगमेगाए धम्मकहाए पच पच अक्खाइयासयाइ, एगमेगाए अक्खाइयाए पच पच उवक्खाइया सयाइ एगमेगाए उवक्खाइयाए पच पच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइ एवामेव सपुव्वावरेण अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ हवतित्ति समक्खाय। नायाधम्मकहाण परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से ण अगट्ठयाए छट्ठे अगे, दो सुयक्खधा, एगूणवीस अज्झयणा, एगूणवीस समुद्देसणकाला, सखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त नायाधम्मकहाओ ६ ॥ सू० ॥ ५० ॥ से किं त उवासगदसाओ? उवासगदसासु ण समणोवासयाण नगराइ उज्जाणाइ, चेइयाइ वणसडाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचाया, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जणया, पडिमाओ, उवसग्गा, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुकुलपच्चाईओ, पुणबोहिलाभा, अतकिरियाओ आघविज्जति, उवासगदसाण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से ण अगट्ठयाए सत्तमे अगे, एगे, एगे सुयक्खधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला सखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेण सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघ- [illegible] पन्नविज्जति परूविज्जति दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, विन्नाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त उवासगदसाओ ७ ॥ सू० ॥ ५१ ॥ से [illegible] त अतगडदसाओ? अतगडदसासु ण अतगडाण नगराइ उज्जाणाइ, चेइयाइ, वणसडाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचागा, पव्वज्जाओ परिआगा, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, अतकिरियाओ, आघविज्जति, अतगडदसासु ण परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणी, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ से ण अगट्ठयाए अट्ठमे अगे, एगे सुयक्खधे, अट्ठवग्गा अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला सखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पन्नविज्जति परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विन्नाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ से त अतगडदसाओ ८ ॥ सू० ॥ ५२ ॥ से किं त अणुत्तरोववाइयदसाओ?

अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, पडिमाओ, उवसग्गा, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं, अणुत्तरोववाइय त्ति उववत्ती, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघविज्जति, अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, तिन्नि वग्गा, तिन्नि उद्देसणकाला, तिन्नि समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ से त्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ ॥ सू० ॥ ५३ ॥ से किं तं पण्हावागरणाइं? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं, अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं, तंजहा—अंगुट्ठपसिणाइं बाहुपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं, अन्नेवि विचित्ता विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति, पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं पण्हावागरणाइं १० ॥ सू० ॥ ५४ ॥ से किं तं विवागसुयं? विवागसुए णं सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जइ, तत्थ णं दस दुहविवागा दस सुहविवागा। से किं तं दुहविवागा? दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, निरयगमणाइं, संसारभवपवंचा दुहपरंपराओ, दुकुलपच्चायाइओ, दुल्लहबोहियत्तं, आघविज्जइ, से त्तं दुहविवागा। से किं तं सुहविवागा? सुहविवागेसु णं सुहविवागाणं नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं चेइयाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुहपरंपराओ, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति। विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए इक्कारसमे अंगे, दो सुयक्खंधा, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला, संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता [illegible] पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकड-

डनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पन्नविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विन्नाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्त विवागसुय ११ ॥ सू० ॥ ५५ ॥ से कि तं दिट्ठिवाए? दिट्ठिवाएण सव्वभावपरूवणा आघविज्जइ, से समासओ पचविहे पण्णत्ते, तजहा–परिकम्मे १ सुत्ताइ २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५। से कि त परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तजहा–सिद्धसेणियापरिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्ठसेणिया-परिकम्मे ३ ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ उवसपज्जसेणियापरिकम्मे ५ विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७। से किं त सिद्धसेणियापरिकम्मे? सिद्धसेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तजहा–माउयापयाइ १ एगट्ठियपयाइ २ अट्ठपयाइ ३ पाढोआगासपयाइ ४ केउभूय ५ रासिबद्ध ६ एगगुण ७ दुगुण ८ तिगुण ९ केउभूय १० पडिग्गहो ११ ससारपडिग्गहो १२ नदावत्त १३ सिद्धावत्त १४, से त्त सिद्धसेणियापरिकम्मे १। से किं त मणुस्ससेणियापरिकम्मे? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तजहा–माउयापयाइ १ एगट्ठियपयाइ २ अट्ठपयाइ ३ पाढोआगासपयाइ ४ केउभूय ५ रासिबद्ध ६ एगगुण ७ दुगुण ८ तिगुण ९ केउभूय १० पडिग्गहो ११ ससारपडिग्गहो १२ नदावत्त १३ मणुस्सावत्त १४ से त्त मणुस्ससेणियापरिकम्मे २। से किं त पुट्ठसेणियापरिकम्मे? पुट्ठसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तजहा पाढोआगासपयाइ १ केउभूय २ रासिबद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ नदावत्त १० पुट्ठावत्त ११, से त्त पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३। से किं त ओगाढसेणियापरिकम्मे? ओगाढसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते तजहा–पाढोआगासपयाइ १ केउभूय २ रासिबद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ नदावत्त १० ओगाढावत्त ११, से त्त ओगाढसेणियापरिकम्मे ४। से कि त उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे? उवसपज्जणसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तजहा—पाढोआगासपयाइ १ केउभूय २ रासिबद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ नदावत्त १० उवसपज्जणावत्त ११, से त्त उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ५। से किं त विप्पजहणसेणियापरिकम्मे? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तजहा–पाढोआगासपयाइ १ केउभूय २ रासिबद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ नदावत्त १० विप्पजहणावत्त ११, से त्त विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६। से कि त चुयाचुयसेणियापरिकम्मे? चुयाचुयसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पन्नत्ते, तजहा—पाढोआगासपयाइ १ केउभूय २ रासिबद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ नदावत्त १० चुयाचुयवत्त ११, से त्त चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७। छ चउक्कनइयाइ सत्त तेरासियाइ, से त्त परिकम्मे १। से किं त सुत्ताइ? सुत्ताइ बावीस पन्नत्ताइ, तजहा—उज्जुसुयं १ परिणयापरिणय २ बहुभगिय ३ विजयचरिय ४ अणतर ५ परपर ६ मासाण ७ सजूह ८ सभिण्ण ९ आहच्चाय १० सोवत्थियावत्त ११ नदावत्त १२ बहुल १३ पुट्ठापुट्ठ १४ वियावत्त १५ एवभूय १६ दुयावत्त १७ वत्तमाण पय १८ समभिरूढ १९ सव्वओभद्द २० पस्सास २१ दुप्पडिग्गह २२, इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ छिन्नच्छेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ अच्छिन्नच्छेयनइयाणि

आजीवियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ तिगणइयाणि तेरासिय सुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए; एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठासीई सुत्ताइ भवंतित्ति मक्खाय, से त्त सुत्ताइ ३। से किं त पुव्वगए? पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा—उप्पायपुव्व १ अग्गाणीय २ वीरिय ३ अत्थिनत्थिप्पवाय ४ नाणप्पवाय ५ सच्चप्पवाय ६ आयप्पवाय ७ कम्मप्पवाय ८ पच्चक्खाणप्पवाय (पच्चक्खाण) ९ विज्जणुप्पवाय १० अवंझ ११ पाणाऊ १२ किरियाविसाल १३ लोकबिंदुसार १४। उप्पायपुव्वस्स ण दस वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता। अग्गाणीयपुव्वस्स ण चोद्दस वत्थू, दुवालस चूलियावत्थू पण्णत्ता। वीरियपुव्वस्स ण अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता। अत्थिनत्थिप्पवायपुव्वस्स ण अट्ठारस वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता। नाणप्पवायपुव्वस्स ण बारस वत्थू पण्णत्ता। सच्चप्पवायपुव्वस्स ण दोण्णिवत्थूपण्णत्ता। आयप्पवायपुव्वस्स ण सोलस वत्थू पण्णत्ता। कम्मप्पवायपुव्वस्स ण तीस वत्थू पण्णत्ता। पच्चक्खाणपुव्वस्स ण वीस वत्थू पण्णत्ता। विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स ण पन्नरस वत्थू पण्णत्ता अवंझपुव्वस्स ण बारस वत्थू पण्णत्ता। पाणाउपुव्वस्स ण तेरस वत्थू पण्णत्ता। किरियाविसाल पुव्वस्स ण तीस वत्थू पण्णत्ता। लोकबिंदुसारपुव्वस्स ण पणुवीस वत्थू पण्णत्ता, गाहा—

दस १ चोद्दस २ अट्ठ ३ ऽट्ठारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि। सोलस ७ तीस ८ वीसा ९, पन्नरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ८९ ॥

बारस इक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि। तीसा पुण तेरसमे, चोद्दसमे पण्णवीसाओ ॥९०॥

चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेवदस ४ चेव चुल्लवत्थूणि। आइल्लाण चउण्ह, चूलिया नत्थि ॥९१॥

से त्त पुव्वगए। से किं त अणुओगे? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—मूलपढमाणुओगे, गंडियाणुओगे य। से किं त मूलपढमाणुओगे? मूलपढमाणुओगे ण अरहंताण भगवंताण पुव्वभवा, देवगमणाइ, आउ, चवणाइ, जम्मणाणि अभिसेया रायवरसिरीओ, पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ, तित्थपवत्तणाणि य, सीसा, गणहरा, अज्जपवत्तिणीओ संघस्स चउव्विहस्स ज च परिमाण, जिणमणपज्जवओहिनाणी, सम्मत्तसुयनाणिणो य वाई अणुत्तरगईय, उत्तरवेउ, व्विणो य मुणिणो, जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जच्चिर च काल, पोओवगया जे जहिं जत्तियाइ भत्ताइ अणसणाए छेइत्ता अतगडे मुणिवरुत्तमे, तिमिरओघ विप्पमुक्के मुक्खसुहमणुत्तर च पत्ते, एवमन्ने य एवमाइ भावा मूलपढमाणुओगे कहिया, से त्त मूलपढमाणुओगे से किं त गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ चक्कवट्टिगंडियाओ, दसारगंडियाओ, बलदेवगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ, गणधरगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ, तवोकम्मगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओसप्पिणीगंडियाओ, चित्तंतरगंडियाओ अमरनरतिरियनिरयगइगमणविविहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति, पण्णविज्जंति से त्त गंडियाणुओगे, से त्त अणुओगे ४। से किं त चूलियाओ? आइल्लाण चउण्ह पुव्वाण, चूलिया सेसाइ पुव्वाइ अचूलियाइ, से त्त चूलियाओ। दिट्ठिवायस्स ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा

सिलोगा सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ से ण अगट्ठयाए बारसमे अगे, एगे सुयक्खन्धे, चोद्दस पुव्वाइ, सखेज्जा वत्थू, सखेज्जा चूलवत्थू, सखेज्जा पाहुडा, सखेज्जापाहुडपाहुडा, सखेज्जाओ पाहुडियाओ, सखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, सखेज्जाइ पयसद स्साइ पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा परित्ता तसा अणता थावरा, सा सयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति । से एव आया, एव नाया एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जति, से त्त दिट्ठिवाए १२ ॥ सू० ५६ ॥ इच्चेइयमि दुवालसगे गणिपिडगे अणता भावा अणता अभावा, अणता हेऊ, अणता अहेऊ, अणता कारणा, अणता अकारणा, अणता जीवा अणतता अजीवा अणता भवसिद्धिया अणता अभवसिद्धिया अणता सिद्धा, अणता असिद्धा पण्णत्ता–

भावमभावा हेऊमहेउ, कारणमकारणे चेव । जीवाजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ९२ ॥

इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग तीए काले अणता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टिसु इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टति । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अणागए काले अणता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टिस्सति । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग तीए काले अणता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरत ससारकतार वीईवइसु । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चउरत ससारकतार वीईवयति । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अणागए काले अणता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरत ससारकतार वीईव इस्सति । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडिग न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भवि- ॰॰, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए अव्वए, अवट्ठिए निच्चे । से ॰ पचत्थिकाए न कयाइनासी न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ, य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे, एवामेव दुवालसग गणिपिडग न कयाइ नासी, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे । से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तजहा–दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्थ दव्वओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइ जाणइ पासइ, खित्तओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्व खेत्त जाणइ पासइ, कालओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्व खेत्त जाणइ पासइ, भावओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ ॥ सू० ५७ ॥

अक्खर सन्नी सम्म, साइय खलु सपज्जवसिय च । गमिय अगपविट्ठ, सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥ ९३ ॥ आगमसत्थग्गहण, ज बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठ । बिंति सुयनाणलभ, त पुव्वविसारया धीरा ॥ ९४ ॥

सुस्सूसइ १ पडिपुच्छइ २ सुणेइ ३ गिण्हइ ४ य ईहएयावि ५ । तत्तो अपोहए ६ वा, धारेइ ७ करेइ वा सम्म ८ ॥ ९५ ॥

मूअं हुंकारं वा, बाढक्कार पडिपुच्छ वीमंसा। तत्तो पसंगपारायणं च परिणिट्ठ सत्तमए ॥ ९६ ॥

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ। तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ९७ ॥

से त्तं अंगपविट्ठं, से त्तं सुयनाणं से त्तं परोक्खनाणं, से त्तं नंदी ॥ नंदी समत्ता ॥

इअ नंदीसुत्तं समत्तम्

उववाई सूत्तं

(बावीस गाथा)

कहिं पडिहया सिद्धा? कहिं सिद्धा पइट्ठिया? । कहिं बोंदि चइत्ता ण, कत्थ गतूण सिज्झई ॥ १ ॥
अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पडिट्ठिया । इहबोंदि चइत्ता ण, तत्थ गतूण सिज्झई ? ॥ २ ॥
ज सठाण तु इह भव चय तस्स चरिममसयमि । आसी य पएसघण त सठाण तहिं तस्स ॥ ३ ॥
दीह वा हस्स वा ज चरिमभवे हवेज्ज सठाण । तत्तो तिभागहीण सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४ ॥
तिण्णि सया तेत्तीसा धणुत्तिभागो य होइ बोधव्वा । एसा खलु सिद्धाण उक्कोसोगाहणा भणिया ॥ ५ ॥
चत्तारि य रयणीओ रयणितिभागूणिया य बोधव्वा । एसा खलु सिद्धाण मज्झिमओगाहणा भणिया ॥६॥
एक्का य होइ रयणी साहीया अगुलाइ अट्ठ भवे । एसा खलु सिद्धाण जहण्णओगाहणा भणिया ॥ ७ ॥
ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण होइ परिहीणा । सठाणमणित्थथ जरामरणविप्पमुक्काण ॥ ८ ॥
जत्थ य एगोसिद्धो तत्थ अणता भवक्खयविमुक्का । अण्णोण्णसमोगाढा पुट्ठा सव्वे य लोगते ॥ ९ ॥
फुसइ अणते सिद्धे सव्वपएसेहि णियमसा सिद्धो । ते वि असखेज्जागुणा देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥१०॥
असरीरा जीवघणा उवउत्ता दसणे य णाणे य । सागारमणागारं लक्खणमेय तु सिद्धाण ॥ ११ ॥
केवलणाणुवउत्ता जाणति सव्वभावगुणभावे । पासति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीअणताहिं ॥ १२ ॥
णवि अत्थि माणुसाण त सोक्ख णविय सव्वदेवाण । ज सिद्धाण सोक्ख अव्वाबाह उवगयाण॥१३॥
ज देवाण सोक्ख सव्वद्धापिडिय अणतगुण । ण य पावइ मुत्तिसुह णताहिं वग्गवग्गूहि ॥ १४ ॥
सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा । सोणतवग्गभइओ सव्वागासे ण माएज्जा ॥१५॥
जह णाम कोइ मिच्छो णगरगुणे बहुविहे वियाणतो । ण चएइ परिकहेउ उवमाए तहिं असतीए॥१६॥
इय सिद्धाण सोक्ख अणोवम णत्थि तस्स ओवम्म । किंचि विसेसेणेत्तो ओवम्ममिण सुणह वोच्छ॥१७॥
जह सव्वकामगुणिय पुरिसो भोत्तूण भोयण कोई । तण्हाछुहाविमुक्को अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो॥१८॥
इय सव्वकालतित्ता अतुल निव्वाणमुवगया सिद्धा । सासयमव्वाबाह चिट्ठति सुही सुह पत्ता॥१९॥
सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य पारगयत्ति य परपरगयत्ति । उम्मुक्कम्मकवया अजरा अमरा असगा य॥२०॥
णिच्छिण्णसव्वदुक्खा जाइजरामरणबधणविमुक्का । अव्वाबाह सुक्ख अणुहोंती सासय सिद्धा॥२१॥
अतुलसुहसागरगया अव्वाबाह अणोवम पत्ता । सव्वमणागयमद्ध चिट्ठति सुह पत्ता ॥ २२ ॥

॥ उववाइ उवग समत्त ॥

भ भवतु ।

॥ श्री सुखविपाक-सूत्रम् ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सोहम्मे समोसढे जंबू जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पण्णत्ते सुहविवागाणं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। तंजहा-सुबाहू १ भद्दनंदी य २, सुजाए य ३, सुवासवे ४। तहेव जिणदासे ५, धणपती य ६ महब्बले ७ ॥ १ ॥ भद्दनंदी ८ महचंदे ९ वरदत्ते १० ॥

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स सुहविवागाणं जाव के अट्ठे पण्णत्ते? तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था रिद्धित्थिमियसमिद्धे तस्स णं हत्थिसीसस्स णगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वोउय० तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था दिव्वे०, तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू णामं राया होत्था महया० वण्णओ, तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामुक्ख देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था। तते णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुमिणे पासइ जहा मेहस्स जम्मणं तहा भाणियव्वं। सुबाहुकुमारे जाव अलं भोगसमत्थे यावि जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं करावेंति, अब्भुग्गय० भवणं एवं जहा महाबलस्स रण्णो, णवरं पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकण्णय सयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति तहेव पंचसइओ दाओ जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा निग्गया, अदीणसत्तू जहा कूणिओ तहा निग्गओ सुबाहू वि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए जाव धम्मो कहिओ राया परिसा पडिगया। तण्णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति जाव एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं० जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिइओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया नो खलु अहं णं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। ततेणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जति पडिवज्जित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहति जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव एवं वयासी—अहो णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते २ पिए २ मणुण्णे २ मणामे २ सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे

बहुजणस्सवि य ण भते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ सोमे ४ साहुजणस्सवि य णं भते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ जाव सुरूवे । सुबाहुणा भते ! कुमारेण इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमन्नागया ? के वा एस आसी पुव्वभवे ? एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारह वासे हत्थिणाउर णाम णगरे होत्था रिद्ध० तत्थ ण हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे नाम गाहावई परिवसइ अड्ढे० तेण कालेण तेण समएण धम्मघोसा णाम थेरा जातिसपन्ना जाव पचहिं समणसएहिं सार्द्धि सपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगाम दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णगरे जेणेव सहसबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहा पडिरूव उग्गह उग्गिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति । तेण कालेण तेण समएण धम्मघोसाण थेराण अतेवासी सुदत्ते णाम अणगारे उराले जाव लेस्से मास मासेण खममाणे विहरति तए ण से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेति जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे (१सुधम्म) थेर आपुच्छति जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावतिस्स गेहे अणुपविट्ठे तए ण से सुमुहे गाहावती सुदत्त अणगार एज्जमाण पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेति २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति २ त्ता पाउयाओ ओमुयति २ त्ता एगासाडिय उत्तरासग करेति २ त्ता सुदत्त अणगार सत्तट्ठ पयाइ अणुगच्छति २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ २ त्ता वदति णमसति २ त्ता जेणेव भत्तघर तेणेव उवागच्छति २ त्ता सयहत्थेण विउलेण असण पाणखाइमसाइमेण पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे पडिलाभेमाणेवि तुट्ठे पडिलाभिएवि तुट्ठे । तते ण तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेण तिविहेण तिकरणसुद्धेण सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे ससार परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे गेहसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ तजहा—

वसुहारा वुट्ठा १ दसद्धवन्ने कुसुमे निवातिते २ चेलुक्खेवे कए ३ आहयाओ देवदुदुहीओ ४ अतरावि य णं आगाससि अहो दाणमहो दाण घुट्ठ य ५ । हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४—धण्णे ण देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई सुकयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धे ण मणुस्सजम्मे सुकयरिद्धी य जाव त धन्ने ण देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई । तते ण से सुमुहे गाहावई बहूइ वाससयाइ आउय पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इहेव हत्थिसीसे णगरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्ने । तते ण सा धारिणी देवी सय णिज्जसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ सीह पासति सेस त चेव जाव उप्पिं पासाए विहरति । एव खलु गोयमा ! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया पभू ण भते ! सुबाहुकुमार देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ? हता पभू । तते ण से भगव गोयमे समण भगव महावीर वदति नमसति २ त्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति । तते ण से समणे भगव महावीरे अन्नया कयाइ हत्थिसीसाओ णगराओ पुप्फकरडाओ उज्जाणाओ कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायणाओ पडिणिक्खमति २ त्ता बहिया जणवय

विहार विहरति । तते ण से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाते अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरेति । तते ण से सुबाहुकुमारे अन्नया कयाइ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति २ त्ता पोसहसाल पमज्जति २ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहति २ त्ता दब्भसंथार संथरेइ २ त्ता दब्भसंथार दुरुहइ २ त्ता अट्ठमभत्त पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसह पडिजागरमाणे विहरति । तए ण तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए० समुप्पज्जे धण्णा ण ते गामागरणगर जाव सन्निवेसा जत्थ ण समणे भगव महावीरे जाव विहरति, धन्ना ण तेराईसरतलवर० जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडा जाव पव्वयति, धन्ना ण ते राईसरतलवर० जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पडिवज्जति, धन्ना ण ते राईसर जाव जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सुणेति, त जति ण समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाण गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा तते ण अह समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा । तते ण समणे भगव महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इम इयारूव अज्झत्थिय जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्वि जाव दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णगरे जणव पुप्फकरडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूव उग्गह उगिगिण्हत्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति परिसा राया निग्गया । तत ण तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स त महया जहा पढम तहा निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया । तत ण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जहा मेहे तहा अम्मापियरो आपुच्छति, णिक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगार जाते इरियासमिए जाव बभयारी, ततेण से सुबाहु अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जति २ त्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम० तवोविहाणेहिं अप्पाण भावित्ता बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अप्पाण झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, से ण ततो देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिति २ त्ता केवल बोहिं बुज्झिहिति २ त्ता तहारूवाण थेराण अतिए मुडे जाव पव्वइस्सति, से ण तत्थ बहूइ वासाइ सामण्ण परियाग्ग पाउणिहिति आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते काल करिहिति सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति, से ण तओ देवलोगाओ माणुस्स पव्वज्जा बभलोए ततो माणुस्स महासुक्के ततो माणुस्स आणते देवे ततो माणुस्स ततो आरण देवे ततो माणुस्स सव्वट्ठसिद्धे, से ण ततो अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेह वासे जाव अड्ढाइ जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति ५ जाव एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते अज्झयण समत्त ॥ १ ॥

बितियस्स ण उक्खेवो—एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण उसभपुरे णगर थूभकरंड-

उज्जाणे धन्नो जक्खो धणावहो राया सरस्सई देवी सुमिणदंसण कहण जम्मण बालत्तण कालाओ य जुव्वणे पाणिग्गहण दाओ पासाद० भोगा य जहा सुबाहुस्स, नवर भद्दनंदी कुमारे सिरिदेवीपामोक्खा ण पचसया सामी समोसरण सावगधम्म पुव्वभवपुच्छा महाविदेहे वासे पुंडरीकिणी णगरी विजयते कुमारे जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए माणुस्साउए निबद्धे इह उप्पन्ने, सेस जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेह वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुचिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमत करेहिति ॥ बितिय अज्झयण समत्त ॥ २ ॥

तच्चस्स उक्खेवो—वीरपुर णगर मणोरम उज्जाण वीरकण्हे जक्खे मित्ते राया सिरि देवी सुजाए कुमारे बलसिरिपामोक्खा पचसयकन्ना सामी समोसरण पुव्वभवपुच्छा उसुयार नयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए मणुस्साउए निबद्धे इह उप्पन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ५ ॥ तइय अज्झयण समत्त ॥ ३ ॥

चोत्थस्स उक्खेवो—विजयपुर णगर णदणवण [मणोरम] उज्जाण असोगो जक्खो वासवदत्ते राया कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भद्दापामोक्खा ण पचसया जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी धणपाले राया वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे । चोत्थ अज्झयण समत्त ॥ ४ ॥

पचमस्स उक्खेवओ—सोगधिया णगरी नीलासोए उज्जाणे सुकालो जक्खो अप्पडिहओ राया सुकन्ना देवी महचदे कुमारे तस्स अरहदत्ता भारिया जिणदासो पुत्तो तित्थयरागमण जिणदासपुव्वभवो मज्झमिया णगरी मेहरहो राया सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ ॥ पचम अज्झयण समत्त ॥ ५ ॥

छट्ठस्स उक्खेवओ—कणगपुर णगर सेयासोय उज्जाण वीरभद्दो जक्खो पियचदो राया सुभद्दा देवी वसमणे कुमारे जुवराया सिरिदेवी पामोक्खा पचसया कन्ना पाणिग्गहण तित्थयरागमण धनवती युवरायपुत्ते जाव पुव्वभवो मणिवया नगरी मित्तो राया सभूतिविजए अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ छट्ठ अज्झयण समत्त ॥ ६ ॥

सत्तमस्स उक्खेवो—महापुर णगर रत्तासोग उज्जाण रत्तपाओ जक्खो बले राया सुभद्दा देवी महब्बले कुमारे रत्तवईपामोक्खाओ पचसयाकन्ना पाणिग्गहण तित्थयरागमण जाव पुव्वभवो मणिपुर णगर णागदत्ते गाहावती इन्ददत्ते अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ सत्तम अज्झयण समत्त ॥ ७ ॥

अट्ठमस्स उक्खेवो—सुघोस नगर देवरमण उज्जाण वीरसेणो जक्खो अज्जुणो राया तत्तवती देवी भद्दनंदी कुमारे सिरिदेवीपामोक्खा पचसया जाव पुव्वभवे महाघोसे णगरे धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ अट्ठम अज्झयण समत्त ॥ ८ ॥

णवमस्स उक्खेवो—चपा णगरी पुन्नभद्दे उज्जाणे पुन्नभद्दो जक्खो दत्ते राया रत्तवई देवी महचंदे कुमारे जुवराया सिरिकंतापामोक्खा ण पच सया कन्ना जाव पुव्वभवो तिगिच्छी णगरी

उसभदत्ते राया धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ नवम अज्झयण समत्त ॥ ९ ॥

जति ण दसमस्स उक्खेवो— एव खलु जंबू! तेण कालेण तेण समएण साएय नाम नयर होत्था उत्तरकुरुउज्जाणे पासमिओ जक्खो मित्तनदी राया सिरिकता देवी वरदत्ते कुमारे वरसेणापामोक्खा पचदेवीसया तित्थयरागमणं सावगधम्म पुव्वभवो पुच्छा सत्तदुवारे नगरे विमलवाहणे राया धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए ससारे परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे इहं उप्पन्ने सेस जहा सुबाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पव्वज्जा कप्पतरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परि निव्वाहिति सव्वदुक्खाणमत करेहिति ॥ एव खलु जंबू! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, सेव भते! सेव भते! सुहविवागा ॥ दसम अज्झयण समत्त ॥ १० ॥

नमो सुयदेवाए–विवागसुयस्स दो सुयक्खधा दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागे अज्झयणा दस एकसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति, एव सुहविवागो वि सेसं जहा आयारस्स ॥ इति एकारसम अग समत्त ॥

॥ इअ सुहविपाकसुत्त समत्तम् ॥



॥ सूत्रकृतांगसूत्रे वीरस्तुत्याख्य षष्ठमध्ययन ॥

पुच्छिस्सु ण समणा माहणा य, अगारिणो या परतित्थिआ य।
से केइ णेगतहिय धम्माहु, अणेलिस साहु समिक्खयाए ॥ १ ॥
कह च णाण कह दसण से, सील कह नायसुतस्स आसी?।
जाणासि णं भिक्खु जहातहेण, अहासुत बूहि जहा णिसत ॥ २ ॥
खेयन्नए से कुसलासुपन्ने (ले महेसी) अणतनाणीय अण तदसी।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्म च धिइं च पेहि ॥ ३ ॥
उड्ढं अहेय तिरिय दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा।
से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवे व धम्म समिय उदाहु ॥ ४ ॥
से सव्वदंसी अभिभूयनाणी, णिरामगधे धिइम ठितप्पा।
अणुत्तरे सव्वजगसि विज्ज, गथा अतीते अभए अणाऊ ॥ ५ ॥
से भूइपण्णे अणिएअचारी, ओहतरे धीरे अणतचक्खू।
अणुत्तरे तप्पति सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तम पगासे ॥ ६ ॥
अणुत्तर धम्ममिण जिणाण, णेया मुणी कासव आसुपन्ने।
इदेव देवाण महाणुभावे, सहस्सणेता दिवि ण विसिट्ठे ॥ ७ ॥
से पन्नया अक्खयसागरे वा, महोदही वावि अणतपारे।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के, सक्केव देवाहिवई जुईमं ॥ ८ ॥

से वीरिएण पडिपुन्नवीरिए, सुदसणे वा णगसव्वसेट्ठे ।
सुरालए वासिमुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ॥ ९ ॥
सय सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते ।
से जोयणे णवणवते सहस्से उध्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥ १० ॥
पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरिवट्टयंति ।
से हेमवन्ने बहुनंदणे य, जंसी रतिं वेदयती महिंदा ॥ ११ ॥
से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायती कंचणमट्ठवन्ने ।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरीवरे से जलिएव भोमे ॥ १२ ॥
महीइ मज्झंमि ठिते णगिंदे, पन्नायते सूरिय सुद्धलेसे ।
एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥ १३ ॥
सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई महतो पव्वयस्स ।
एतोवमे समणे नायपुत्ते, जातीजसोदंसणनाणसीले ॥ १४ ॥
गिरीवरे वा निसहाऽऽययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं ।
तओवमे से जगभूइपन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥ १५ ॥
अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइ ।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संखिंदुएगंतवदातसुक्कं ॥ १६ ॥
अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता ।
सिद्धिं गते साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥ १७ ॥
रुक्खेसु णाते जह सामली वा, जंसिं रतिं वेययती सुवन्ना ।
वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं, णाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥ १८ ॥
थणियं व सद्दाण अणुत्तरं उ, चंदो व ताराण महाणुभावे ।
गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥ १९ ॥
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे ।
खोओदए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते ॥ २० ॥
हत्थीसु एरावणमाहु णाए, सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा ।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवो, निव्वाणवादीणिह णायपुत्ते ॥ २१ ॥
जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥
दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ २३ ॥
ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।

निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥ २४ ॥
पुढोवमे धुणइ विगयगेहि, न सण्णिहिं कुव्वति आसुपन्ने ।
तरिउ समुद्दं व महाभवोघं, अभयंकरे वीर अणंतचक्खू ॥ २५ ॥
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा ।
एआणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वई पावण कारवेइ ॥ २६ ॥
किरियाकिरियं वेणइयाणु वायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं ।
से सव्ववायं इति वेयइत्ता, उवट्ठिए संजमदीहरायं ॥ २७ ॥
से वारिया इत्थी सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए ।
लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू वारिय सव्ववारं ॥ २८ ॥
सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं, समाहितं अट्ठपदोवसुद्धं ।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इंदा व देवाहिव आगमिस्सति ॥ २९ ॥

॥ इति श्रीवीरस्तुत्याख्य षष्ठमध्ययनम् ॥



॥ मोक्षमार्गनामक एकादशाध्ययनम् ॥

तं मग्गं णुत्तरं सुद्धं, सव्वदुक्खविमोक्खणं । जाणासि णं जहा भिक्खु, तं णो बूहि महामुणी ॥१॥
कयरे मग्गे अक्खाए, माहणेण मईमता ? जं मग्गं उज्जु पाविचा ओहं तरति दुत्तरं ॥ २ ॥
जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा । तेसिं तु कयरं मग्गं, आइक्खेज्जा? कहाहि णो ॥ ३ ॥
जइ वो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा । तेसिमं पडिसाहिज्जा, मग्गसारं सुणेह मे ॥ ४ ॥
अणुपुव्वेण महाघोरं कासवेण पवेइयं, । जमादाय इओ पुव्वं, समुद्दं ववहारिणो ॥ ५ ॥
अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्सति अणागया । तं सोच्चा पडिवक्खामि, जंतवो तं सुणेह मे ॥ ६ ॥
पुढवीजीवा पुढो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी । वाउजीवा पुढो सत्ता, तणरुक्खा सबीयगा ॥ ७ ॥
अहावरा तसा पाणा, एवं छकाय आहिया । एतावए जीवकाए, णावरे कोइ विज्जई ॥ ८ ॥
सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, मतिमं पडिलेहिया । सव्वे अकंतदुक्खा य, अतो सव्वे न हिंसया ॥ ९ ॥
एयं खु णाणिओ सारं, जं न हिंसति कंचण । अहिंसा समयं चेव, एतावंतं विजाणिया ॥ १० ॥
उड्ढं अहे य तिरियं, जे केइ तसथावरा । सव्वत्थ विरतिं विज्जा, संति निव्वाणमाहियं ॥ ११ ॥
पभू दोसे निराकिच्चा, ण विरुज्झेज्ज केणई । मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो ॥ १२ ॥
संवुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसणं चरे । एसणासमिए णिच्चं, वज्जयंते अणेसणं ॥ १३ ॥
भूयाइं च समारंभ, तमुद्दिस्सा य जं कडं । तारिसं तु ण गिण्हेज्जा, अन्नपाणं सुसंजए ॥ १४ ॥
पूईकम्मं न सेविज्जा एस धम्मे वुसीमओ । जं किंचि अभिकंखेज्जा, सव्वसो तं न कप्पए ॥ १५ ॥
हणंतं णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जीइंदिए । ठाणाइं संति सड्ढीणं, गामेसु नगरेसु वा ॥ १६ ॥
तहा गिरं समारब्भ, अत्थि पुण्णंति णो वए । अहवा णत्थि पुण्णंति, एवमेयं

दाणट्ठया य जे पाणा, हम्मंति तसथावरा । तेसिं सारक्खणट्ठाए, तम्हा अत्थित्ति णो वए ॥ १८ ॥
जेसिं तं उवकप्पंति, अन्नपाणं, तहाविहं । तेसिं लाभंतरायंति, तम्हा णत्थित्ति णो वए ॥ १९ ॥
जो य दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं । जे य णं पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करंति ते ॥ २० ॥
दुहओवि ते ण भासंति, अत्थि वा नत्थि वा पुणो । आयं रयस्स हेच्चा णं निव्वाणं पाउणंति ते॥२१॥
निव्वाणं परमं बुद्धा, णक्खत्ताण व चंदिमा । तम्हा सदा जए दंते, निव्वाणं संधए मुणी ॥ २२ ॥
वुज्झमाणाण पाणाणं, किच्चंताण सकम्मुणा । आघाति साहु तं दीवं पतिट्ठेसा पवुच्चई ॥ २३ ॥
आयगुत्ते सया दंते, छिन्नसोए अणासवे । जे धम्मं सुद्धमक्खाति, पडिपुन्नमणेलिसं ॥ २४ ॥
तमेव अविजाणंता, अबुद्धा बुद्धमाणिणो । बुद्धा मोत्ति य मन्नंता, अंत एते समाहिए ॥ २५ ॥
ते य बीओदगं चेव तमुद्दिस्सा य जं कडं । भोच्चा झाणं झियायंति, अखेयन्ना(अ)समाहिया ॥ २६ ॥
जहा ढंका य कंका य, कुलला मग्गुका सिही । मच्छेसणं झियायंति झाणं ते कलुसाधमं ॥ २७ ॥
एवं तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया । विसएसणं झियायंति, कंका वा कलुसाहमा ॥ २८ ॥
सुद्धं मग्गं विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मती । उम्मग्गगता दुक्खं, घायमेसंति तं तहा ॥ २९ ॥
जहा आसाविणिं नावं जाइअंधो दुरूहिया । इच्छई पारमागंतुं, अंतरा य विसीयति ॥ ३० ॥
एवं तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया । सोयं कसिणमावन्ना, आगंतारो महब्भयं ॥ ३१ ॥
इमं च धम्ममादाय, कासवेण पवेदितं । तरे सोयं महाघोरं, अत्तत्ताए परिव्वए ॥ ३२ ॥
विरए गामधम्मेहिं, जे केई जगई जगा । तेसिं अत्तुवमायाए, थामं कुव्वं परिव्वए ॥ ३३ ॥
अइमाणं च मायं च, तं परिन्नाय पंडिए । सव्वमेयं णिराकिच्चा, णिव्वाणं संधए मुणी ॥ ३४ ॥
संधए साहुधम्मं च, पावधम्मं णिराकरे । उवहाणवीरिए भिक्खू, कोहं माणं ण पत्थए ॥ ३५ ॥
जे य बुद्धा अतिक्कंता, जे य बुद्धा अणागया । संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगती जहा ॥ ३६ ॥
अह णं वयमावन्नं, फासा उच्चावया फुसे । ण तेसु विणिहण्णेज्जा, वाएण व महागिरि ॥ ३७ ॥
संवुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसणं चरे । निव्वुडे कालमाकंखी, एवं (य) केवलिणोमयं ॥ ३८ ॥

॥ इति मोक्षमार्गनामकं एकादशमध्ययनम् ॥



सुभाषित केटलीक गाथानो संग्रह

पंचमहव्वयसुव्वयमूलं,समणमणाइलसाहुसुचिन्नं।वेरविरामणपज्जवसाणं,सव्वसमुद्दमहोदधी तित्थं॥१॥
तित्थकरेहिं सुदेसियमग्गं, नरगतिरिच्छविवज्जियमग्गं ।
सव्वपवित्त सुनिम्मियसारं सिद्धिविमाण अवंगुयदारं ॥ २ ॥
देवनरिंदनमंसियपूयं, सव्वजगुत्तममंगलमग्गं । दुधरिसगुणनायगमेगं, मोक्खपहस्सवडिंसगभूयं॥३॥
(प्रश्नव्याकरणसूत्रे संवरद्वारे)
धम्मारामेचरेभिक्खू । धिइमं धम्मसारही । धम्मारामेरयादंते । बंभचेरसमाहिए । ४ ॥

देवदाणवगंधव्व, जक्खरक्खसकिन्नरा । बंभयारिं नमंसंति दुक्करं जे करंति तं ॥ ५ ॥
एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए । सिद्धा सिज्झंति चाणेण, सिज्झिस्सति तहावरं ॥ ६ ॥
(उत्तराध्ययन सूत्र) षोडशाध्ययन
अरहंत सिद्ध पवयणगुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसु।वच्छल्लया य तेसिं अभिक्खणाणोवओगे य ॥ ७ ॥
दंसण विणए आवस्सए य, सीलव्वए निरइयारं । खणलव तव च्चियाए, वेयावच्चे समाही य ॥ ८ ॥
अपुव्वणाणगहणे सुयभत्ती, पवयणे पभावणया । एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीओ ॥ ९ ॥
(ज्ञाताधर्मकथासूत्रे)
जिणवयणेअणुरत्ता जिणवयणं जे करंति भावेण। अमलाअसंकिलिट्ठा, तेउंतिपरित्तसंसारि ॥ १० ॥
एयंख्खुनाणीणोसार, जं न हिंसई किंचण। अहिंसासमयं चेव, एतावत्तं वियाणिया ॥ ११ ॥
जाति च वुड्ढि च इह दृणास, भूतेहिं जाणेहिं पडिलेहसाय ।
तम्हातिविज्जेपरमंतिणच्चा, सम्मत्तदंसी न करेई पावं ॥ १२ ॥
उम्मुंचपासं इह मच्चिएहिं, आरंभजीवीउभयाणुपस्सी ।
कामेसु गिद्धाणिचयंकरंति, संसिंचमाणापुणरेंतिगब्भ ॥ १३ ॥
सावणेनाणेविन्नाणे, पच्चक्खाणेयसंजमे । अणण्हएतवेचेव, वोदाणे अकिरियासिद्धि ॥ १४ ॥
एगोहं नत्थि मे कोइ, नाहं मन्नस्स कस्सइ । एवं अदीणमणस्सा, अप्पाणमणु सासइ ॥ १५ ॥
एगोमे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजओ। सेसामे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा ॥ १६ ॥
जीविओ नाभिकंखेज्जा मरणं नो विपत्थए । दुहओ विनइच्छेज्जा, जीविओ मरणं तहा ॥ १७ ॥
सार दंसण नाणं, सारं तव नियम संजमसील। सारं जिण वर धम्मं सारंसलेहणापंडियमरणं ॥ १८ ॥
कल्लाणकोडिकारिणी, दुग्गइदुःखनिठरणी, संसारजलतारणी, एगंतहोइजीवदया ॥ १९ ॥
आरंभे नत्थि दया, महिलासंगेनासाइबंभं। संकाएनासइसम्मत्तं, पव्वज्जाअरथगहणं च ॥ २० ॥
मज्जविसयकसाय, निंदाविकहायपंचमाभणिया। ए ए पंचपमाया, जीवापडतिसंसारे ॥ २१ ॥
लहंति निम्मलाभोए, लहंति सुरसंपया। लहंति पुत्तमित्तं च। एगोधम्मो न लब्भई ॥ २२ ॥
नविसुहीदेवतादेवलोए,नविसुहीपुठवीपइरायाा नविसुहीसेठिसेणावइय,एगंतसुहीमुणीवीयरागी॥२३॥
नगरी सोहंति जलमूलबागे, नारीमोहंतिपरपुरुषत्यागे ।
राजसोहंत सभा पुराणी, साधुमोहंता अमृतवाणी ॥ २४ ॥
चलंतिमेरुचलतिमंदिर, चलंतितारारविचंद्रमंडल ।
कदापि काले पृथ्वी चलंति, सत्पुरुषवाक्यो न चलंति धर्मः ॥ २५ ॥
अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि-र्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ।
भामंडलं दुदुभिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणिजिनेश्वराणा ॥ २६ ॥
रूप अनोपम तुल्य न कोई, वाणीसुणतांश्रवणसुखहोई ।
देहसुगंधी हरे पुष्पवान, चउमठइंद्रकरे प्रभु पाम ॥ २७ ॥
चउदपुरवधारकहियं,ज्ञानाचारवखाणीय। जिननहिं पण जिनसरिसा, श्रीसुधर्मस्वामी जाणीए॥ २८ ॥
रुप अनोपम वखाणीए,देवताने वल्लभ लागे। ... १२९ ॥

॥ शुद्धिपत्रकम् ॥



उत्तराध्ययन सूत्र

अध्य	पृष्ठ	गाथांक	अशुद्ध	शुद्ध
१	१	४	दुरसाल	दुमाल
१	२	१०	निरट्ठाइ	निरट्ठाइम
२	३	१९	घर	घरे
३	४	२९	सुआ	सेआ
३	४	३८	अभिजायण	अभिजाय
३	५	४	स सुपीराणीया	खुधिपासिया
४	६	५	वासस	वीससे
५	६	१	दुरतर	दुरुत्तरे
५	६	४	महावीरग	महावीरेण
५	६	८	समारभइ	समारंभइ
५	७	११	पमीआ	पम्पीओ
५	७	१९	गारिसु	गारिसु
५	७	२३	असम्मगो	नससिणा
५	७	२७	अचिम	अचिमा
५	७	२८	भिक्खाये	भिक्खाए
६	७	३	पिया हु	पियाणुया
७	९	२३	दति	दयत्ति
७	९	२८	मरण	मरणसु
८	१०	१७	लाहा	लाहो
९	११	३	मिहिला	मिहिलाओ
९	११	२२	भित्तूण	भित्तण
९	१२	५३	काम	कामभोग
९	१२	५६	अहो	अहो ते
९	१४	६१	सहाण	सहाण
१०	१३	१	निरइ	निवडइ
११	१५	६	चोद्दसहि	चोद्दसहिं
१२	१७	४६	स तहिं	द तहिं
१२	१८	२७	उपद	महद
१३	२०	१९	मां हमी	महिडमाओ
१३	१	३०	कम्माइ	कम्माइ
१४	२१	५	अकाउ	अकाउ
१४	२१	६	सुचिण्ण	सुचिण
१४	२१	६	हीयमाडे	दीयमाड
१४	२२	२५	सपन्न	सपन्ना
१४	२३	३१	सुमभिया	सुमभिया

अध्य	पृष्ठ	गाथांक	अशुद्ध	शुद्ध
१४	२३	३५	भिक्खाचरिय	भिक्खायरिय
१४	२४	५०	धम्म	णत्त
१५	२४	४	सयणासण	सयणासण
१६	२५	४	सजमबहुले	सजमबहुले मवरबहुले
१७	२७	३	निद्दाभाल	निद्दाशीले
१७	२८	१०	उदीरेइ	उदारेइ
१७	२८	२१	लोभिण	लोगभिण
१८	२९	१८	सोमण	सोडण
१९	३१	४८	हम	जहाहम
१९	३१	४२	जन तसो	अन तसो
१९	३२	५६	अनसे	भवसे
१९	३२	८५	सव्वक्ख	सव्वदुक्ख
२०	३३	६	अमजया	अमणया
२२	३८	२३	हित्ताहिं	चित्ताहिं
२२	३८	४६	मत्तीए	मतिए
२३	३९	१२	महामुणी	महामुणी
२३	४०	५४	रुसयो	ससयो इमो
२३	४१	८६	गोमय	गोयम
२६	४६	५०	सव्वदुक्खाण	सव्वदुक्ख विमोक्खण
२९	५०	५	सद्धाओ	सद्धाओ
२९	५०	६	न	अभि
३०	५१	७२	आणपाणु	आणुपाणा
३१	५३	१७	एधारे	ए धारे
३१	५४	६	उ	अभिक्खु
३२	५५	५	पवाइ	पावाइ
३२	५५	६	दमिइ	दइ
३८	५५	१२	चक्खु	रूव
३४	५६	८२	रक्खग	रक्खण
३५	५७	४०	सायमसाहिय	सायमसाय
३६	६२	७	काऊग	काण्ण
३४	६३	१२	खजू	खज्जूर
३४	६३	१५	लवसरसो	लवसकारो

अध्य	पृष्ठ	गाथांक	अशुद्ध	शुद्ध
१४	६६	१५	अप्पसत्थाण	अप्पमसत्थाण
१४	६६	१६	रुकाग	लसाग
१४	६४	४५	नायपत्ताह	नायपत्तासुक
१४	६४	४६	परिमपुडछा	परिमडछा
१४	६६	२२	भट्टुण	मट्टुण
१६	६७	३६	सचेयना	बुसचत्तमा
१६	७१	१६५	जिणवयणं	जिणवयणजे



दशवैकालिक शुद्धिपत्रकम्

३	७६	८	मिवये	सिघय
४	७६	८वींटी	घाऊ	सऊ
४	७८	६,,	परिग्गह	परिनिण्हाविस्ता
४	७८	११ ,	या,	या बबहुलवाकाय
४	७९	१९ ,	समणुनावि	समणुमाणिजा
४	७९	२५,	या	या, सज्जलिया
४	७९	२९ ,	हिलइ	हिलइ
५	८३	१२ ,	कोलचुन्नाइ	कोलचुन्नाई
५	८४	७,,	अपुणम्मि	अपुणच्छिणो
६	८६	२	रायभो	रायाणो

अध्य	पृष्ठ	गाथांक	अशुद्ध	शुद्ध
६	८६	१६	अभ,यण	समायमण
७	९०	५३	मट्ठ	तद्देव
८	९१	१५	अट्ठप	तद्देव
८	९१	२०	महाकल	महाफल
८	९२	३१	असप्पणो	नमप्पणो
८	९२	४१	सर्णमि	मजणमि
८	९३	७	आयरिभया	आयरियपाया
८	९३	९	गुरहालसाए	गुरूहीलाए
९	९६	२०लागि	गुणमाहिए	सुहमसाहिए
९	९६	३१	सुहावह	सुहावह



नन्दीसूत्र शुद्धिपत्रकम्

१०१	७		गुण	उत्तमगुण
१०२	३८		जहि	रत्तिभोजहि
१०३	४०		नागजुण	नागज्जुण
१११	६ लगी		अनगढदसाओर	अनगडदसाओ
११२	२९ ,,		अणु ओगदारा	अणु आगदारा
११४	७ ,,		सग	सच्चिआओसग
११६	७		से	ववहारनिज्जतासे
११८	५७ गाथा		ख्यान	खलकाल

